भोपाल के समकालीन चित्रकारों में लोक कला का प्रभाव

शोध प्रबन्ध
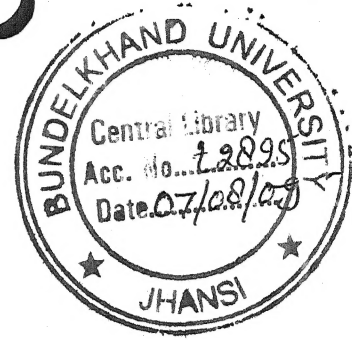
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी उ० प्र० की चित्रकला विषय में पी.एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध

वर्ष - 2007

शोध निर्देशिका
03/12/07
डा0 सुनीता
विभागाध्यक्ष ललितकला विभाग
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय,
झाँसी

शोधार्थी
Snehlata
03/12/07
कु. स्नेहलता

डा० श्रीमती सुनीता
विभागाध्यक्ष, ललित कला संकाय
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

पता- डॉ. सुनीता
सी.एम.-1 -8 मेडीकल गेट नं.1
से पहले वीरांगना नगर, झाँसी

दिनाँक - 03/12/2007
पंजीकरण सं. 3691

निर्देशक - प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है, कि **कु. स्नेहलता** ने बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी से मेरे निर्देशन में चित्रकला विषय में पी.एच.डी. उपाधि हेतु अपना शोधकार्य पूर्ण किया है इनके शोध प्रबन्ध का शीर्शक **"भोपाल के समकालीन चित्रकारों में लोक कला का प्रभाव"** यह शोध कार्य बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी के नियमानुसार "ललितकला विभाग", ललित कला अकादमी तथा पुस्तकालयों में पूर्ण किया गया है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध पूर्णतः मौलिक है तथा शोधार्थी के अथक परिश्रम का परिचायक है।

मैं इनके उज्जवल भविष्य की कामना करती हूँ।

03/12/07
Head
Institute of Fine Arts
Bundelkhand University, JHANSI
डॉ० श्रीमती सुनीता
शोध निर्देशिका

प्राक्कथन

लोककला में मानवीय भावनाओं की उत्कृष्ट प्रवृत्ति दिखाई देती है क्योंकि वास्तव में लोककला का जन्म मानव में कला की सृर्जनात्मक प्रवृति के विकास के साथ दिखाई देता है लोककला के माध्यम से हमें प्राचीन धर्म सभ्यता, परम्परा संस्कृति और उनके मूल स्त्रोतों का ज्ञान होता है लोककला में इतनी स्वाभाविकता है। कि उससे मानव की धार्मिक , सांस्कृति तथा सामाजिक अभिव्यक्ति को बल मिलता है। लोककला की प्रविधि का ज्ञान हमें वंशानुगत तथा परम्पराओं से होता है। वहीं आधुनिक भारतीय चित्रकला का इतिहास है जिस तरह विशुद्ध गणित व विज्ञान के संशोधनों का अभियात्रकी व शिल्प विज्ञान से लाभ होकर समाज का भौतिक विकास हुआ है उसी तरह आधुनिक कला की रूपाँकन पद्धतियों व अभिव्यक्ति के तरीकों से कला समाज में सबसे अधिक परिवर्तन हुआ है। चित्रकला की अंकन पद्धतियों तथा कला मिश्रित में परिवर्तन हुआ है जैसे प्राचीन काल में छापा चित्रण लकड़ी के ठप्पों से किया जाता था वहीं अब मशीनों द्वारा या ग्राफिक्स की मशीनों का प्रयोग होने लगी है गोदने के लिये बिजली की मशीनें प्रयोग होने लगी है मेहन्दी के स्थान पर टैटू का प्रयोग होने लगा है लोक चित्र बनाने की वजय उनके बने बनाये पोस्टर मिलने लगे है। इस प्रकार आधुनिकता से चित्रकला में काफी परिवर्तन होने लगे है। जिससे लोककला काफी प्रभावित हुई है वहीं आधुनिकता ने कला को नई दिशा व प्रगति प्रदान की है। प्रत्येक दिन नई तकनीक व सोच विचार का विकास हो रहा है कलाकार हर माध्यम व तकनीक के द्वारा अपने विचार कलात्मक ढंग से प्रस्तुत कर रहा है। जिसके लिये वह प्रत्येक वस्तु कला या प्रकृति से प्रेरणा ले रहा है वह प्रकृति के रूप को नये नये तरीके से प्रस्तुत करता है। वस्तु के आन्तरिक गुण का पदर्शन करता है व लोककला, परम्परागत कला को अपने अलग रूप में प्रस्तुत करता है इस प्रकार लोककला जहाँ आधुनिकता से

प्रभावित हुई है वहीं अपने गुणों से उसने आधुनिक कला को प्रभावित भी किया है। इस प्रकार हम शोध अध्ययन द्वारा आधुनिक भारतीय चित्रकला में लोककला के इसी प्रभाव को जानने की कोशिश करेगें कि आधुनिक चित्रकला से लोककला कितनी प्रभावित हुई है व उसने आधुनिक चित्रकला को कितना प्रभावित किया है लोककला का क्षेत्र बहुत व्यापक है। और इसे हर एक प्रान्त को लेकर समझना मुश्किल है इसलिये अपने शोध के अध्ययन के लिये मैने भोपाल शहर का चयन किया है क्योंकि यह काफी पुराना शहर है और इस शहर ने कला के क्षेत्र में काफी प्रगति की है इसमें प्राचीन कला और आधुनिक कला दोनों का ही समन्वय दिखाई देता है भारत के प्रत्येक प्रान्त और प्रत्येक शहर में अलग अलग तरह को लोककलायें चित्रित की जाती है अन्त में, मैं वह मुख्य कलायें लूँगी जो सम्पूर्ण भारत में मनायी जाती है। और हर प्रान्त और शहर में होती है। जैसे ऐपण, गोदना, माण्डना, करवाचौथ आदि।

आभार प्रदर्शन

मैं परमपिता परमेश्वर के लिये आभार व्यक्त करती हूँ जिनकी असीम कृपा मुझ पर है जिनके आर्शीवाद से मैं अपना शोध प्रबन्ध पूर्ण कर सकी हूँ अतः मैं अपना शोध प्रबन्ध परमपिता परमेश्वर को समर्पित करती हूँ।

मैं डा0 सुनीता , जो बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के चित्रकला विभाग में विभागाध्यक्ष है, उनका सहृदय से आभार व्यक्त करती हूँ जिनके कुशल निर्देशन में मैने प्रस्तुत शोध प्रबन्ध तैयार किया। शोध प्रबन्ध के निर्माण में उनके मूल्यवाँन निर्देशन, उपयोगी सुझाव, तार्किक पद्धति एवं प्रेरणादायक प्रोत्साहन के कारण अभियोजित अध्ययन पूर्ण हो सका। आपके मृदल व्यवहार एवं सृजनात्मक सहयोग से प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में मेरी सहायता हुई है। और मैं अपने सपने को साकार कर सकी हूँ।

मैं डा0 रश्मि जोशी (विभागाध्यक्ष सरोजनी नायडू कन्या महाविद्यालय भोपाल) की आभारी हूँ। जिन्होने अपना महत्वपूर्ण समय निकालकर शोध प्रबन्ध सम्पादन में मेरा मार्गदर्शन किया। और एक अनजान शहर भोपाल में मेरी मदद की। आपने भोपाल के चित्रकारों से मिलने में मुझे महत्वपूर्ण सहयोग दिया। मुझे टेक्सी और फोटोग्राफर की सुविधा उपलब्ध करायी। आपके रचनात्मक सुझावों , सहयोग एवं मार्गदर्शन से मैं प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को पूर्ण करने का प्रयास कर सकी हूँ।

मैं आगरा की डा0 सरोज भार्गव का सहृदय आभार प्रदर्शन करती हूँ। आपने मुझे शोध प्रबन्ध से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सहयोग दिया। आपने मुझे उचित जानकारी दी। शोध प्रबन्ध को अच्छे ढंग से कैसे प्रस्तुत करना है यह आपने मुझे बताया। मैं आपकी आभारी हूँ। कि आपने मुझे अपना महत्वपूर्ण समय दिया।

मैं बरेली के डा0 एस0वी0एल0 सक्सैना का सहृदय आभार व्यक्त करती

हूँ। जो स्वस्थ खराब होने पर भी मेरे सहयोग के लिये आगे आये और अपना महत्वपूर्ण समय मुझे दिया। आपने मेरे शोध प्रबन्ध में मेरा सहयोग किया।

मैं अपने विभाग बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के ललितकला विभाग के प्रवक्ता श्री रवि नारायन गुप्ता का आभार प्रकट करती हूँ जिन्होने मुझे शोध के लिये प्रोत्साहित किया व मेरा मनोबल बढ़ाया और मेरा मार्ग दर्शन करते रहे। मैं डा0 सविता नाग मेरठ का भी आभार प्रदर्शन करती हूँ जिनके सहयोग से मेरे शोध प्रबन्ध में मेरी मदद हुई।

मेरे शोध में डा0 मधु श्रीवास्तव का भी महत्वपूर्ण सहयोग है। आपके रचनात्मक सुझाव व मार्गदर्शन प्रस्तुत शोध में मेरा सहयोग करते रहे।

मैं अपने पूज्यनीय पिताजी श्री चूरा सिंह की कोटि कोटि वंदना करती हूँ। जिनके स्नेह आर्शीवाद एवं सतत् प्रेरणा से यह प्रयास पूर्ण हो सका है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को मूर्त रूप देने में, मैं अपने भाई मुकेश कुमार का विशेष आभार करती हूँ आप पेशे से वकील है और आप मेरे शोध के लिये आप अपने महत्वपूर्ण कार्य छोड़कर मेरे साथ जहाँ भी आवश्यकता हुई आप गये। मैं आपकी बहन ललिता , पिंकी व चमन सिंह जीजाजी की भी विशेष आभारी हूँ। आपने मुझे रचनात्मक सहयोग एवं प्रोत्साहन प्रदान किया। पिता चूरा सिंह, भाई मुकेश, बहन ललिता, पिंकी व जीजाजी चमन सिंह के सहयोग व प्रोत्साहन के अभाव में प्रस्तुत शोध अध्ययन की सफल परिणति मेरे लिये असम्भव थी। मैं पैरामाउण्ट स्टूडियो, झाँसी का आभार प्रदर्शन करना चाहती हूँ। जिनकी कार्य कुशलता से मेरे प्रस्तुत शोध में फोटोग्राफी का सुन्दर प्रदर्शन हो सका है। अन्त में मैं प्रियंका कम्प्यूटर्स, यूनीवर्सिटी, झाँसी का भी आभार प्रदर्शन करती हूँ जिनके सहयोग से इस शोध प्रबन्ध का टंकण कार्य सुन्दर ढंग से हो सका।

धन्यवाद

हस्ताक्षर

कु० स्नेहलता

भोपाल के समकालीन चित्रकारों में लोककला का प्रभाव

विषय अनुक्रमणिका

चित्र फलक सूची

चित्र फलक सूची

चित्र फलक सूची

अध्याय प्रथम

भारतीय समकालीन कला - एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

भारतीय समकालीनकला-एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

अध्याय प्रथम

भारतीय समकालीन कला एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

सृष्टि के आरम्भ से ही मानव ने अपने चारों ओर व्याप्त अपूर्व सौन्दर्य की अनुभूति की है। और इस अनुभव को विभिन्न प्रकार की कलात्मक गतिविधियों के माध्यम से अभिव्यक्त करता रहा है। चाहे वह तूलिका हो, नृत्य हो, गायन हो अथवा नाटक, यह सभी विधायें अपने अन्तर मन में उमड़ रहे भावों को प्रकट करने का साधन मात्र है। कला की यह अभिव्यक्ति मानव के लिये तभी सम्भव है जब उसका अन्तःकरण बाहरी माया जाल से दूर और सृष्टि के करीब होता है। इस सृष्टि में व्याप्त परबृहम के विराट स्वरूप में उसे सत्य, शिव और सुन्दर के दर्शन होते है। किन्तु यह कदापि नहीं है कि कलाकार सिर्फ प्रकृति में व्याप्त सुन्दरता को ही चित्रित करे या एक कवि सिर्फ प्राकृतिक सुषमा का ही गुणगान करे, अपितु सामाजिक परिस्थितियों का प्रभाव भी उन पर पड़ता है। तथा वह इन्हीं विभिन्न माध्यम द्वारा अपने भावों को संसार के सामने व्यक्त करता है। तथा कभी कभी एक नये युग की सृष्टि भी करता है।

उन्नीसवीं शताब्दी की समाप्ति तक ब्रिट्रिश साम्राज्य ने पूरे भारत को अपने अधिकार में कर लिया था और उन्होने भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को एक विकृत रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया तथा हमारी कलाकृतियों की तूलना पाश्चात्य कलाकृतियों से करके पाश्चात्य कलाकृतियों की उत्कृष्टता सिद्ध करने का प्रयत्न किया। ब्रिटिश शासन में भारतीय विधार्थियों को पाश्चात शैली का अभ्यास कराया जाता था जहाँ पर विधार्थी पदार्थ चित्रण , व्यक्ति चित्रण आदि को पाश्चात्य शैली में चित्रित करते थे।[1]

अंग्रेजों ने हमारी सदियों से चली आ रही महान कला परम्परा को जो अजन्ता, मुगल,पहाड़ी आदि चित्रों में दिखायी देती है समाप्त कर दिया 1860 ई. में कैमरा का भारत में प्रवेश हुआ साथ ही छापाखानों तथा ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना से सभी कलाकारों को राज्याश्रम मिलना समाप्त हो गया। अमृतसर, लाहौर आदि स्थानों पर चित्रकार भारतीय तथा पश्चिमी शैली को मिलाकर चित्रण करने लगे। कुछ चित्रकारों ने दिल्ली और लखनऊ में शिल्पकला का आश्रय लेकर जीवन निर्वाह किया कुछ कलाकारों ने मुर्शिदाबाद में चित्रण कार्य प्रारम्भ किया। क्योंकि वहां सामाजिक स्थिति सुदृण थी और नबावों ने इन चित्रकारों को सहयोग भी दिया। किन्तु यह स्थिति भी अधिक समय तक नहीं रही तत्पश्चात कलाकार पटना में आकर बस गये। व्यापारिक और आर्थिक दृष्टि से पटना समृद्ध माना जाता था। क्योंकि अंग्रेजों का मुख्य व्यापार केन्द्र पटना ही था तथा उनके बहुत से कार्यालय भी वहां पर थे। ये लोग भारतीय कलाकारों को विदेशी शैली में कार्य करने को बाध्य करते और फिर इन चित्रों को विलायत भेजते। धीरे–धीरे विदेशी प्रभाव तथा पाश्चातय संस्कृति ने भारतीय संस्कृति को प्रभावित करना प्रारम्भ कर दिया। विदेशी शैली में बने इन चित्रों को पटना शैली कहा गया क्योंकि उनका मुख्य केन्द्र पटना था। किन्तु धीरे–धीरे यह प्रवृत्ति लाहौर दिल्ली, लखनऊ, बनारस मुर्शीदाबाद, पूना नेपाल, तन्जौर आदि स्थानों पर भी प्रचलित हो गयी इसलिये रायकृष्णदास ने इसे पटना शैली के स्थान पर कम्पनी शैली नाम दिया। जो कलाकार कम्पनी शैली की भली भांति नकल कर लेते थे उनकों कम्पनी का चित्रकार उपाधि से विभूषित किया जाता था। अंग्रेजों ने जल रंग चित्रण की नवीन तकनीक यहां के कलाकारों को सिखायी। क्योंकि अंग्रेजों का सभी स्थानों पर अधिपत्य था इसलिये यहां के कलाकारों ने बाध्य होकर जलरंग चित्रण करना प्रारम्भ किया। चित्रों में रेखाओं के स्थान पर छाया प्रकाश का प्रभाव कुशल रुप से दिखाया जाने लगा। चित्रों में धरातल के रुप में बसली कागज का प्रयोग किया गया जो कि नेपाल से आता था। रंगों में

प्रकृतिक तथा खनिज रंगों को अपनाया गया तथा जल रंगों को गोंद में मिलाकर भी प्रयोग किया गया। कहीं कहीं इन चित्रकारों ने पेंन्सिल से भी चित्र बनाकर काली स्याही से भी सम्पूर्ण चित्र को बनाया। इस शैली के अधिकतर चित्र छोटे आकार में बने इस पश्चिमी प्रभाव से बम्बई मद्रास कलकत्ता लाहौर में कला शिक्षा के लिये विद्यालय खोले गये और विद्यार्थियों को पाश्चात्य ढ़ंग से कला की शिक्षा दी जाने लगी और यर्थाथ शैली का पर्दापण हुआ।

19वीं शदी के अन्त तक अंग्रेजों ने पाश्चात्य चित्रकला को भारत में फैलाने का पूर्ण प्रयास किया। जिसमें वह सफल भी हुये शताब्दी के अन्त तक पूर्वी भारत के कला जगत में दो विशिष्ट कला रूप प्रकट हुये। अधिसंख्य में प्रतिभाशाली कलाकारों ने प्रचलित तकनीक अपना ली। वे अपनी चित्रात्मक आकांक्षा की दृष्टि के लिये व अपनी जीविका के लिये भारतीय जीवन और परिदृश्य को यूरोपीय शैली में चित्रित करने लगे। तथा अन्य कुछ ने बहुत करके ग्रामीण एवं अति सम्पन्न वर्गो के आनन्द के लिये भारतीय संस्कृति एवं लोककला के चिर परिचित चित्र बनाना स्वीकार किया। जिन्हे बाजार में पेन्टिग कहा गया। विदेशी शासन की चकाचौध और नवीन संघर्षो ने हमारी हर चीज को बेगाना सा बना दिया।

भारत के कलाकारों ने अंग्रेजों की शैली, तकनीक सभी कुछ सीखा और उनकी शैली में चित्राँकन भी किया। किन्तु अपनी पारम्परिक कला को भी बनाये रखा है। जिससे धीरे – धीरे नई शैली का विकास हुआ। जिसे वर्तमान में समकालीन कला कहा गया। आधुनिक कला के विविध कलाकारों ने इस प्रक्रिया को गति दी। और अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहे है 19वीं सदी के प्रख्यात दक्षिण भारतीय चित्रकार राजा रवि वर्मा का महत्व सिर्फ इसलिये नहीं है। कि उन्होने भारतीय सांस्कृतिक विषयों को अपने चित्रों का विषय बनाना बल्कि इस कारण भी है कि उनके चित्रों में यूरोपीय कला जगत की तदयुगीन बारीकियां भी दिखाई देती थी और यह पारम्परिकता और आधुनिकता को जोड़ने का पहला

प्रयास था।[2]

भारतीय चित्रकला का इतिहास काफी पुराना है। आधुनिक भारतीय चित्रकला के विकास के अध्ययन से ज्ञात होता है कि समय के अनुसार भारतीय चित्रकला की विषय वस्तु एवं शैली में जो परिवर्तन हुआ है वह सामयिक परिस्थितियों से प्रभावित होने के कारण हुआ है। आधुनिक कला का विकास औद्योगिक क्रान्ति और संचार के विकसित साधनों के कारण हुआ है। संसार के समस्त देशों पर इस क्रान्ति का इतना असर रहा है कि वहाँ के सम्पूर्ण जनजीवन, संस्कृति, साहित्य और कला के क्षेत्र में अमूल चूल परिवर्तन हो गया। भारत में औद्योगिकीकरण एवं मशीनीकरण अंग्रेजी सत्ता के माध्यम से आया है। इसलिये यहाँ की कला भी इस परिवर्तन से प्रभावित हुई है।[3]

आधुनिककला समाज में होने वाले पविार्तन व तकनीक में परिवर्तन का ही परिणाम है।

आज की आधुनिक भारतीय कला को समझने के लिये आधुनिक यानि समकालीनता को समझना अति आवश्यक है। कि आधुनिक शब्द का अर्थ क्या है, इस शब्द का सीधा अर्थ है "एक ही समय में समय के साथ" या " समय के साथ चलते हुये" पहले जिस कला सन्दर्भ के लिये 'आधुनिक कला' शब्द का व्यवहार होता था, उसी कला सन्दर्भ के लिये अब समकालीन कला शब्द का व्यवहार होता है। इन दोनों शब्दों के शाब्दिक रूप और अर्थ अलग अलग है। किन्तु परिभाषिक रूप में इसके अर्थ समान स्तर पर स्वीकार कर लिये गये है। इस प्रकार पांचवें दशक में भारतीय कला का जो रूप देखा गया उसकी पहचान आधुनिक कला के रूप में की गई और उसी कला सन्दर्भ के लिये अब समकालीन कला शब्द का व्यवहार होता है।[4]

हम आधुनिक कला को और अच्छे ढंग से समझने चाहते है तो हमें पहले हमारी प्राचीन कला के बारे में जानना होगा। जिसके तुलनात्मक अध्ययन से हम आधुनिक कला को और अच्छे तरह से जान पायेगें। इस प्रकार आधुनिक

चित्रकला के बारे में निम्नलिखित बातें हमारे सामने आती हैं।

1. प्राचीन चित्रकला जहाँ सिद्धान्तों और परम्पराओं में जकड़ी थी वहीं आधुनिक चित्रकला में स्वन्त्रता और नवीनता की लालसा है।

2. प्राचीन चित्रकला में जहाँ विषय की प्रधानता थी। वहीं आधुनिक कला में अभिव्यक्ति प्रमुख है।

3. प्राचीन कला में रेखाँकन और रूप आकार को प्राथमिकता दी जाती थी। चित्रण की सुन्दरता का मापदण्ड रेखा का प्रभाव माना जाता था किन्तु आधुनिक चित्रकला में रेखाँकन अथवा रूपाँकन का महत्व प्राचीन कला की तुलना में कम हो गया है। रंग विधान ने उसका स्थान ले लिया है।

4. प्राचीन चित्रकला में सैद्धान्तिक परम्परा की एकरूपता एक बहुत लम्बे समय तक पायी जाती है।

जबकि आधुनिक चित्रकला में नित्य नवीनता और आकर्षण कौतुक के लिये प्रतिदिन ही प्रयोगवादी दृष्टिकोण अपनाया जा रहा है।

5. प्राचीन चित्रकला का सम्बन्ध समाज से अधिक था, वह समाज उपयोगी ही नहीं वरन समाज को दिशा प्रदान करती थी। जबकि आधुनिक चित्रकला व्यक्तिवादी कही जा सकती है जिसका दूसरा नाम "कला, कला के लिये दिया जा सकता है"।[5]

आज का कलाकार जो 19वीं शदी में ब्रिटिश चित्रकारों की तकनीक व विषय को अपनाता था वर्तमान में वह अपनी तकनीक और विचारों को अपने चित्रण में प्रकट करता है। जिससे आधुनिक कला का स्वरूप भी बदला है और आज 21वीं शदी की कला समकालीन कला कहलाती है।

समकालीन कला की अवधारणा को पर्याप्त रूप से समझने के लिये आधुनिक समाज की अवधारणा, विचार, परिवेश और उनकी पसन्द को वखूबी समझना अति आवश्यक है।[6] तभी हम समकालीन कला को समझ पायेगें। दरअसल आधुनिक कला आन्दोलन के बाद की सृजनात्मक कला को परिभाषित

करने के लिये जिस आधुनिक कला शब्द का व्यवहार भारत में अब तक किया गया उसकी शक्ति क्षीण हो गई है आज उसी कला के लिये समकालीन कला शब्द का प्रयोग हो रहा है।

आज समाज की संरचना के लिये कलाकार के मन में अनेक नये विचार जन्म ले चुके है साथ ही कला के पारम्परिक अन्त पूर्वाह में नई खोजों ने भी कला को नई दिशा दी है प्रयोग धर्मी कलाकारों ने बिलकुल नई समझ के साथ सृजन कार्य आरम्भ किया। कला धीरे धीरे जीवन का प्रतिबिम्ब बनती गई। इस प्रकार आज भारतीय कला का जो रूप देखा गया। उसकी पहचान आधुनिक कला या समकालीन कला के रूप में की गई। इस दौर में रची गई अनेक कलाकृतियों को कलातीत कला कहकर सम्बोधित किया गया। संसाधनों के विकास ने अभिव्यक्ति की सम्भावनाओं को अधिक स्वयं स्फूर्त बनाया। इसके गतिमान रूप कैनवास से लेकर एक्रिलिक और जल रंगों में, सेरीग्राफी और फोटोलिथों में भी अभिव्यक्त किये गये हैं।[7]

आज के कलाकारो के पास साधनों को कोई कमी नहीं है। वह अनेक माध्यमों में चित्र बना रहे है। इस प्रकार कला के विविध रूपों का विकास हो रहा है। जलरंग व तैलरंग का उपयोग इतिहास में एक लम्बे समय से हो रहा है।[8] और आज भी इसका प्रयोग सरल व सुगम बना हुआ है। सामान्यतः चित्रों को रंगों के साथ ही देखा व समझा जाता रहा है और कलाकार चित्रों में उन्हीं माध्यमों का उपयोग अभिव्यक्ति के लिये करता है। जो उसे सहजता से उपलब्ध है और आवश्यकतानुसार उसे काम में लाया जा सके। आज के कलाकारों को अनेक प्रकार के वस्तुओं की जानकारी है और उसके सामने अनेक प्रकार के साधन है जिन्हें वह अपनी कलाकृति के लिये चुन लेता है। जिससे इन नवीन माध्यमो और साधनों के साथ नये नये कला कला रूपों एवं विधियों का जन्म होता है। परिणाम स्वरूप सृजन क्षेत्र में आश्चर्यजनक परिवर्तन एवं अद्भुत परिणाम भी हमारे सामने आये हैं। यह माध्यम चाहे आदि मानव की

मिट्‌टी या रेत हो पत्थर, लकड़ी या हड्‌डी हो चाहे वह सोना–चांदी हो।

कलाकारों ने अपनी अभिव्यक्ति को व्यक्त करने के लिये अनेक माध्यमों का प्रयोग किया है यह प्रक्रिया प्राचीन समय से लेकर आधुनिक समय में अनवरत रूप से जारी है कला का विकास सामान्यतया प्रयोगधर्मिता पर विशेष रूप से केन्द्रित रहा है। जलरंग व तैलरंग यद्यपि सर्वाधिक लोकप्रिय माध्यम है फिर भी इनके परे जाकर कलाकारों ने रचना के नये संसाधन खोजे। परम्परागत माध्यमों के विरूद्ध आधुनिक समय में प्रयुक्त होने वाली वस्तुओं का प्रयोग चित्रों में होने लगा है आदि मानव के पास शिला खनिज रंग तथा जानवरों की चर्वी और खून था इसलिये उनकी रचना इन्हीं चीजों पर केन्द्रित रही। कला शिलाओं से निकल चिकनी सतह पर आ गई। भवनों, गिरिजा घरों एवं मन्दिरों की सपाट दीवारों पर चित्र अनुरंजित होने लगे। दीवारों के बाद चित्र कपड़े, ताड़ तथा कागज पर आ गये। भारत में मिनिएचर चित्रो की रचनायें कागज पर की जाने लगी। कागज के बाद केनवास, केनवास के बाद अनेक तरह की सतह जैसे प्लाई बोर्ड, मेसोनाहट बोर्ड जिंक प्लेट , सिल्क आदि का प्रयोग किया गया।[9]

विभिन्न साधनों के उपयोग से प्राचीन और आज की कलाकृतियां बनती आयी है। भारत में आज अनेक प्रकार के माध्यमों में कार्य हो रहा है। कुछ चित्रकारों ने विविध माध्यमों द्वारा कला जगत में अपनी विशिष्ट पहचान बना ली है। उनकी सृजन क्षमता उतनी ही सक्षम है जितना माध्यम का प्रयोग। इन कलाकारों द्वारा किये गये काम को एक नाम मिश्रित माध्यम के अन्तर्गत रखा जाने लगा है तथा माध्यमों के अन्तर्गत आने वाली विधियों को भी विविध नाम दिये गये है। कागज एवं वस्त्र आदि को चिपकाकर बनाये जाने वाले चित्रों को कोलॉज के अन्तर्गत रख जाता है। यह विधि भी अब काफी पूरानी हो गई है। और कलाकार इससे भी नया सोचने लगा है। एक अन्य विधि में गाढ़े अपारदर्शक रंगों को गोंद आदि के मिश्रित प्रयोग से चित्र बनाना शामिल है जो

गोचे विधि के नाम से प्रचलित है इससे भी आगे बड़कर चित्रकार ने प्लास्टर, मिट्टी , इनेमल, मोम, कागज की लुगदी आदि वस्तुओं से उभार देकर चित्र बनाये है जिस इंम्पेस्टो विधि के नाम से जाना जाता है। इसी प्रकार के उभार चित्रों में में कुछ चित्रकारी ने थर्मोकोल और रंगों के मिश्रित प्रयोग भी किये है। किन्तु कुछ कलाकारों ने तो लकड़ी को धरातल बनाते हुये उस पर विविध प्रकार की धातुओं और प्लास्टिक के टुकड़ों को भी काम में लिया है। इससे चित्र में न रंग बल्कि केनवास की आवश्यकता छूटने लगी है कुछ अन्य माध्यमों के प्रयोग में चित्रकारों ने लकड़ी जलाकर भी रंगों का प्रभाव उत्पन्न किया है जिसे हम व्रो टार्च एवं एन्कास्टिक विधि नाम से जाना जाता है।

इस प्रकार हमारे चित्रकारों के चित्र गुफाओं से उतर कर ताड़तत्रों और ताड़पत्रों से उतर कर कागज पर और कागज से उतर कर केनवास और फिर उससे भी आगे केनवास से उतर कर कहीं भी और कैसे भी बन सकते है। अर्थात चित्र आगे भी न जाने किन किन माध्यमों पर उतर आये कहना मुश्किल है।[10]

आज के कला परिदृश्य में मोटे रूप से भारत में ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में भी दो तरह की प्रवृतियां देखने को मिलती है। एक प्रवृत्ति में तो वह कलाकार है जो इस तरह की कलाकृतियों की रचना में लगे है। जिसमें बाजार, रेलवे स्टेशन, नदी पुल, जनमानस से भरे पार्क, शोषित पीड़ित मजदूर, गरीबी बदहाल जिन्दगी से लथपथ मानव आकृतियां, वस्तु परक चित्र इत्यादि सम्मलित है।[11] जिनका वह यर्थात चित्रण करते है। दूसरी ओर उपरोक्त व्यौरों से परे बनाये जाने वाले चित्रों के चित्रकार आते है। जो इस प्रकार के चित्र बनाते है जिनमें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भौतिक वस्तुओं का संकेत नहीं होता है। यानि भौतिक तत्वों से रहित वस्तु निरपेक्ष चित्र दिखाई देता है। जो सहज ज्ञान और अर्न्तमन की क्रिया से जनित होता है ये कलाकार जानबूझकर किसी विषय को चित्रित नहीं करते है वह वस्तु के बाहय लक्षणों से मुक्त होकर अपने

सौन्दर्यभिव्यक्ति के स्वाभाविक सामर्थ्य को प्राप्त करने की चेष्टा में रत रहते है। ये कलाकार वस्तु निरपेक्ष गुणों यानि रेखा रंग धरातल आदि मूल तत्वों के निजी विचार को ध्यान में रखकर कार्य कर रहे है।

इस तरह दोनों प्रवृतियाँ एक साथ होने से हमारे बीच कोई कलाकार 20वीं सदी का है। तो कोई पहली सदी का, तो कोई 21वीं सदी का है। कलाकारों की पहली प्रवृति का आधार विश्वास और रचनात्मक है जबकि दूसरी पद्धति का आधार प्रयोगात्मक और विचार है। दूसरी पद्धति में कलाकार वस्तु के आन्तरिक गुण का ही प्रत्यक्षीकरण करते हैं बाहय रूप का नहीं।

कलाकार स्वयं को सर्जक के रूप में देखता है। और अनुभवों को रूपान्तरित और प्रतिबिम्बत करना चाहता हैं। किन्तु कलाकार वस्तु के सार तत्व एवं चैतन्य को तभी अभिव्यक्त कर सकता है जब वह आन्तरिक सत्य को पूरी तरह आत्मज्ञात कर लेता है समकालीन कलाकार इसी आन्तरिक रहस्य और चैतना शक्ति को पहचानने और उसे अपने निजी मुहावरों से अभिव्यक्त करने की कोशिश करता है।[12]

समकालीन कलाकारों ने आन्तरिक नेत्रों द्वारा वस्तु के स्वभाव को आत्मसात करते हुये खुद को बन्धनों से मुक्त कर लिया है। वह प्रकृति की नकल नहीं करता और न ही उसे वस्तु के साम्य से उसे कोई लगाव रहता है। प्रकृति उसके अनुभव की वस्तु बन जाती है।

वस्तु के मूल तत्वों द्वारा आकार का सृजन ही समकालीन कलाकार की मुल रचना पद्धति रही है। जिसकें द्वारा वह वस्तु का प्रत्यक्ष चित्रण करता है। वह न केवल विषय वस्तु के स्वभाव को निश्चित करता है बल्कि रंग, रूप, धरातल और उभार आदि सभी दृष्टि गुणों को प्रदर्शित करते हुये नई दिशा, नये भाव और नये विचार प्रदान करता है।

औधोगिक और वैज्ञानिक सभ्यता के तीव्र विकास ने मनुष्य के हृदय और मस्तिष्क को बड़ी गहनता से आन्दोलित किया है। व्यक्तिगत मानसिक विधाओं,

बिम्बो , नये नये मुहावरों और साहसिक प्रयोगों ने सारे कला क्षितिज को ही बदल डाला है। कला के नये मानदण्ड , नई परिभाषायें , नये स्वर चारों ओर उभर रहे है। चित्र की विषय वस्तु को त्यागकर कलाकार धरातल के विन्यास, लिपि मूलक गुणों के निर्वाह, आकारों के तनाव, रंगों के आकर्षण और विकर्षण तथा बुनाबरों की ओर अधिक आकर्षित हो रहे है कला आज देश और काल के आवरण को तोड़कर स्थानीयता से मुक्त होने की चेष्टा कर रही है परम्परा की जंजीरों ने जिस प्रकार तत्कालीन कला को जकड़ रखा था उससे मुक्ति पाने की प्रतिक्रिया के कारण ही अमूर्तन और अन्य समकालीन विधाओं का जन्म हुआ है।[13]

आज हम समकालीन कला के उस दौर से गुजर रहे है। जहाँ कला गतिविधियां तेजी से बढ़ रही है। अनेकों नई नई कला दीर्धार्ये खुली है। नये कलाकारों का भी काम सामने आया है।[14]

कलाकृतियों का बाजार में मुल्य भी बड़ा है और कला संग्राहक भी सचेत हो रहे है। प्रदर्शिनियों की संख्या आज जितनी अधिक बड़ी है। उतनी पहले कभी नहीं हुआ करती थी। चित्रों की फ्रेमिंग (मड़वाना) उनकी छोटी सी किताब (कैटलोगिंग), उनके रखरखाव और उनकी तकनीकी दृष्टि से प्रचलन भी बड़ा है।

इसलिये हमें अपने सरोकारों और सन्दर्भों को साफ साफ देख और समझ लेना भी आवश्यक है भारतीय कला जगत में वे ही कलाकार मजबूती से खड़े हो सकते है जो समाज और कला की नई नई चुनौतियों को स्वीकार करने की क्षमता रखते है। साथ ही अपने परम्परागत कला सौन्दर्य और उसके गौरव को भी मजबूती से पकड़ कर रख सकने का भी सामर्थ्य रखते है। हम हमेशा ही पश्चिम की चकाचौंक से हीन भावना से ग्रसित रहे है। और इस स्थिति को बदलने में भी लम्बा समय लगा हैं सबसे पहले शायद रवीन्द्रनाथ टैगोर ने ही

इस भयावह स्थिति को सम्भाला , जब उन्होने अपने जीवन के सन्ध्याकाल में कागज और कलम की भाषा को एक ओर रखकर रंगों और कुची की भाषा को अपनाया और लगभग दो हजार से भी अधिक चित्र और रेखाँकन बना डाले।[15]

आज वर्तमान में देश में समकालीन कला के लिये एक माहौल तैयार हुआ है। आज का युवा कलाकार अपने माहौल, परिवेश और रोजमर्रा के बुनियादी सवालों और सरोकारों से भी अपने को जुड़ा हुआ देख पा रहा है। यह एक महत्वपूर्ण परिवर्तन है। आज का भारतीय कलाकार इस नये वातावरण को झेलने के लिये ही नहीं उसे आत्मसात करने के लिये भी तैयार हो चुका है उसकी नियति अब एक निर्णायक दौर से गुजर रही है। जहाँ उसे अपने अस्तित्व की पहचान की लालसा है।

समकालीन कला का जन्म वैज्ञानिक अवधारणा से हुआ है। और उसमें प्रयोगवादी दृष्टिकोण है जिसके फलस्वरूप आधुनिक चित्रकला का स्वरूप विभिन्न प्रारूपों में उपस्थित हो सका है किन्तु उसमें प्रयोगवादी प्रक्रिया किसी निश्चित खोज को स्थापित नहीं कर पायी है। जिसके कारण उसका कोई निश्चित स्वरूप अभी प्रकट नहीं हो सका है लेकिन अगर हम भारतीय चित्रकला का स्वरूप दर्शाना चाहे तो हम यही कहेगें कि भारतीय चित्रकला "कुछ कुछ पाश्चात्य और अधिकतम नवीन प्रयोगवादी है।"

भारत में पाश्चात्य शैली के आगमन के बाद हम देखते है कि भारत में नवीन प्रयोगवादी दृष्टिकोण से निम्नलिखित शैलीयों का विकास मुख्य रूप से हुआ –

1. यथार्थवादी शैली:–

यथार्थवाद से तात्पर्य है दर्पण के तुल्य चित्रण। जैसे वस्तु नेत्रों से देखी जाती है उसका ठीक वैसा ही चित्र निरूपित करना।

इस शैली का प्रयोग पश्चिम में अधिक होता था और इस शैली के भारत आगमन के पश्चात भारतीय चित्रकला पर पाश्चात्य कला का प्रभाव सबसे पहले इसी यथार्थवाद कला से प्रारम्भ होता है और आज वास्तविकता यह है कि यथार्थवाद भारतीय चित्रकला का आधार बन गया है[16] और चित्रकला की शिक्षा का आरम्भ इसी शैली से किया जाता है।

2. आभासात्मक शैलीः-

इस शैली में विषय का महत्व नहीं रहता बल्कि वस्तु के आकार के अनुसार अभ्यास के द्वारा स्वतन्त्र रूप सें चित्रण किया जाता है इस प्रवृति में रंग और उसकी रंगतों व तकनीक को महत्व दिया जाता है इस शैली में तीन बातों पर बहुत अधिक ध्यान दिया जाता है एक तो ऊपरी सतह टेक्सचर की बनावट, दूसरे छाया और प्रकाश का प्रयोग व चित्रों का धुंधलापन है।

3. अभिव्यजनात्मक शैलीः-

इस शैली को सरल रूप में नहीं दर्शाया जा सकता। इस शैली के विभिन्न अर्थ लगाये जा सकते है जैसे कि अभिव्यंजना के लिये रंग रेखाओं का मनमाने ढंग से प्रयोग , किसी भी तरीके से या साधन से प्रज्वलित रंगों से , आकृति, विकृतिकरण से, भावनाओं रहस्यों विचारों और अनुभूतियों आदि की अभिव्यक्ति करना अभिव्यंजनात्मक शैली है इस शैली का प्रयोग भारतीय कलाकारों ने कम किया है।

4. घनवादी शैलीः-

घन का अर्थ होता है छः समान वर्गो वाला कोई ठोस पदार्थ। घनवादी शैली के रूप में एक नवीन शैली का जन्म हुआ। इस शैली में आकृति के सभी अंग प्रत्यग ज्यामितीय आकारों में विभक्त करके चित्रित किये जाते है आज भारत में इस शैली का काफी प्रचार है। चित्रों में परिप्रेक्ष्य के स्थान पर घनत्व को अधिक महत्व दिया जाता है। घनवादी चित्रकारों की आकृतियों में शक्ति, सौन्दर्य और वक्र रेखाओं का विशेष प्रयोग पाया जाता है।

5. कोलॉजः-

कोलॉज बनाना दादावादी प्रवृति से आरम्भ हुआ दादावादी प्रवृति में यूरोपीय कलाकारों ने समाज में व्यप्त बुराई को लेकर चित्रण किया। यह चित्रण व्यंग्यात्मक व प्रतीकात्मक था जिससे इस प्रवृति के कलाकार को पागल व सनकी कहा गया। किन्तु भारत में इस प्रवृत्ति को सीधे नहीं अपनाया बल्कि इसी की एक शैली कोलॉज को अपनाया। जिसमें चित्रकार विभिन्न माध्यम और तकनीक को अपनाकर चित्रण करता है। यह माध्यम कुछ भी हो सकते है, जैसे अखवार, कागज के टुकड़े, लकड़ी, सींक माचिस की तीली, धागा, रस्सी, कपड़ा प्लास्टिक, कलपुर्जे या कोई भी बेकार का सामान आदि।

6. जंगलवादी शैली-

इस शैली में भावव्यक्ति के लिये रंगों को अधिक महत्व दिया जाता है। इस शैली में इस प्रकार के चित्र बनते है जिनमें कोई आकृति नहीं होती बल्कि रंगों द्वारा ही अभिव्यक्ति की जाती है। कलाकार आकृतियों को महत्व नहीं देते हैं। इसमें तकनीक प्रमुख हैं भारतीय चित्रकारों का इस शैली का काफी प्रभाव पड़ा।

7. उत्तर प्रभाववादी शैलीः-

इस शैली का प्रभाव भारत में काफी पड़ा। इस शैली में चित्रों में रंगों को छोटे छोटे फलकों के रूप में या बिन्दुओं के रूप में धरातल पर पास पास करके लगाया जाता है जिसमें यह बिन्दु धरातल पर मिश्रित प्रतीत होते है आज भी इस शैली का प्रयोग भारत में ही हो रहा है।

8. अमूर्त शैलीः-

यह शैली अभारात्मक शैली के ही समान है चित्र में अभिव्यक्ति रंगों के माध्यम से ही की जाती है। जिसमें रंगों को नवीन प्रयोगों द्वारा लगाया जाता है। तथा आकृतियाँ स्पष्ट नहीं होती है। चित्रों में अभिव्यक्ति प्रमुख है।

जिस प्रकार भारतीय चित्रकला की पहचान परम्परागत शैली, लोक शैली, मिनिण्चर शैली से आदि से होती है। इसी प्रकार इन शैलीयों से समकालीन कला की पहचान होती है।

सन्दर्भ संग्रह

1. श्रीमती नमिता त्यागी, बम्बई के प्रगतिशील कलाकार एवं बेन्द्रे (एक समीक्षात्मक अध्ययन) 2002 शोध प्रबन्ध, डा0 भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय आगरा, पृष्ठ 1, 2।

2. ज्योतिष जोशी, समकालीन कला, कला चिन्तन, अंक 17 मई 1996, पृष्ठ 5।

3. जयसिंह, नीरज, समकालीन कला अंक 17 मई 1996 महात्मा गाँधी और कलात्मक सृजन पृष्ट 32।

4. अवधेश अमन, समकालीन कला अंक 17 मई 1996, समकालीनता के नये अर्थ पृष्ठ 15।

5. प्रोफेसर एस0 बी0 एल0 सक्सेना, डा0 सुधा सरन, डा0 आनन्द लखटकिया, कला सिद्धान्त और परम्परा, पृष्ठ 140।

6. मीनाक्षी भारती, समकालीन कला, अंक 17 मई 1996, पृष्ठ 47।

7. अवधेश अमन, समकालीन कला अंक 17 मइ 1996 समकालीनता के नये अर्थ, पृष्ठ 15–16।

8. वीरबाला भावसार , समकालीन कला , समकालीन कला में रचना सामग्री के नये आयाम, पृष्ठ 35।

9. डा0 राय विरंजन, कला दीर्घा अप्रैल 2003, वर्ष 3 , अंक 6 आधुनिक कला और प्रयोगधर्मिता, पृष्ट 30।

10. वीरबाला भावसार, समकालीन कला, समकालीन कला में रचना सामग्री के नये आयाम, पृष्ठ 35।

11. यूसुफ , समकालीन कला , अंक 17 मई 1996 , पृष्ठ 30–31।

12. व्यौहार राम मनोहर सिन्हा, समकालीन कला अंक 17, मई 1996 समकालीन कला के आयाम, पृष्ठ 26।

13. व्यौहार राम मनोहर सिन्हा, समकालीन कला अंक 17, मई 1996 समकालीन कला के आयाम, पृष्ट 26।

14. मीनाक्षी भारती , समकालीन कला , अंक 17 मई 1996 , समकालीन कला परिदृश्य में आधुनिकता, पृष्ठ 47।

15. मीनाक्षी भारती , समकालीन कला , अंक 17 मई 1996 , समकालीन कला परिदृश्य में आधुनिकता, पृष्ठ 47।

16. प्रोफेसर एस0 बी0 एल0 सक्सेना, डा0 सुधा सरन, डा0 आनन्द लखटकिया, कला सिद्धान्त और परम्परा, पृष्ठ 152।

अध्याय द्वितीय

लोक कला एक अध्ययन - अर्थ, परिभाषा, वर्गीकरण, विभिन्न लोकसृजनात्मक कलायें

2.1 - लोक कला का जन्म

2.2 - लोक कला का अर्थ एवं परिभाषा

2.3 - लोक कला का स्वरूप

2.4 - लोक कला के तत्व

2.5 - लोक चित्रकला की विशेषतायें

2.6 - लोक चित्रण के कारक

2.7 - परम्परागत लोक कलायें

2.8 - लोक चित्रण की तकनीक

2.9 - लोक कला में प्रतीक चिन्ह

लोककला एक अध्ययन-अर्थ, परिभाषा, वर्गीकरण, विभिन्न लोकसृजनात्मक कलायें

2.1 - लोककला का जन्म

2.2 - लोक कला का अर्थ एवं परिभाषा

2.3 - लोक कला का स्वरुप

2.4 - लोक कला के तत्व

2.5 - लोक चित्रकला की विशेषतायें

2.6 - लोक चित्रण के कारक

2.7 - परम्परागत लोक कलायें

2.8 - लोक चित्रण की तकनीक

2.9 - लोक कला का प्रतीक चिन्ह

द्वितीय अध्याय

लोककला

भारतीय कलाओं में चित्रकला को सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त है। क्योंकि चित्रकला में समस्त कलाओं को चित्रित कर स्थायीत्व प्रदान करने की क्षमता है।[1] चित्रकला एक ऐसी भाषा है। जिसके द्वारा हम बिना पढ़े या सूने या कहे सिर्फ देखकर ही हम किसी भी देश की संस्कृति और सभ्यता के बारे में जान सकतें है। और किसी भी देश की संस्कृति और सभ्यता का सम्बन्ध वहाँ की जनता से होता है। जिसे लोक कहते है। अतः लोक का अर्थ ग्राम या समुदाय नहीं है बल्कि वह समूची जनता है जो व्यवहारिक ज्ञान , सरल और साधारण जीवन की अभ्यस्त है[2]। भारत के विभिन्न अंचलों में लोक व्याप्त है लोक संस्कृति का एक महत्वपूर्ण शब्द है यह जनजीवन प्रत्येक पहलू में है। मानव का भूत भविष्य और वर्तमान सभी इससे जुड़ा हुआ है। भारत के विभिन्न ग्रामों शहरों में लोक रूपों के विभिन्न मांगलिक चित्रण किये जाते है। यह लोक चित्रण लोक जीवन के महत्वपूर्ण अंग बन गये है। मांगलिक अवसरों पर बने चित्रों को लोक चित्र कहा जाता है।[3] तथा लोक चित्र बनाने को लोककला कहा जाता है कला शब्द अंग्रेजी के आर्ट शब्द का पर्यायवाची है जो आर्ट शब्द आर Ar धातु से बना है जिसका अर्थ है, बनाना, पैदा करना, या ठीक करना[4] अतः हम कह सकते है कि लोककला मानवीय भावनाओं का का सुन्दर प्रदर्शन है।[5] लोककलायें वास्तव में मनुष्य के मन और बुद्धि की अति प्राचीन काल की पारम्परिक धरोहर है। यह पूज्य पवित्र वातावरण को सुन्दर शुद्ध व प्रेरणादायक बनाती है। चित्राँकन लोककला का एक सशक्त माध्यम है। यह अन्य माध्यमों की अपेक्षा अर्न्तमन के भावों को अधिक प्रभावशाली ढंग से प्रतिबिम्बित करने वाली विद्या है।[6]

2.1 लोककला का जन्म या शुरूआत

लोककला की शुरूआत के सम्बन्ध में विद्वानो ने विभिन्न मतभेद है। लोककला का जन्म कब हुआ , इसका इतिहास क्या है इसके सम्बन्ध में कई तर्क–वितर्क हुये। लेकिन लोककला के सम्बन्ध में यह पता चला है कि लोक कला मानव जीवन से किसी न किसी रूप में जुड़ी हुई है। और कुछ विद्वानों का मानना है कि लोककला का जन्म भावनाओं,परम्परा तथा अन्धविश्वास पर आधारित है। क्योंकि यह जन साधारण की अनुभति की अभिव्यक्ति होती हैं[7] कहीं कहीं यह विश्वास है कि लोककला का विकास समूह मण्डल में हुआ है जो एक विकास के रूप में उसका अनुसरण करती है सिन्धु नदी की घाटी भी एक ऐसा स्त्रोत प्रतीत होती है जहाँ से तमाम लोककलाओं की उत्पत्ति हुई है। यहाँ अनेक पौधे, पशु और मानव आकृतियों के चित्र पाये गये है। जो प्रागेतिहासिक काल की कला में भी पाये गये थे वे सभी इस काल में विकसित स्वरूप में पाये गये है। यहाँ ग्रामीण लोककला एक आदर्श से नियमवृद्ध होकर उनकी भावनाओं के सहारे संगठित रूप में पनपी है। लेकिन इसमें परिवर्तन कम हुआ है क्योंकि यह परम्परा पर आधारित रही है।[8]

अतः मानव का भूत, भविष्य और वर्तमान सभी लोककला से जुड़ा हुआ है। इसमें जन सामान्य के आदर्श , विश्वास , रीति–रिवाज एवं लोक मूल्य भी सम्मिलित है। लोककला के विकास के सम्बन्ध में किसी निश्चित तिथि या काल को बताना एक बहुत ही जटिल समस्या है यहीं कह देना उचित है कि मानव सभ्यता के साथ ही यह विकसित हुई है।

श्रीमती शचीरानी गुर्ट के अनुसार " लोककला युग – युग का इतिहास संजोये मानवीय भावनाओं के साथ साथ चली आ रही है। परम्परागत अनुभव, मानवीय भावनाओं और स्मृतियों के ताने बाने से उसकी सृष्टि हुई है।[9]

यह भी कहा जा सकता है कि सृष्टि और मानव जीवन के प्रारम्भ से ही

लोक चित्रकला का जन्म हुआ है। लोक चित्रण के प्रारम्भ के सम्बन्ध में हम कह सकते है कि जब किसी आदि मानव ने किसी पत्थर या नुकीली वस्तु से अपने रहने के स्थान की गुफा की भित्ति पर आड़ी–तिरछी लकीरे खींचकर भावभिव्यक्ति की वहीं पहला लोक चित्र था तथा वह आदि मानव पहला लोक चित्रकार था। आदि मानव सबसे पहले प्रकृति के सम्पर्क में रहा उसने प्रकृति के विभिन्न रूपों को देखा जिसे देखकर वह आश्चर्य चकित हुआ। सूर्य के प्रकाश और उसकी ऊर्जा शक्ति, जल की जीवनदायिनी शक्ति, पृथ्वी की उर्वरा शक्ति, वृक्षों से फल फूल की प्राप्ति, पत्थरों की रगड़ से उत्पन्न अग्नि ने आदि मानव में भय को व्याप्त कर दिया, और उसे उनकी शक्ति का उपासक बना दिया प्रकृति में रहने वाले जीन–जन्तु, पशु–पक्षी उसके सहयोगी बने। अपने मन की भय और भावना को उसने खनिज रंगों के माध्यम से गुफा भित्तियों पर अंकित किया। जहाँ से लोककला की शुरूआत हुई।[10] लोककला का विकास मानव में कला की सृजनात्मक प्रवृति के विकास के साथ दिखाई देता है। मानव ने धीरे धीरे अपनी रचना बनानी आरम्भ कर दी और कलाकार में अलंकार की प्रवृति जागृत हुई। परिणाम स्वरूप घरों की भित्तियों, द्वार–आंगन आदि की सज्जा से अलंकरण की प्रवृति का विकास हुआ। अतः लोककला के माध्यम से हमें प्राचीन धर्म सभ्यता, परम्परा, संस्कृति और उनके मूल स्त्रोतों का ज्ञान होता है।

लोककला का विकास मूलतः हमें ग्रामीण जनपदों में दिखाई देता है।[11]

2.2 लोककला का अर्थ एवं परिभाषा

लोककला के काल को निश्चित करने के समान ही उसके सही अर्थ को समझना भी अति कठिन है। लोग उसका अर्थ बिना समझे ही लोककला को गलत समझने लगते है। क्योंकि उनको उसका सही अर्थ पता ही नहीं।

लोककला का अर्थ समझने से पहले हमें लोक शब्द का अर्थ समझना भी अति आवश्यक है।[12]

हम लोककला की विभिन्न परिभाषाओं से उसके अर्थ को समझने की चेष्टा करेगें।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसारः—

"लोक शब्द का अर्थ जनपद अथवा ग्राम समुदाय नहीं है। बल्कि वह समूची जनता है। जिसके व्यवहारिक ज्ञान का आधार पोथियां नहीं है। ये लोग अकृतिम और सरल लीवन व्यतीत करते है।"[13]

श्री शैलेन्द्रनाथ सामन्त के अनुसारः—

" जनकला सामान्य जनसमुदाय की सामूहिक अनुभूति की अभिव्यक्ति है। "[14]

प्रो0 सी0एल0झा के अनुसारः—

" लोककला हमारी धार्मिक एवं अध्यात्मिक अभिव्यक्ति की प्रतीक है तो मानव हृदय की उपज है। और जिसमें कृत्रिमता एवं प्रविधिक प्रयोगों का कोई भी स्थान नहीं है।"

प्रिंसिपल ए0के0 हल्दर के अनुसारः—

" लोककला जन सामान्य के ऐसे आलेखन है। जो विभिन्न सांस्कृतिक अवसरों पर प्रयोग में लाये जाते है। जैसे बंगाल में अल्पना , उत्तर प्रदेश में चौक—पूजन , बम्बई में रंगोली और दक्षिण भारत में कोयल, जो सब मानवीय भावनाओं के प्रदर्शन है।

डा0 कारेल सौर्कः—

"लोक सम्बन्धी समस्त ज्ञान, उसका कलात्मक बोध, सांस्कृतिक यत्न, जो समाज के प्रमुख अंग है जो राष्ट्र की निधि है। लोककला में सांस्कृतिक ध्वनि है जो संस्कृति की रीढ़ की हड्डी है।"[15]

शचीरानी गुर्ट के अनुसारः

"जनकला केवल शादी ब्याह तक ही सीमित नहीं है बल्कि वह सर्वश्रेष्ठ आचारों संस्कारों और जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में रम गई है यह तो जनपद के हृदयगत उद्गार है जो लोक परम्परा के रूप में लोक में व्याप्त है।"[16]

Prof. M.C. Varket - "Folk Art is a picture of our old rituals and religious ideals."

Prof. A. Stevenson - "Folk Art is an impression of religious and aesthetic experiences."

Principal Saraswati - "Folk Art is an usual co-operative art of rural community based on their religious feelings."[17]

लोककला एक ऐसी कला है जो ग्रामीण समाज की धार्मिक भावनाओं पर आधारित होती है।

इन परिभाषाओं से स्पष्ट है कि लोककला तमाम सरल स्वभाव वाले व्यक्तियों की धार्मिक और सामाजिक परम्पराओं की अभिव्यक्ति है। इसमें बनाबटीपन और प्रविधिक का कोई स्थान नहीं है। यह प्रतीकात्मक रूप में बनाई जाती है। यह अति प्राचीन है जैसे कि

प्रो0 ए0के0 हल्दर ने लिखा हैः–

''कि लोककला परम्परागत कला का वह आवश्यक स्वरूप है कि जिसकी अपेक्षा गंवारू और ऊबड़–खाबड़ कला कहकर नहीं की जा सकती है। क्योंकि इसका संबंध मानव की भावनाओं से सीधा है।'' लोककला मानवीय भावनाओं का सुन्दर प्रदर्शन है जो संस्कृति की उन्नत्ति के साथ साथ उन्नति करती चली आ रही है।

प्रो0 सी0एल0झा0 के अनुसारः–

''लोककला मानवीय भावनाओं के साथ साथ चली आ रही हें जो अति प्राचीन है'' प्राचीन लोककला के विभिन्न सांकेतिक चिन्हों को हम सूक्ष्म

सामाजिक परीक्षणों के द्वारा ही समझ सकते है। मनसा देवी , ओलादेवी और शीतलादेवी आदि इसी स्त्रोत से उत्पन्न हुई है। चक्र और स्वस्तिक जंगली और सभ्य दोनों ही जातियों में पाये जाते है।[18]

2.3 लोककला का स्वरूप

वर्तमान समय में लोककला को उसके स्वरूप के आधार प्रो0 सी0एल0 झा के अनुसार हम चार विभिन्न भागों में बांट सकते है जो निम्नलिखित है:–

1. धार्मिक भावनाओं पर आधारित लोककला (रिलीजस फीलिंग्स एण्ड फोक आर्ट)।
2. मनोरंजक भावनाओं पर आधारित लोककला (रिक्रिएटिव फीलिंग्ज एण्ड फोक आर्ट)।
3. व्यक्तिवादी सांस्कृतिक भावनाओं पर आधारित लोककला (इण्डिवीजुअल कलचुरल फीलिंग्ज एण्ड फोक आर्ट)।
4. व्यापारिक भावनाओं पर आधारित लोककला (कामर्शियल फीलिंग्ज एण्ड फोक आर्ट)।

2.1 धार्मिक भावनाओं पर आधारित लोककला का स्वरूप

लोक–चित्रण धर्म की अभिव्यक्ति का एक साधन है जिसके द्वारा मानव अपनी धर्म की भावनाओं को उजागर करता है। लोक चित्रण में धर्म कूट–कूट कर भरा हुआ है। कितने ही त्यौहार , पर्व , उत्सव , होली , दीवाली, दशहरा, करवाचौथ , नागपंचमी , होईआठे , साँझी के त्यौहार, दन्तकथायें, लोककथाओं आदि में लोककला को चित्रित किया गया है। जिसमें हमारी धार्मिकता झलकती है। यह सभी धार्मिक गाथायें आंकने की प्रथा फर्श , दीवार और कागज पर

प्रचलित है।[19] सबसे पहले मानव में धार्मिक प्रवृति की शुरूआत आदि काल से हुई जहाँ उसने प्रकृति के उपयोगी स्वरूप और प्रकोप को देखा। प्रकृति पूजा के कारण ही अनेक लोक धार्मिक विश्वासों ने जन्म लिया। वह कृषि युग में भी पृथ्वी, जल, पशु, वृक्ष, वर्षा, नदी आदि को देवता के रूप में पूजने लगा देवता को पूजने के लिये विभिन्न संस्कार कर्मकाण्ड उपयोग में लाये गये। फल , अनाज व माँस इत्यादि चड़ाये गये।[20] झाड़–फूक, जादू–टोना और तन्त्र–मंत्र प्रयोग में लाये जाते है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल लिखते है कि "लोक चित्रण धर्म की एक ईकाई है। जिसे व्यक्ति अपनी धार्मिक भावनाओं को व्यक्त करने में प्रयोग में लाते है।"

कला को धर्म के प्रचार का माध्यम भी माना गया है जैसे अहपन में रात को चन्द्र पूजन के समय धरती पर अहपन से चँन्द्र आकृति बनाकर उस पर अर्द्ध चढ़ाकर स्त्रियाँ चँन्द्रमा की पूजा करती है। यह पूजा सुहागन स्त्रियाँ अपने पति की मंगल कामना के लिये करती हैं।[21] इस प्रकार इन धार्मिक भावनाओं से लोगों का विश्वास बना रहता है। या जैसे की हम बच्चे के जन्म के समय देखते है। कि दीवारों पर शक्ति के देवताओं को अंकित किया जाता है। उनका विश्वास होता है कि वह देवता जच्चा ओर बच्चा दोनों की रक्षा करता है।[22] इसी प्रकार दीपावली पर दीवार पर चित्र बनाये जाते हैं। इसमें मध्य की प्रतिमा श्री लक्ष्मी की होती है तथा सूर्य , चँन्द्रमा , हाथी , कमल , तुलसी, गंगा, यमुना, स्वास्तिक आदि व क्रीड़ा करते हुये व्यक्तियों को दर्शाया जाता है। करवा चौथ के चित्र में सूर्य , चँन्द्र, तुलसी, गंगा, यमुना, दीप, हाथी, मोर, कमल, करवा, दर्पण , कंघी, बिछिया, स्वास्तिक के साथ ही बीच में नारी आकृति को बनाया जाता है। शिव, पार्वती तथा गणेश के चित्रण के साथ ही सीढ़ियों पर चढ़े एक बालक को हाथ में दीपक और चलनी लिये दर्शाया जाता है।

2.2 मनोरंजक भावनाओं पर आधारित लोक चित्रण का स्वरूप

मानव अपनी कल्पना करने के आधार पर वस्तुओं को सुन्दर बनाने में, सजाने में और कई प्रकार के सौन्दर्यकरण के कार्यो में लगा रहता है। मानव को सौन्दर्य ने हमेशा से ही आकर्षिक किया है। वह सौन्दर्य की अनुभूती करता है। दीवारों को विभिन्नों आलेखनों के द्वारा सजाना , घर को मेजपोश , फर्श, चादर व तकिया के गिलाफ आदि से सजाना या इन सब पर जरी गोटे का काम करके सजाना, विभिन्न खिलौने, गुड्डे–गुड़िया आदि बनाना आदि सभी मनोरंजन भावनाओं की परिचायक है। इसके अलावा स्त्रियों का अपने बालों को तरह तरह का बनाना , हाथों में मेहन्दी लगाना, पैरों में महावर लगाना, लीला गोदवाना, सुआटा खेलना , सावन में झूला झूलना और लोकगीत गाना आदि मनोरंजन भावनाओं पर आधारित है।

2.3 व्यक्तिवादी सांस्कृतिक भावनायें और लोक चित्रण

लोककला में व्यक्तिगत और सांस्कृतिक कला का भी एक स्वरूप है। यह सामूहिक भावनाओं पर आधारित होती है। जैसे एक ही जाति में प्रचलित परम्पराओं के रूप जो शादी व्याह, मृत्यु संस्कार आदि के समय चित्रों में अंकित किये जाते है। वे प्रायः एक से ही होते है। जैसे बनजारों की पोशाक, शादी पर आलेपन आदि। यह लोककला अपने अन्दर संस्कृति और अध्ययन की भावना सजायें हुये है। और प्राचीन परम्पराओं को अपरिवर्तित और अपने आप में सजोयें हुये है। लोककला में मनुष्य के मांगल्य की भावना छिपी हुई है सार्वजनिक, सुख, समृद्धि और उन्नति का कामना ही लोककला का आधार है। विवाह जैसे शुभ अवसरों, त्योहारों तथा उत्सवों पर लोककला का विशेष महत्व है।

2.4 व्यायसायिक भावनाओं पर आधारित लोक चित्रण

यह लोककला का वह स्वरूप है जो मानव की व्यावसायिक भावनाओं की सहायता करता है। हाथी दाँत, लाख, लकड़ी, सींग और बर्तनों को सजाना आदि इसके अच्छे उदाहरण है। खिलौनों , गुड़ियों , डलियों एवं मिट्टी की मूर्तियों आदि को विभिन्न रंगो से रंगने की प्रथा प्रचलित है। यह सब लोक चित्रण के ही श्रेष्ठ उदाहरण है।

लोककला हृदय की उपज है यह गतिहीन होते हुये भी प्रत्येक काल में प्रगतिशील रही है। जैसे जैसे मानव जीवन की पारिवारिक जीवन की और व्यक्तिगत जीवन की रूप रेखा बदलती गई। वैसे वैसे लोक कला में भी नये नये उतार चढ़ाव आते गये है।[25] और इसे व्यासायिक भावना की दृष्टि से भी देखा जाने लगा और लोककला में जो कलाकृति है वह जल्दी बने इसलिये उसकी विधि में थोड़ा से परिवर्तन भी हुआ है जैसे मेहन्दी के स्थान पर ठप्पे वाली मेहन्दी और टेटू लगाना आदि। और करवा चौथ, अहोई अष्टमी और दीपावली आदि के कलैण्डर की पूजा करना।

2.4 लोककला के तत्व

लोककला में व्याप्त तत्व , विधान शैली तथा भावों के प्रमाण हमें कम मिलते है। सर्व गुण से सम्पन्न चित्रकला के तत्वों के बारे में तो ग्रन्थों में लिखा है लेकिन लोककला के तत्वों के बारे में कोई ग्रन्थ नहीं है। जबकि जिस प्रकार शास्त्रीय कला बनी है यह तत्व निम्नलिखित है।

1. रेखा
2. धरातल (पोत)

3. रंग (वर्ण)
4. मुद्रा या आकृति या रूप
5. सन्तुलन
6. लय

रेखा

लोककला का मुख्य आकर्षण इसकी रेखायें हैं जो ज्यादातर तीव्र और मोटी होती हैं तथा रेखाओं की कतार ही इसकी पहचान है किसी भी चित्र के आकार का निर्धारण रेखाओं के द्वारा होता है[26] और लोक चित्रकला एक रेखीय कला है जिसमें रेखाओं के प्रयोग की अधिकता होती है। और इसमें एक और महत्वपूर्ण बात है कि लोककला का चित्राँकन अधिकतर स्त्रियों करती है। और जिसमें रेखीय कार्य अधिकतर स्त्रियाँ ही करती है और ठोस कार्य पुरूष करते है। रेखाओं के द्वारा देवी देवताओं एवं धार्मिक प्रतीकों को बनाना जाता है। हिन्दु घरों की नारियां एवं बालिकायें अपनी सरलतम भावनाओं को रेखा चित्रण के रूप में प्रस्तुत करती है। वे फर्श, दीवार आदि को गोबर से लीपकर, गेरू और चावल के लेप में सींक में रूई लगाकर, उसको रेखा चित्रों में प्रस्तुत करती है।[27] इसके अलावा अनेक आलंकरिक आलेखन भी बनाये जाते है। लोक चित्रकला में देवी देवताओं एवं धार्मिक प्रतीकों की आकृति की रेखायें गहरी व स्पष्ट बनायी जाती है।

धरातल

लोककला दो रूपों में पायी जाती है जिनके प्रति पूजा की भावना होती है उन्हें दीवारों पर चित्रित किया जाता है और जिनमें शुभ और कल्याण की भावना होती है उन्हें भूमि में बनाया जाता है[28] चित्र का अंकन जिस भूमि पर होता है, उसको चित्र का धरातल कहते है[29] लोक चित्रकला का मुख्य धरातल भूमि तथा भित्ति है इसके अतिरिक्त इसका चित्राँकन काष्ट, कागज कपड़े और मिट्टी आदि के बर्तनों पर भी किया जाता है। परन्तु प्राचीन काल से ही

लोककला का चित्राँकन मुख्य रूप से भूमि और भित्ति पर किया जाता है भूमि व भित्ति का धरातल मिट्टी या गोबर या चूने से पोत कर तैयार किया जाता है। जिस पर बाद में रेखाँकन या चित्रण किया जाता है भूमि का फर्श यदि पक्का भी हो तो चित्राँकन करने में असुविधा नहीं होती है।

वर्ण (रंग)

लोक चित्रकला के रंग प्रकृति के समीप होते है और प्रकृतिक रूप से तीन रंग है पीला पृथ्वी से प्राप्त, लाल सूर्य से और नीला आसमान ये मुख्यतः प्राप्त होता है। इनका प्रयोग लोक चित्रकला में मान्य है। रज व हल्दी का पीला, सिन्दूर रोली , महावर व गेरू का लाल , नील का नीला, काजल व कोयले से काला, चूने व खड़िया से सफेद रंग प्राप्त होता है जिनके द्वारा लोक चित्रों का भाव व सौन्दर्य प्रकट किया जाता है इन रंगों को बिना किसी मिलाबट के प्रयोग किया जाता है[30] कुछ लोक चित्रों में रंगों का प्रयोग नहीं होता है वे केवल गोबर, मिट्टी से ही निर्मित किये जाते है जैसे जन्म संस्कार में बने चित्र। इसके अतिरिक्त लोकचित्रण की रचना में धातु, चावल, जौ, विभिन्न रंग के फूल, पत्ती, सीप, शंख, बालू, बुरादा, आटा अनाज आदि का प्रयोग होता है।[31]

आकृति

लोक चित्रों की आकृतियां सदैव एक ही मुद्रा में बनायी जाती है। उनके हाथ व पैरों की स्थिति गतिवान चित्रित की जाती है। किन्तु शरीर सामान्यतः स्थिर चित्रित किया जाता है कभी पूरा चेहरा और कभी आधा चेहरा चित्र में बनाया जाता है। कार्य करती हुई आकृति का चित्रण करते समय हाथ, अंगुलियां और शरीर की वास्तवित स्थिति स्पष्ट नहीं होती है। आकृति के स्वरूप को छाया प्रकाश द्वारा स्पष्ट नहीं किया जाता है आकृति सपाट बनी होती है और लोक आकृति अधिकतर प्रतीकात्मक होती है।

सन्तुलित

लोक चित्रकला में भाव और कला उचित सन्तुलन में होती है लोक

चित्रकला में स्वयं कलात्मकता होती है। उसमें सन्तुलित बनाने की आवश्यकता नहीं पड़ी है इसमें हर आकृति व प्रतीक का निश्चित स्थान होता है लेकिन लोककला नाप तोल के बन्धन से मुक्त होती है लोक चित्रकला में एक निश्चित सीमा होती है। जिसके अन्दर निश्चित आकृति का निश्चित स्थान पर संयोजन किया जाता है। मुख्य आकृति को उसके निश्चित स्थान पर बनाने के बाद अन्य आकृति को उसके आस पास बनाया जाता है।

लय

लोक चित्रकला में लय का महत्व है। चित्रों में लय कलाकार की भावनाओं को प्रकट करती है। लय अधिकतर प्रकृति चित्रण में और सामाजिक चित्रण में पायी जाती है लय आकृति की पुनरावृत्ति से बनती है। जिसमें फूल, पत्ती, पशु–पक्षी ज्यामति आकृति आदि कुछ भी बनाया जाता है लोक चित्रण में अल्पना बनाने, चौक बनाने तथा वैवाहिक द्वार आदि बनाने में इस प्रयोग किया जाता है।

लोक चित्रकला की विशेषतायें

1. रेखाओं, आकृतियो तथा बिन्दुओं की पुनरावृत्ति द्वारा लयात्मकता की सृष्टि।
2. रूढ़ रूपों को आलकारिक ढंग से विशेष रूप देने की प्रवृति।
3. महत्व के अनुसार वस्तुओं का आकार।[32]
4. स्वतन्त्र भाव से प्रकाशन।
5. जीवन व धर्म का सम्बन्ध प्रकट करने की क्षमता है।
6. आर्थिक लाभ के लोभ से मुक्त होती है।
7. लोक चित्रकला समाज का दर्पण है।
8. परम्पराओं के ज्ञान को प्रकाशित करती है।
9. विषय सदैव एक ही रहता है।
10. निश्चित रूप व रंग होने पर भी पीढ़ी दर पीढ़ी समाज में हस्तांतरित होती

रहती है।

11. प्रतीकों व चित्रण के सार्थक अर्थ मानव भावनाओं को प्रदर्शित करते है।
12. जाति प्रधान होती है रीति–रिवाजों व जन्मजात संस्कारों के अनुसार चित्रित की जाती है।
13. स्मृति के आधार पर बनाई जाती है पूर्व निश्चित होती है।
14. धर्म प्रचार एवं संस्कृति संरक्षण की भावना रहती है।
15. चित्राँकन से मानसिक सुख मिलता है।
16. यह समाज के सुन्दर और आदर्श रूप को प्रस्तुत करती है।[33]

2.5 लोक चित्रण के कारक

प्रागैतिहासिक काल से ही आदि मानव प्रकृकि के सम्पर्क में रहा। उसने प्रकृति के कई रूपों को देखा जैसे बदलते हुये मौसम, दिन में सूरज का ताप, रात में चन्द्रमा की रोशनी, आँधी तूफान, बिजली की कड़क आदि। जिससे वह प्रकृति का उपासक बन गया और वह उसकी पूजा करने लगा उसने अपने आश्रय स्थल गुफा में उसको चित्रित किया व उसकी पूजा करने लगा जो परम्परा के रूप में आगे बड़ती चली गई और आज यह परम्परा लोककला के रूप में विद्यमान है। यह लोककला विभिन्न कारकों द्वारा आगे बढ़ती चली गई। लोककला के यह कारक निम्नलिखित है।

भय और अन्धविश्वास

आदि मानव प्रकृति उपयोगी स्वरूप एवं प्रकोप से भली प्रकार परिचित थे। जिससे बचने के लिये वह प्रकृति की पूजा करने लगे। जिससे उस समय कई लोक विश्वासें ने जन्म लिया वर्तमान समय के इस वैज्ञानिक और आधुनिक

युग में हमें उसे अन्धविश्वास कहते हैं। लेकिन उस समय वह वहाँ का लोक विश्वास था। वे कृषि युग में भी पृथ्वी, जल, पशु, वृक्ष, वर्षा, नदी इत्यादि को देवता स्परूप पूजते थे देवताओं को प्रसन्न करने हेतु फल, अनाज व मांस इत्यादि भेंट करना सामान्य बात थी पशु बलि भी इसी काल से प्रारम्भ हुई। प्रकृति की शक्ति से वह इतने प्रभावित थे कि वह उसी को सब कुछ मानते थे समस्त बाधाओं को दूर करने का उपाय वे झाड़–फूक, जादू–टोना, तन्त्र–मंत्र और पूजा पाठ को मानते थे।[34] भारत के काफी क्षेत्रों में आज भी लोक कला में यह अन्ध विश्वास व्याप्त है। हमारे समाज का कोई भी संस्कार हो पर्व हो हम उस अन्धविश्वास को मानते है जैसे सोमती अमावस्या पर पूजन, कोहबर कला इत्यादि।

परम्परा

भय और अन्धविश्वास ने लोकविश्वासों को आधार प्रदान किया। घर, समाज, पशु, खेती आदि से सम्बन्धित रीति रिवाज, देवता सम्पूर्ण मानव जाति में माने जाने लगे। लोक देवताओं के कल्याणकारी स्परूप की पूजा करने के लिये जन सामान्य ने प्रत्येक गांव में निश्चित देवतायें बनाये और उनका स्थान बनाया गया प्रत्येक ग्रामवासी उस देवता और उस संस्कार को निभाता था जिससे उसे हर सुखदुख में सहायता मिलती थी। वह ग्रामवासी अपने घर के सदस्यों , बच्चों को और अन्य लोगों को भी यही शिक्षा देते थे कि यह काम करने से ऐसा होगा। जिससे लोगों ने इसे अपनाया और यह परम्परा के रूप में आगे बढ़ती चली गई पीढ़ी दर पीढ़ी लोक इसे अपनाते चले गये। और आज यह हमारे सामने परम्पराओं के रूप में है।

धर्म

लोक चित्रकला को आगे बढ़ाने में धर्म का बहुत महत्वपूर्ण योग्यदान है। वर्ष भर विभिन्न देवी देवताओं की पूजा इच्छा पूर्ती हेतु की जाती है। ऐसा लोक विश्वास है कि शुभ अवसरों पर देवी देवताओं की पूजा करने से कार्य सिद्ध होता है। कुछ यह विश्वास भी है कि आत्मा अमर वह एक जन्म खत्म होने के बाद दूसरा जन्म लेती है जिससे पहले जन्म के बूरे कर्मो का फल दूसरे जन्म में मिलता है। ऊपर आकाश में स्वर्ग और नरक हैं जहाँ कर्मो का फल मिलता है। इसलिये अच्छे काम करने चाहिये भगवान की पूजा करनी चाहिये , गंगा स्नान से पाप धुल जाते है। तीर्थ यात्रा करनी चाहिये आदि यह धार्मिक विश्वास लोक चित्रकला को आगे बढ़ाता है। जैसे करवा चौथ सुहागिने स्त्री अपने सुहाग की रक्षा के लिये इस व्रत को करती है, भाई दौज, देवोत्थान आदि।

संस्कार

कुछ लोक चित्रकला संस्कार के रूप अपनायी जाती है क्योंकि इन लोक चित्रकलाओं ने समाज में अपना स्थायीत्व प्राप्त कर लिया है। और अब यह संस्कार के रूप में अपनायी जाने लगी है। जैसे विवाह संस्कार में मंडप के नीचे चौक बनाना घरों के मुख्य द्वार पर चितैरी बनाना आदि। बच्चे के जन्म के समय बैमाता का पूजन या मानव जीवन के सोलह संस्कार आदि।

विश्वास

लोक चित्रकला को बढ़ाने में लोगों के विश्वास का बहुत महत्व है। लोगों के विश्वास के कारण यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तान्तिरित हो रही है। लोक चित्रकला इसलिये आगे बड़ती चली गयी। लोक चित्रकला ने लोगों को लोक कल्याण, धर्म, आस्था के लिये प्रेरित किया। जिससे यह आगे बड़ती चली

गई। जैसे शुभ अवसरों पर सांतिया बनाना, सुर्या, चँन्द्रमा, पद्म चिन्ह, शुभलाभ आदि लिखा जाता है।

मानसिक सुख या मनोरंजन

कुछ लोककला मानसिक सुख के कारण आगे बड़ती चली आ रही है। मनोरंजन के कारण भी लोग इसे निभाते है। जैसे मेहन्दी लगाना एक मनोरंजक कला है महावर लगाना, गोदना, बालों को तरह तरह से बनाना सुआटा खेलना आदि मनोरंजक कला है।

2.6 लोककला की परम्परा

भारत में लोककला भारतीय संस्कृति की रीढ़ की हड्डी कहलाती है। भारत में लोककला उतनी ही पुरानी है। जितनी पुरानी यहाँ की सभ्यता है। लोककलाओं में अनेक तरह की कलायें समाहित हैं जैसे 1. प्रान्तीय लोकगाथाओं के चित्र 2. देवी देवताओं से सम्बन्धित चित्र, जो विभिन्न शैलियों में चित्रित किये जाते हैं 3. भूमि चित्रण 4. भित्ति पर चित्रण 5. कलश चित्रण 6. आरती के चित्रण 7. दैनिक जीवन प्रयोग में आने वाली वस्तुओं पर अलंकारिक चित्रण एवं छपाई आदि।[35] प्राचीन समय से लेकर आज तक लोककला सदैव धार्मिक परम्पराओं के रूप में विधमान रही है। परन्तु वर्तमान काल में पुत्रजन्म, मरण, नामकरण संस्कार , शादी व्याह , तीज त्यौहार आदि पर मनोवांछित देवात्माओं को विभिन्न आकारों में लोककला के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। विभिन्न जैसे अल्पना कोहबर कला , थापा कला , मधुबनी कला , मेहन्दी कला , गोदना कला, बंगाल की कुम्हार की कला, मेहन्दी, गोदना आदि आज परम्परा के रूप में विद्यमान है। यह कलायें इस प्रकार है।

बंगाल में कुछ अवसरों में अल्पना बनाई जाती है। इसमें सफेद पाउडर से पहले अल्पना का रेखाँकन किया जाता है जिसमें वृत , चतुर्भुज , षटकोण आदि ज्यामितीय ढंग से रेखायें बनाई जाती है। फिर इनमें रंग भरे जाते है। कुछ अल्पना में गोंद भी लगाया जाता है। रंगों को घरों में ही बनाया जाता है। कहीं पर हल्दी कोयला, ईट आदि से सूखे रंग बनाये जाते है।[38]

कोहवर कला

वह घर (कमरा) जहाँ विवाह के पश्चात वर वधु प्रथमवार मिलते है। उस घर को कोहबर कहा जाता है। कोहवर की दीवारों पर चित्रकारी की जाती है जिसे कोहवर लिखना कहते है कोहवर के मुख्य रूप से तीन भाग होते है प्रथम भाग गौसाई घर (जहाँ कुल देवता स्थापित होते है) द्वितीय कोहवर घर जहाँ नव दम्पत्ति प्रथम वार मिलते है तृतीय भाग कोहवर घर का बाहरी भाग होता है इन तीनों जगह पर अलग अलग ढंग से चित्रकारी की जाती है। सभी आकृतियां अर्थपूर्ण होती है। नव दम्पत्ति के जीवन की मंगल कामना , संतति वृद्धि, कुदृष्टि से बचाव के लिये आकृति बनायी जाती है, कोहवर का लेखन घर की या समाज की अनुभवी महिलायें ही करती है। कोहवर के मुख्य चित्र के चारों ओर मछली का बार्डर बनता है मुख्य स्थान में विष्णु के अवतार के साथ दोनों कोनों पर सूर्य, चँन्द्रमा और नीचे यौगिनिया चित्रित होती है।

इसमें तोता, गणेश का वाहन , मूषक , कछुआ , कमल पुरइन का पत्ता, सांप, चार चिड़िया, एक हंस जोड़ा, कमल पुष्प, कमल पत्र एवं पान का पत्ता चित्रित किया जाता है यह प्रथा आज भी प्रचलित है। कहीं कहीं पालकी, घोड़ा, बांस, मोर, हाथी का भी चित्रण होता है।

लोक मानव द्वारा हाथी , घोड़ा और पालकी को वैभव का सूर्य और चँन्द्रमा को दीर्घ जीवन का हंस और मोर को मंगल का पान और कमल को

कला का प्रतीक समझा जाता है।

मछली का चित्राँकन उनके पुत्रवान होने की कामना के लिये किया जाता है। पान के पत्ते की तूलना योनि से एवं कसैली को शिश्न के लिये प्रयोग किया जाता है। कछुये से वर वधु के दीर्धायु होने की तथा तोता ज्ञान एवं विकास का प्रतीक माना गया है। बांस वंश की बढ़ोत्तरी की कामना करके बनाया जाता है कमल भारतीय संस्कृति का प्रतीक है जिस प्रकार कमल का पुष्प कीचड़ में पैदा होने पर उस पर कीचड़ का प्रभाव नहीं पड़ता उसी प्रकार नवदम्पत्ति पर संसार का खराब प्रभाव न पड़े।

कोहवर कला को देखने से यह अनुमान लगाया जाता है कि यह लोककला काफी प्रतीकात्मक है।[38]

मंजुषा लोककला

बिहार के अंग क्षेत्र का मुख्य केन्द्र भगलपुर है यहां की प्रचलित एक स्थानीय लोक चित्रकला शैली 'मँजुषा बाला' के नाम से जानी जाती है। इस चित्र शैली में बंगाल की लोककथा ' बिहुला विषहारी ' या देवी मनसा से सम्बन्धित चित्र बनाये जाते है।

यहाँ एक लोककथा प्रचलित है कि विषहारी नाग पूजा का विरोध चन्दो नामक एक समृद्ध व्यापारी व्यापारी करता था वह कहता था कि नाग पूजा न करें व्यापारी के पुत्र बाला को उसकी सुहागरात के दिन सर्प ने डस लिया। बाला की पत्नि बिहुला ने सर्पदंश उपचार के लिये एक मंजुषा आकार का जलयान बनवाया, जिसपर लहसुन नामक चित्रकार ने चित्रकारी की। बिहुला ने बाला का शव उस मंजुषा जलयान में रखकर स्वयं भी उसमें बैठ गई और जलयान को जल में प्रवाहित किया। बिहुला ने सर्पो की अधिष्ठानी देवी मनसा की पूजा अर्चना की। इससे देवी प्रसन्न होकर बाला का विष सर्पो द्वारा निकवाकर बाला

को उन्होने पुनः जीवन दान दिया तब से इस क्षेत्र में मनसा देवी की पूजा प्रत्येक वर्ष होती है। प्रत्येक सुहागन स्त्री इस व्रत को करती है। और मंजुषा को जल में प्रवाहित करती है। जो कलाकारों द्वारा बनायी जाती है।

मंजूषा मन्दिर के आकार की होती है , जिसमें आठ पाये होते है। इस मन्दिर के चारों ओर रंगीन कागज तथा चित्रों की सजावट होती है। मन्दिर के ऊपर नागफन बनाया जाता है। चन्दों सौदागर के प्रतीक चिन्ह के रूप में अर्धचँन्द्र बनाया जाता है। इसमें चित्रित मानव आकृति का मुख एक तरफ से दिखता है। जिसमें एक लम्बी आँख जो चेहरे से बाहर निकली होती है। बाल घुंघराले फूलों से सजे हुये दर्शाये जाते है। पुरूष आकृति की मूंछे लम्बी एवं घुमावदार होती है।

मंजुषा पर अंकित अन्य आकृतियों में चाँद, सूरज, मछली, चँदन, बाँस, बगीचा , सर्प , नेवला आदि भी चित्रित किये जाते है। यह सारी कृति लाल, गुलाबी, पीला, हरा, और काले रंग से जलरंग में बनायी जाती है। सर्पविष को दर्शाने के लिये मानव आकृति के बीच में काली रेखा अंकित की जाती है।[39]

मधुवनी चित्रकला

भारत की लोककला में मधुवनी चित्रकला अति प्राचीन चित्रकला है इस कला के चित्रों में रामायण युग से राम और सीता के जीवन में घटित घटनाओं का चित्रण प्रमुख होता है। इसमें अधिक से अधिक चटक रंगों का प्रयोग होता है इस शैली में मानव आकृति शारीरिक अनुपार के अनुसार बनायी जाती है। यह कला मिथिला की लोककला के रूप में आरम्भ हुई जब रामचन्द्रजी के स्वागत में मिथिला के आँगन, दालान, चौबारे और घर नाना प्रकार के मोहक प्रतीक चिन्हों से चित्रित किये थे। इस कला के चित्रकार मधुबनी क्षेत्र में रहे है। जिसके कारण इस कला का नाम मधुबनी चित्रकला के नाम से विख्यात हुआ।

मिथिला में जितने भी प्रकार के कर्मकाण्ड होते है। सभी में किसी न किसी रूप में यह चित्र प्रतीक रूप में विधमान रहता है।

एक ही प्रकार के संस्कार के लिये स्त्री एवं पुरूष के अलग–अलग तरह के प्रतीक चिन्ह बनाये जाते है। इसमें एक तोता, एक मछली, आम, तलवार, स्त्री एवं पुरूष का चित्रण प्रतीक रूप में होता है आरम्भ में इस कला का चित्रण केवल दीवार या भूमि पर किया जाता था और अब इसका चित्रण कागज, कपड़ा एवं लकड़ी पर होने लगा है। अब इसे पुरूष भी बनाते है।[40]

थापा कला

यह काफी प्राचीन कला है जो लोककला में मान्यता प्राप्त है हाथ की अंगुलियों और हथेली के सहयोग से थापा मार कर जो चित्र अंकित किया जाता है उसे थापा कला कहते हैं विवाह में जो मँडप तैयार किया जाता है उसके बाँसों को गाडने से पहले उन पर उस लड़की की पाँचों अँगुलियों का थापा लगवाया जाता है जिसका विवाह होने वाला होता है कुछ स्थानों में मँण्डप गाड़ने वाले के पीठ पर स्त्रियाँ अपने पाँचों अँगुलियों को रंग में डुबोकर छापा लगाती है यह रंग अधिकतर हल्दी का होता है, चावल के आटे को घोल कर भी उससे थापा लगाया जाता है।

भोजपुर में कार्तिक मास में अविवाहित लड़कियां दीवार में पिड़िया लगाते समय उसके आसपास के दीवार पर थापा भी लगाती है। मिट्टी के जिन कलशों में मिष्ठान भर कर लड़की का ससुराल भेजा जाता है। उस पर भी आकर्षण ढंग से थापा चित्र बनाया जाता है दीपावली के अवसर पर स्थानीय स्त्रियां लक्ष्मी को घर में प्रवेश के लिये मार्ग बनाती है। यह मार्ग लाल और सफेद रंगों को

मिलाकर मुट्ठी का थापा लगा कर तैयार किया जाता है जो बड़ा ही कलात्मक होता है।

वर वधु के आने पर मुख्य द्वार की पारम्परिक रस्मों के बाद वर वधु हल्दी व पानी के घोल में हाथ भिगोकर भित्ति पर "हाथे" या "थापे" लगाते है।[41]

साँझी

उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब तथा राजस्थान में गोबर की पतली–पतली बत्ती या मेढ़ से दीवार पर साँझी बनाई जाती है। इसके ऊपर सोने, चाँदी के पन्ने से साँझी (देवी) के गहने बनाये जाते है। पन्नों को गहनों पर काट कर चिपकाया जाता है यह नवरात्रि की देवी का रूप है। जिसकी पूजा परम्परागत ढंग से आज भी प्रचलित है इसके परिवार का कल्याण होता है ऐसा विश्वास है चौक पूरने से पूर्व दैविक शक्तियों का आवाहन किया जाता है।[42]

अहोई

यह पुत्र प्राप्ति की कामना तथा पुत्र दीर्घायु हो इस कामना से व्रत किया जाता। यह व्रत 'बैमाता' (भाग्य लिखने वाली देवी) का होता है जिसमें माँ अपने पुत्र के लिये निर्जला व्रत रखती है चँन्द्रमा को अर्द्ध देकर यह व्रत तोड़ा जाता है।

अहोई अष्टमी का भित्ति चित्र रंगीन बनता है। जिसे हल्दी, महावर नील, गेरू, सिन्दूर, रज आदि से बनाया जाता है। इसमें अहोई माता की मातृत्व भाव का चित्रण किया जाता है। देवी का चित्रण स्त्री रूप में किया जाता है। उनका शरीर या लहंगा आयताकार या चौकोर बनाता है। उसमें कथा के अनुसार चित्रण किया जाता है इसमें साहूकार, साहूकार की पत्नि उसके सात पुत्र, सात

पुत्र वधुये, धन धान्य से भरे पात्र, पशुधन चित्रित किये जाते है। जो समुद्रशाली परिवार के प्रतीक होते है। चौकोर आकृति के बाहर गंगा जमुना, तुलसी घरा, देवरानी–जेठानी, सूरज – चँन्दा आदि चित्रित किये जाते है। कुछ घरों में यह सारे चित्र सूर्य चँन्द्रमा को छोड़कर देवी के शरीर की आकृति चौखाने के भीतर ही चित्रित किये जाते है।[43]

करवा चौथ

सभी हिन्दू जाति की सुहागिन स्त्रियों के लिये यह सुहाग रक्षा का महत्वपूर्ण व्रत है। जिसे रात में चँन्द्रमा को अर्द्ध देकर तोड़ा जाता है। इसमें अहपन से चँन्द्र बनाकर उस पर अर्द्ध दिया जाता है अहपन बनाने से पूर्व दीवार को लीपकर और तोरई के पत्तों से घिसकर समतल और भूरे हरे रंग का बना लिया जाता तब आलेखन किया जाता है[44] या कहीं कही दीवार पर गाय के गोबर से चौरस लीपते है चावल को पीस कर उसके घोल से लकड़ी के अग्र भाग में रूई लपेटकर भित्ति चित्रण किया जाता है।

यह चित्रण करने में स्त्रियों को बहुत समय लगता है इसमें मध्य में पार्वती का स्वरूप बनाया जाता है। उनका सीढ़ीदार लंहगा बनाया जाता है दाँये बाँये सूरज चँन्दा, श्री गणेश, कार्तिकेय, शिवपार्वती, राधाकृष्ण, गंगा जमुना, देवरानी जेठानी, इमली के पेड़ पर से चलनी से दिया दिखाता है भाई, सीढ़ी पर चड़ी पूजा करती बहन , श्रंगार , सामग्री, सर्प, धोबी–धोबन और कुम्हारिन–कुम्हार अपने बच्चों सहित, करवा आदि अनेक वस्तुयें चित्रित की जाती है, सम्पूर्ण चित्र का आधार कथात्मक होता है। चित्रण काल्पनिक तथा पारम्परिक होता है।[45]

बंगाल की पटुआ कला

अन्य स्थानों की तरह बंगाल की लोककला भी काफी समय से चली आ रही है। यहाँ के गाँवों के कुम्हार , बुनकर , मूर्तीकार , खिलौना बनाने वाले, गुड़िया बनाने वाले, पटुआ से सामान बनाने बाले अपनी कृति में पटु थे। बंगाल की लोककलाओं के अन्तर्गत चित्र विधा को पट कहा जाता है। कालीघाट के पट बनाने वाले पटुवे कहलाते है। इनके रंग सजीव तथा ताजे होते उनकी डिजाइनें भी सरल होती है। जिनमें देवी–देवताओं तथा चारों तरफ के जीव जन्तु और पशु पक्षियों का चित्रण होता है।

मिट्टी के घड़ों तथा उनके ढक्कनों पर की चित्रकारी भी यहाँ की लोककला का एक अंग है इसके लिये सफेद, पीला और लाल रंग का मुख्य रूप से प्रयोग होता है। इन चित्रों में स्त्री, पुरूष, हाँथी, पक्षी, तरह–तरह के फूल, पत्ते, बेल, लक्ष्मी के चरन, कमल की कलियां और खिले हुये कमल बनाये जाते है।[46]

महाराष्ट्र की फड़ चित्रकला

राजस्थान के जोधपुर और भीलवाड़ा जिले के आसपास बसे गाँवों में रहने वाली भोपा जनजाति के लोग सदियों से इस लोक चित्रकला का चित्रण कर रहे हैं यह लोककला गायन और चित्रकला से जुड़ी हुई है जिसमें राजाओं और लोककथाओं से सम्बन्धित चित्रण होता है इसके सम्बन्ध में एक कथा प्रचलित है। कथा के अनुसार पुराने समय में अजमाल नामक एक संतानहीन राजा था। संतान न होने से वह बहुत दुखी रहता था उसने कई देवी देवताओं की पूजा आराधना की किन्तु उसे निराशा हाथ लगी जिससे वह अपने घर से दूर निकला रास्ते में उसे समुद्र दिखाई दिया उसने उस समुद्र में छलांग लगा दी। पानी के भीतर उसे भगवान विष्णु की मूर्ति मिली। उसे देखकर भगवान विष्णु की मूर्ति जीवित हो उठी। भगवान विष्णु ने राजा को वचन दिया कि मैं

तुम्हारे घर में पुत्र के रूप में जन्म लूंगा। एक वर्ष बाद राजा के घर में भगवान रामदेव का जन्म हुआ। उसमें बचपन से ही अद्‌भुत शक्तियां थीं। बताया जाता है कि रामदेव का विवाह एक विकलांग लड़की से तय हुआ लेकिन उनके चमत्कार से वह लड़की मण्डप में उठ खड़ी हुई और अपने पैरों पर चलकर फेरे लिये। आज भी प्रतिवर्ष महाराष्ट्र में रामदेव जी का मेला लगता है जिसमें फड़ चित्र बनते हैं। इन चित्रों को कपड़ों पर बनाया जाता है जो पाँच मीटर लम्बा और डेढ़ मीटर चौड़ा होता है। सबसे पहले कपड़े पर कलफ चढ़ाया जाता है जब कलफ सूख जाता है तब इस पर पत्थर घिसकर इसे चिकना बनाया जाता है फिर इसे लकड़ी के फ्रेम पर चढ़ाया जाता है। इसमें राजस्थान के लोक देवताओं , राजाओं के चित्र अंकित किये जाते हैं। चित्रों में आमतौर पर प्राकृतिक चटक रंग लाल, नीला, पीला, हरा और काले रंगों का प्रयोग किया जाता है।

पुराने समय में यह पेन्टिंग सिर्फ कपड़ों पर बनायी जाती थी। अब इसे हैंड मेड कागज पर भी बनाया जाता है।[47]

महाराष्ट्र की वर्ली चित्रकला

यह महाराष्ट्र की सुप्रसिद्ध लोककला है जो महाराष्ट्र की परम्पराओं और रीति रिवाजों से जुड़ी हुई है। इस कला में कृषक परिवार की स्त्रियाँ अपने घर के मुख्य द्वार और घर की बाहरी दीवारों को मिट्‌टी और गोबर से लीपकर उस पर कोयले के पावडर में बरगद या पीपल के पेड़ के तने से निकाले गये गोंद को मिलाकर पहले काले रंग की पृष्ठभूमि तैयार करती हैं। गोंद का इस्तेमाल रंग को पक्का करने के लिये किया जाता है फिर उस पर गेरू और चावल के आटे से सुन्दर आकृतियों को बनाने के लिये बाँस से बनी बारीक कुची का इस्तेमाल किया जाता है। समय के साथ इस कला में परिवर्तन आया है। अब यह

चित्रकला कागज और केनवास पर भी बनने लगी है। प्राकृतिक रंगों का स्थान कृत्रिम रंगों ने ले लिया है।[48]

चितौरी कला

चितेरी मुक्त हस्त चित्रण है। इसके खिलते हुये रंग आकर्षक होते हैं। चितेरी कला में प्रायः दो प्रकार के चित्र मिलते हैं। प्रथम दीपावली पूजन के लिये बनाये जाने वाले चित्र पट इन्हें पूना कहते हैं यह कागज के पन्ने पर बने होते हैं। उन पर गणेश लक्ष्मी अथवा बुन्देली चित्रकला शैली में अंकन होता है। द्वितीय प्रकार के चित्र विवाह, जन्म उत्सव अथवा अन्य मांगलिक अवसरों पर घर की बाहरी दीवार पर बनते हैं। इसमें गणेश जी, लक्ष्मी जी, घटधारिणी महिलायें, वर–वधू , अश्वरोही , गजरोही , कलश, सातिया, मयूर, शंख, कमल आदि का चित्राँकन होता है। इन कलाकारों को चितेरे कहा जाता है।[49]

चितेरे बनाने में चूने के रंगों का प्रयोग होता है। रंगों को पक्का करने के लिये बबूल की गोंद या सरेस , पानी में पकाकर तैयार कर मिलाते हैं। प्रमुखतः यह रंग गुलाबी, नीला, पीला, लाल, नारंगी होता है। रंगों का प्रयोग चित्र के अनुसार किया जाता है। चित्र उभारने के लिये काले रंग की रेखाओं का प्रयोग होता है। मुख्य रंगों को लगाना टिपाई कहलाता है।

काली घाट के पट चित्र

कलकत्ता के काली मन्दिर के निकट काली घाट के बाजार में बिकने के कारण इन चित्रों का नाम कालीघाट के पट चित्र पड़ा ये प्रायः टाट , कपड़ा , कागज या कपड़े पर चिपके कागज तथा केनवास पर बनाये जाते है। इसमें प्रायः धार्मिक कथाओं , देवी देवताओं की छवियों अथवा सामाजिक विषयों का

अंकन होता है। खनिज रंगों से टेम्परा विधि में चित्रण करके तूलिका द्वारा वाहय रेखाँकन कर दिया जाता है।

पट चित्र की परम्परागत विधि में टाट पर गोबर मिट्टी का छना हुआ गाढ़ा लेप करके सुखा लिया जाता है। फिर उसे घोटकर चिकना कर लेते है उसके बाद उसपर खनिज रंगों से तूलिका द्वारा आकृति रचना करते है।

मेहन्दी कला

यह कला इतनी पुरानी है जितनी पुरानी मानव सभ्यता। यह कला सम्पूर्ण भारत वर्ष में प्रचलित है। कुछ लोगों का कहना है कि इस कला का आरम्भ राजस्थान में हुआ। परन्तु यह सत्य नहीं है। यह बात अवश्य है कि इस कला को सुन्दर आकर्षण डिजाइन में लगाने का श्रेय राजस्थान को है।

मेहन्दी के पौधे को हरा भरा रखने के लिये अधिक पानी की आवश्यकता होती है और हजारों वर्ष पहले राजस्थान में आज जैसा पानी नहीं था हर जगह बालू ही बालू था और पानी की कमी थी तो मेहन्दी के पौधों को हरा भरा नहीं रखा जा सकता इसलिये यह कला राजस्थान में से आरम्भ होना सम्भव नहीं है। इतना जरूर है की आलेखन और सरंचना में इसको प्रसिद्ध करने में राजस्थान का योगदान जरूर है।

मेहन्दी लगाने के लिये सर्वप्रथम मेहन्दी के पत्तों को सील पर खूव महीन पीसा जाता है। फिर उसमें भिण्डी का रस और बत्तासे मिलाये जाते है। उसके बाद इसे सींक से लगाया जाता है। रंग को पक्का करने के लिये लगी हुई मेहन्दी में सरसों का तेल लगाया जाता है। परन्तु अब पिसी पिसाई मेहन्दी मिलने लगी है। जिसे लगाने से पहले मेहन्दी पाउडर को मलमल के कपड़े से छाना जाता है। जिससें मोटे पदार्थ निकल जाये छनी हुर्अ मेहन्दी को कटोरी में पानी में घोलकर 2 घण्टे के लिये छोड़ दिया जाता है जिससे इसकी लुगदी बन

जाये। मेहन्दी शीघ्र न छूटे इस लिये इसमें नींबू का रस और चीनी के घोल को समय पर मेहन्दी लगे स्थान पर रूई से लगाते है। मेहन्दी को कोन सा सींक से लगाते है। मेहन्दी को लगाने के बाद चार पांच घण्टे रहने देते है उसके बाद छुटा कर 10–12 घण्टे हाथ नहीं धोते है।

लीला गुदवाना

लीला गुदवाने की प्रथा बहुत पुरानी है। इसमें शरीर पर नीले रंग से खाल में किसी यन्त्र द्वारा चित्रण करवाया जाता है जो जीवन पर्यन्त बना रहता है। इसमं मनोरंजन के साथ–साथ व्यक्तिगत रूप में अपने इष्ट मित्रों की याद बनाये रखने की भावना छिपी रहती है।

भोजपुर में प्रत्येक स्त्री को विवाह के पश्चात गोदना गुदवाना आवश्यक समझा जाता है। स्त्रियों में यह धारणा प्रचलित है कि ऐसा नहीं करने पर अगले जन्म में हिन्दू परिवार में जन्म नहीं होता। इसलिये गुदवाना स्त्रियों के लिये आवश्यक अंग बन गया है। गाँव देहात में आज भी गोदना सुइयों से चुभाकर कर किया जाता है। जो बड़ा ही कष्टदायक होता है। गोदने वाली स्त्रियां प्रायः नेटुवा जाति की होती है। वह धतुरे के दूध में काजल मिलाकर काला रंग तैयार करती है। वह उस रंग में अपनी सुई को डुबोकर महिलाओं की कलाई में जहाँ वह गुदवाना चाहती है अपनी तीखी सुई से गोदती है। स्त्रियों के कष्ट को दूर करने के लिये वह गाना गाती है। इस प्रकार गोदने में कई आकृति बनाई जाती है। जैसे वर्गाकार आयताकार, गोल, त्रिभुज, फूलपत्ती, जीव–जन्तु, पक्षी, राम, ऊँ, स्त्रियाँ अपने शरीर पर गहने के चित्र भी गुदवाती है। वर्तमान में गुदवाना युवा पीढ़ी का आधुनिक परिचलन बन गया है। वह जगह जगह नील गुदवाते हैं। समय के साथ गुदवाने के डिजायन भी बदल गये हैं और गुदवाने की नई नई मशीनें भी आ गयी हैं।

महावर लगाना

मांगलिक अवसर पर पूरे भारतवर्ष में स्त्रियाँ अपने पैरों में महावर लगाती है। महावर पांव के पंजो के बीच, ऊपरी भाग में चारों ओर लगाया जाता है। बीच में कभी कभी स्वास्तिक या फूल बनाया जाता है। जिससें उसकी खूबसूरती में चार चाँद लग जाते है। विवाह एवं विशेष पूजा के अवसर पर स्त्रियों के साथ उनके पति के पांव में भी महावर लगायी जाती है। महावर लगाने की प्रथा काफी प्राचीन है जिसे लोककला में स्थान मिला है।

विवाह में लोककला

विवाह जैसे शुभ अवसरों त्योहारों तथा उत्सवों पर लोककला का विशेष महत्व है। तोरण द्वारे पर तथा प्रवेश द्वार पर अलंकृत कुम्भो का रखना और उसमें फूल पत्ते तथा नारियल रखना, बन्धनवार बांधना या बन्दर द्वारी चित्रित करना, नव विवाहित वधुओं के कपोलो पर रचना करना इत्यादि में लोककला की मंगलमयी तथा सुखद भावना के दर्शन होते है।

मिट्टी की कला

मिट्टी के घड़ों तथा उनके ढक्कनों पर चित्रकारी भी लोककला का एक अंग है। इसमें मुख्य रूप से सफेद पीला और लाल रंग का प्रयोग होता है। सफेद रंग पीढ़ी से और पीला रंग हल्दी से लिया जाता है इन चित्रों में स्त्री, पुरूष, हाथी, पक्षी, तरह तरह के फूल, पत्ते, बेल लक्ष्मी चरण, कमल की कलियां और खिले हुये कमल बनाये जाते है।

मिट्टी की लोककला में सबसे ज्यादा सहयोग कुम्हार का है। जो प्रथम कलाकार कहलाता है। जो मिट्टी की परीक्षा कर उसे पानी से सानकर अपने हाथों से मिट्टी के बर्तन बनाता है। उससे तरह तरह के पात्र और खिलौने बनाकर उसमें आकर्षण और सुन्दर रंग भरता है।

पशु श्रँगार

लोककला के अन्तर्गत पशुओं का श्रँगार भी किया जाता है। जिसमें विभिन्न तीज त्यौहारों पर पशुओं का श्रँगार किया जाता है जैसे कि हिन्दुओं के त्यौहार गोधन पर गाय बैलों के सीगों को विभिन्न रंगों से रंगा जाता है। तथा उनके शरीर पर रंगों से विभिन्न प्रकार की आकृति बनायी जाती है। तथा उनका पूजन किया जाता है इसी प्रकार होली पर भी पशु श्रँगार किया जाता है। उनके शरीर पर रंगों से आकृति बनायी जाती है। गले में छोटी–छोटी घण्टीयों की माला व माथे पर ऊन से बने फूलों की लड़ पहनायी जाती है। उनके खुरो को सजाया जाता है। इसी प्रकार शिवरात्रि के दिन हाथी का पूजन होता है जिसमें हाथी को चन्दन का टीका लगाकर उसे सुन्दर आकर्षण वस्त्र से सजाकर श्रँगार किया जाता है।

लोक जीवन के सोलह संस्कार

लोककला मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक सम्बन्धित रहती है जो मनुष्य के साथ जीवन भर सोलह संस्कार के रूप में सम्बन्धित रहती है। यह संस्कार निम्नलिखित है–

1. गर्भाधान संस्कार
2. पुंसवन संस्कार
3. सीमन्तोन्यन संस्कार
4. जातकर्म संस्कार

5. नामकरण संस्कार
6. निष्क्रमण संस्कार
7. अन्नप्राशन संस्कार
8. चूड़ाकर्म संस्कार
9. वेदारम्भ संस्कार
10. उपनयन संस्कार
11. कर्णवेधन संस्कार
12. समापवर्तन संस्कार
13. विवाह संस्कार
14. वान प्रस्थ संस्कार
15. सन्यास संस्कार
16. अन्त्येष्टि संस्कार

हमारे सामाजिक जीवन में यह सोलह संस्कार विशेष है। किन्तु समय परिवर्तन के कारण हमारे जीवन में आये बदलाव से परम्परा के रूप में विधमान इन संस्कारों में कई संस्कार अब समाप्त हो गये है, केवल कुछ ही संस्कार शेष बचे है। जो मुख्यतः जन्म संस्कार, विवाह संस्कार और अन्त्येष्टि संस्कार है। तथा इन संस्कार के रूप में हमारी लोककला भी आज तक विधमान है। यह संस्कार मुख्यतः उच्चवर्ण जाति या बिल्कुल निम्न वर्ण जाति में ही मनाये जाते है।

जन्म संस्कार में बच्चे के जन्म के छटवें दिन घर में पूजन और हवन कराया जाता है बच्चे की बुआ घर की भित्ति के ऊपर गोबर से स्वास्तिक बनाती है व उसके ऊपर गेंहू की बाली चिपकाती है घर को गोबर से लीपा जाता है तथा आटे से चौक या अल्पना बनायी जाती है बच्चे को नये वस्त्र पहनाये जाते है।

प्राचीन समय में बच्चे के जन्म से सम्बन्धित कई संस्कार होते थे जिसमें बच्चे से सम्बन्धित मुख्य कार्य होते थे जैसे कि बच्चे को किस दिन सूर्य दिखाना है, किस दिन चन्द्रमा दिखाना है, कब बच्चे को अन्न खिलाना है। कर्ण भेदन करना है। कब उसका जेनऊ संस्कार होगा, कब उसका मुण्डन होगा तथा कब से उसकी शिक्षा होगी आदि सभी से सम्बन्धित संस्कार थे किन्तु वर्तमान में मुण्डन संस्कार , जनेऊ संस्कार तथा नामकरण संस्कार आदि तो आज भी विधमान है जो प्रायः उच्च जाति अब भी मनाये जाते है। इन संस्कारों का निर्वाह

घर के बड़े बुजुर्ग करते है जबकि निम्न जाति में मुण्डन संस्कारों को महव्त दिया जाता है।

जन्म संस्कार उपरान्त बच्चे जब बड़े हो जाते है तो विवाह संस्कार होता है जिसमें विभिन्न प्रकार के लोक चित्रण होते है। जैसे कि कोहवार, थापाकला, मेहन्दी कला तथा चितेरी कला आदि इनमें प्रायः प्राकृतिक रंगों द्वारा चित्रांकन होता है।

विवाह संस्कार के बाद मृत्यु संस्कार आता है जो मनुष्य की मृत्यु के उपरान्त होता है। मृत्यु के उपरान्त घर में तीन दिन तक अन्न नहीं बनाया जाता है घर में सिर्फ दीपक जलता है। तीन दिन के उपरान्त घर को गोबर से लीपा जाता व घर की सफाई की जाती है। उसके बाद घर में चौक बनाया जाता है जोकि आटे या चूने से बनाया जाता है।

2.7 लोककला की तकनीक

लोक चित्र अनेक प्रकार से बनाये जाते है। किन्तु वर्णन की सुविधा से उन्हे तीन भागों में विभाजित करेगें।

1. भूमि चित्रण की विधि
2. भित्ति पर चित्रण की विधि
3. अन्य वस्तुओं पर चित्रण की विधि[50]

1. भूमि चित्रण की विधिः–

भूमि चित्रण में गोबर व मिट्टी का प्रयोग विशेष रूप से किया जाता है। भूमि चित्रण में प्रत्येक शुभ अवसर पर चौक पूरना अनिवार्य होता है। सभी परिवारों में पारम्परिक भूमि चित्रण करना अनिवार्य होता है। भूमि चित्रण के लिये सबसे पहले गोबर और पीली या लाल मिट्टी को मिलाते है फिर उसमें

थोड़ा सा पानी मिलाते है। जिससे लीपने में आसानी रहे। फिर इस मिश्रण से चौक को लीपा जाता है। यह चौक कई आकारों में होता है। जैसे चतुर्भज, छः या सात कोण वाला, फूलदार चौक, वर्गाकार या गोलाकार आदि चौक, वर्गाकार या गोलाकार आदि चौक पर प्रायः शुभ चिन्हों को बनाया जाता है। जैसे कलश स्वास्तिक। चौक बनाने के लिये चुटकी का प्रयोग किया जाता है। जोकि तर्जनी अंगुली और अंगुठे को जोड़कर बनायी जाती है। इस चुटकी से रेखा सरलता से खीचीं जाती है। यह मुक्त हस्त कला है। जिसे महिलायें अपनी स्मृति के आधार पर बनाती है। कुछ चौक पारम्परिक होते है जिनमें फेर बदल की सम्भावना नहीं रहती। भूमि चित्रण के लिये पारम्परिक रूप से गेरू, चूने या आटे की आवश्यकता होती है लेकिन अब भूमि चित्रण के बनाने के साधनों में फूल पत्ती, रंगोली के रंग, लकड़ी का बुरादा, बजरी आदि का प्रयोग भी होने लगा है। भूमि चित्रण प्रायः पारिवारिक और सामाजिक नियमानुसार ही बनाया जाता है। यह चित्रण प्रायः गोधन, भाई दोज, होली, दीवाली, रक्षाबन्धन, दशहरा आदि में किया जाता है।

2. भित्ति पर लोककला का चित्रण:-

लोक चित्रकला में भित्ति पर चित्रण अधिक होता है क्योंकि भूमि चित्रण दीर्धकाल तक स्थाई नहीं रह पाता है। और हमारे मन में यह भाव भी रहता है कि कहीं धार्मिक चित्रण पर हमारे पैर न पड़ जाये जबकि भित्ति पर चित्रण हमारे परिवार में काफी समय तक स्थाई बने रहते है। और उनमें स्वतंत्रता भी रहती है। इसमें प्रयुक्त सामग्री भी अल्प स्थाई व दीर्ध स्थाई दोनों तरह की होती है भित्ति पर चित्र अधिक कलात्मक होते है।

भित्ति पर लोककला बनाने के लिये प्रायः दीवार को गोबर या गेरू या चुने किसी से भी लीप या पोत दिया जाता है उसके बाद चित्रण किया जाता है

दीवार को यदि गोबर से लीपा जाता है तो उस पर गोबर या फूल पत्ती या जौ और धान से चित्रण किया जाता है। यदि दीवार या भित्ति को गेरू से पोता जाता है तो उस पर चुने का चित्रण किया जाता है। इसके अतिरिक्त चुने के ही रंगों का प्रयोग किया जाता है। यदि चित्रण पक्का करना हो तो उसमें बबूल की गोंद भी मिलाई जाती है चित्र का उभारने के लिये काले रंग की वाहय रेखा बनाई जाती है। रंगों को ब्रश से लगाया जाता है। यदि भित्ति को चूने से पोता जाता है तब अधिकतर गेरू से चित्रण किया जाता है जिसमें सींक में रूई को लगाकर गेंरू के घोल से चित्रण कार्य किया जाता है। व चित्रकारी की जाती है इसके अतिरिक्त चूने से पुती दीवार पर रंगों से भी चित्रण कार्य किया जाता है।

भित्ति चित्रण दीपावली, करवा चौथ, विवाह, चितैरी कला, थापाकला, कोहावर कला आदि में किया जाता है।

3. अन्य वस्तुओं पर चित्रण की विधिः-

भूमि और भित्ति पर बने लोक आकार के अतिरिक्त अन्य माध्यमों से भी चित्रण किया जाता है। इन माध्यम में मिट्टी के वर्तन , कागज, पटा, शरीर, कपड़े आदि है। यह चित्रण प्रायः संस्कार और परम्परा के अनुसार होता है। जैसे मिट्टी के बर्तनों पर लोक चित्रण में कुम्हार चूने और गेरू या काले रंग से चित्रण करता है। जोकि रेखीय और आलँकारिक होते है। अनाज के कुठले पर भी चित्रकारी की जाती है। जोकि गोबर और हल्दी से की जाती है इस चित्रकारी में प्रायः शुभ चिन्ह बनाये जाते है। ऋषि पंचमी के दिन पान के ताजे हरे पत्ते पर चित्र बनाया जाता है। जिसमें सप्त ऋषियों के प्रतीकात्मक रूप में हल्दी या चन्दन से चित्रित किया जाता है। इसी प्रकार पूर्णिमा को मटकी को चूने से पोतकर उस पर हल्दी या अन्य रंग से चित्रण किया जाता है। इसके

अतिरिक्त गोदना अंग – रेखाँकन है जिसमें सुई से या काँटे से गोदा जाता है इसमें आक के दूध में काजल मिलाकर कर फिर से उसे सुई से गोदा जाता है। इसके अतिरिक्त लोक चित्रण कागज पर भी किया जाता है। जैसे कि बंगाल के पट चित्र और साँझी वगहरा आदि। कुछ लोक चित्रण कपड़ों पर भी होता है जैसे पट चित्र या पटुआ कला में चित्रण कपड़ों पर भी किया जाता है। इस प्रकार विभिन्न विधियों द्वारा लोककला का चित्रण किया जाता है।

2.8 लोककला में अंकित (मोटिफ) प्रतीक चिन्ह

प्रत्येक लोक चित्र, धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, नैतिक ताा पारत्परिक भावों का दर्शनीय रूप है। जिसमें जन्म से लेकर मरण तक से सम्बन्धित संस्कार होते है। लोककला में माध्यम के रूप में दैनिक जीवन के वस्तुये प्रयोग में होती है। जिसमें गोबर , मिट्टी, गेरू, चूना , हल्दी, चावल व फूल पत्तियां आदि है। लोक चित्रण अधिकतर प्रतीकात्मक होता है तथा लोककला में अनेक प्रतीकों का प्रयोग होता है। जिनका अर्थ धार्मिक व आध्यात्मिक तो है ही साथ ही उनमें सम–सामयिकता भी है। तथा प्रतीको के माध्यम से ही लोक चित्रकला के आत्मिक सौन्दर्य के दर्शन होते है। यह प्रतीक निम्नलिखित है :

गणेश

प्रतीकों में प्रमुख मंगलकारी विघ्न विनाशक गणेश है। घर के बाहर द्वार पर या किसी भी मंगल कार्य , विवाह या तीज त्यौहार आदि में गणेश का चित्राँकन सर्वप्रथम किया जाता है क्योंकि आपको देवताओं द्वारा सर्वप्रथम पूजे जाने का वरदान प्राप्त है। तथा सर्वप्रथम गणेशजी का चित्राँकन करने में यह भाव भी उत्पन्न होता है कि शुभ कार्य बिना किसी विघ्न बाधा के सम्पन्न हो।

कलश

यह सम्पन्नता का प्रतीक माना जाता है धार्मिक पूजा में पूर्णघट का चित्राँकन त्रिदैव (ब्रहमा, विष्णु, महेश) का प्रतीक माना जाता है, कलश पर रखे आम के पत्ते व फूल जीवन के उपभोग व आनन्द का प्रतीक है उस पर रखा नारियल गणेश का स्वरूप होता है।

गज

गज ऐश्वर्य का प्रतीक माना जाता है। विष्णु पुराण के अनुसार समुद्र मंथन के समय निकले हुये चौदह रत्नों में से एक गज भी था।

अश्व

अश्व शक्ति का प्रतीक होता है तथा यह गतिशीलता का भी घोतक है।

कमल

कमल देवी लक्ष्मी के आसन रूप में चित्रित किया जाता है। चित्राँकन में लक्ष्मी का चित्र यदि नहीं हो तो केवल कमल का फूल भी देवी लक्ष्मी का स्वरूप होता है।[51]

स्वास्तिक

यह भारतीय संस्कृति का सबसे पवित्र प्रतीक चिन्ह है। घर के द्वार पर, भूमि पर या भित्ति पर बना स्वास्तिक धन , यश एवं दीर्धायु का प्रतीक माना जाता हैं तथा स्वास्तिक का आकार धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को परिभाषित करता है। भारतीय कला में वासुदेव शरण अग्रवाल के कथानुसार यह स्वास्तिक चार दिशाओं में व्याप्त विश्व मण्डल का प्रतीक है जिसमें चतुर्भज सूर्य का प्रतीक है व अन्य रेखायें चारों दिशाओं का प्रतीक है।[52]

शंख

यह पापनाशक, पवित्रता एवं ज्ञान का प्रतीक है।

सूर्य व चन्द्रमा

सूर्य ब्रहमा प्रतीक है। तथा सूर्य दिन का भी प्रतीक है जो संसार का ब्राहय प्रकाश है जो तेज प्रदान करता है तथा जीवन रक्षक है चन्द्रमा रात का प्रतीक है जो मन का प्रकाश है और शीतलता प्रदान करता है।

फूल–पत्ति

चित्रों के चारों या चित्रण में सौन्दर्य वृद्धि के उद्देश्य से बनाई गयी बेलें परस्पर सम्बद्धता तथा सहयोग की प्रतीक होती है। कमल के फूल की बेल वंश वृद्धि की आकांक्षा प्रदर्शित करती है तथा पत्ती सहयोगी और परोपकारी भावना का पर्याय है।

पुतरियाँ

चित्रों में बनायी गई छोटी–छोटी गुड्डे गुड़िया जैसी आकृति को पुतरा – पुतरियाँ कहते है जिनकी मुखाकृति अस्पष्ट व भावहीन होती है पैर चलने की मुद्रा में तथा हाथ ऊपर की ओर कर्म करने को दर्शाते है। यह मानव को कार्य की प्रेरणा देती है।

नाग

नाग काल के प्रतीक होते है यह प्रायः भय से मुक्ति पाने हेतु भी चित्रित कर पूजे जाते है। यह काल को दर्शाते है व यह बताते है कि हमें जीवन काल को नहीं भूलना चाहिये।

फलदार वृक्ष

लोक चित्रों में फलदायक वृक्ष का चित्रण कर पुजा जाता है यह इस विश्वास का प्रतीक है। कि हमारा जीवन फलदायी हो। आम, केला, नारियल वृक्ष इसी उद्देश्य से चित्रित किये जाते है तथा इनके पत्तों की भी पूजा की जाती है जो पूजा के लिये अत्यन्त शुभ माने जाते है। केला, पीपल, वट वृक्ष, पीपल, आँवला तथा तुलसी आदि का चित्रण करके भी पूजा की जाती है। तथा इनके गुणों की भी पूजा की जाती है यह खुशहाली का प्रतीक है।

पशु पक्षी का अंकन

लोककला में पशु पक्षी का अंकन भी होता था जिनकों प्रतीकात्मक रूप में प्रयोग किया जाता है। पशुओं में भैंस को यमराज रूप में, गायों को कृष्ण लीला, नंदी बैल शिव के रूप में तथा चूहे का गणेश जी के साथ अंकन होता है। हाथी का अंकन लक्ष्मी के साथ होता है। शेर का दुर्गा का साथ होता है पक्षी में तोता और मोर का अंकन होता है जो खुशहाली, निमंत्रण, ऐश्वर्य व सौन्दर्य का प्रतीक है।[53]

देवी देवता का अंकन

बृहम्मा उत्पत्ति के , विष्णु पालक के तथा शिव संहारक शक्तियो के प्रतीक है सरस्वती विद्यादायनी, पार्वती, लक्ष्मी सम्पत्ति एवं वेभव का प्रतीक है शिव का त्रिशूल दुष्ट नाश का, विष्णु का चक्र अहंकार का, गदा वुद्धि का प्रतीक है राधा–कृष्ण प्रेम रूप के प्रतीक है कृष्ण–बलराम भ्रात प्रेम के प्रतीक है।

अक्षर प्रतीक

चित्रों में वर्ण प्रतीकों का भी अत्यन्त महत्व हैं। जिसमें भारतीय संस्कृति

का प्रथम परब्रम् वर्ण ऊँ है। जिसका प्रयोग लगभग सभी धार्मिक चित्रणों, ग्रन्थों व मन्त्रों में होता है यह भारतीय संस्कृति का श्रेष्ठ वर्ण प्रतीक है। परमेश्वर की तीन शक्तियां प्रमुख मानी जाती है – अनुंतर, इच्छा और उन्मेष। अनुन्तर का 'अ', इच्छा का 'इ', तथा उन्मेष का 'उ' का मेल ऊँ का निर्माण होता है।

अन्य प्रतीक

अन्य प्रतीकों में त्रिभुज शक्ति का, दीपक ज्ञान का, शिवलिंग सृष्टि का, बीज तथा सर्प काल का प्रतीक तथा मछली शुभ–शगुन के रूप में चित्रित की जाती है सीधी रेखा स्पष्टता व सरलता की, वलयकार रेखा गतिशीलता व प्रवाह की व एक दूसरे को काटती रेखा जीवन के उतार–चढ़ाव को प्रदर्शित करती है। सीढ़ी उत्तरोत्तर प्रगति का द्योतक है।

सन्दर्भ गृन्थ सूचि

1. डा0 मधु श्रीवास्तव, बुन्देलखण्ड की लोक चित्रकला, पृष्ठ क्रमांक – 1
2. प्रो0 एस.वी.एल. सक्सेना, कला सिद्धान्त और परम्परा, पृष्ठ क्रमांक – 70
3. डा0 मधु श्रीवास्तव, बुन्देलखण्ड की लोक चित्रकला, पृष्ठ क्रमांक – 45
4. अविनाश बहादुर वर्मा, कला एवं तकनीक, पृष्ठ क्रमांक – 3
5. प्रो0 एस.वी.एल. सक्सेना, कला सिद्धान्त और परम्परा, पृष्ठ क्रमांक – 68
6. प्रभा पवार, कला त्रैमासिक, लोककला विशेषांक, जनवरी से मार्च 2002, पृष्ठ– 4
7. डा0 मधु श्रीवास्तव, बुन्देलखण्ड की लोक चित्रकला, पृष्ठ क्रमांक – 45
8. अविनाश बहादुर वर्मा, कला एवं तकनीक, पृष्ठ क्रमांक – 48
9. प्रो0 एस.वी.एल. सक्सेना, कला सिद्धान्त और परम्परा, पृष्ठ क्रमांक – 69
10. डा0 मधु श्रीवास्तव, बुन्देलखण्ड की लोक चित्रकला, पृष्ठ क्रमांक – 45
11. किरण प्रदीप, आकृति, पृष्ठ क्रमांक – 318
12. प्रो0 एस.वी.एल. सक्सेना, कला सिद्धान्त और परम्परा, पृष्ठ क्रमांक – 70
13. प्रो0 एस.वी.एल. सक्सेना, कला सिद्धान्त और परम्परा, पृष्ठ क्रमांक – 71
14. किरण प्रदीप, आकृति, पृष्ठ क्रमांक – 319
15. प्रो0 एस.वी.एल. सक्सेना, कला सिद्धान्त और परम्परा, पृष्ठ क्रमांक – 71
16. डा0 मधु श्रीवास्तव, बुन्देलखण्ड की लोक चित्रकला, पृष्ठ क्रमांक – 54
17. प्रो0 एस.वी.एल. सक्सेना, कला सिद्धान्त और परम्परा, पृष्ठ क्रमांक – 71
18. प्रो0 एस.वी.एल. सक्सेना, कला सिद्धान्त और परम्परा, पृष्ठ क्रमांक – 68
19. प्रो0 एस.वी.एल. सक्सेना, कला सिद्धान्त और परम्परा, पृष्ठ क्रमांक – 73
20. डा0 मधु श्रीवास्तव, बुन्देलखण्ड की लोक चित्रकला, पृष्ठ क्रमांक – 22
21. प्रो0 एस.वी.एल. सक्सेना, कला सिद्धान्त और परम्परा, पृष्ठ क्रमांक – 74
22. अविनाश बहादुर वर्मा, कला एवं तकनीक, पृष्ठ क्रमांक – 56

23. प्रेम कुमारी मिश्र, कला त्रैमासिक, जनवरी से मार्च 2002, पृष्ठ क्रमांक – 27
24. प्रो0 एस.वी.एल. सक्सेना, कला सिद्धान्त और परम्परा, पृष्ठ क्रमांक – 74
25. प्रो0 एस.वी.एल. सक्सेना, कला सिद्धान्त और परम्परा, पृष्ठ क्रमांक – 75
26. डा0 मधु श्रीवास्तव, बुन्देलखण्ड की लोक चित्रकला, पृष्ठ क्रमांक – 61
27. प्रो0 एस.वी.एल. सक्सेना, कला सिद्धान्त और परम्परा, पृष्ठ क्रमांक – 72
28. प्रभा पवार, त्रैमासिक पत्रिका, लोककला विशेषांक जनवरी से मार्च 2002, पृष्ठ क्रमांक – 5
29. प्रो0 एस.वी.एल. सक्सेना, कला सिद्धान्त और परम्परा, पृष्ठ क्रमांक – 169
30. डा0 मधु श्रीवास्तव, बुन्देलखण्ड की लोक चित्रकला, पृष्ठ क्रमांक – 61
31. प्रभा पवार, त्रैमासिक पत्रिका, जनवरी से मार्च 2002, पृष्ठ क्रमांक – 5
32. डा0 गिर्राज किशोर अग्रवाल, आधुनिक भारतीय चित्रकला, पृष्ठ क्रमांक – 212
33. डा0 मधु श्रीवास्तव, बुन्देलखण्ड की लोक चित्रकला, पृष्ठ क्रमांक – 60
34. डा0 मधु श्रीवास्तव, बुन्देलखण्ड की लोक चित्रकला, पृष्ठ क्रमांक – 22
35. प्रभा पवार, त्रैमासिक पत्रिका, जनवरी से मार्च 2002, पृष्ठ क्रमांक – 4
36. अविनाश बहादुर वर्मा, कला एवं तकनीक, पृष्ठ क्रमांक – 53
37. तरकनाथ बड़ेरिया, भारतीय चित्रकला का इतिहास, पृष्ठ क्रमांक – (8–19)
38. तरकनाथ बड़ेरिया, भारतीय चित्रकला का इतिहास, पृष्ठ क्रमांक – 19
39. तरकनाथ बड़ेरिया, भारतीय चित्रकला का इतिहास, पृष्ठ क्रमांक – 20
40. तरकनाथ बड़ेरिया, भारतीय चित्रकला का इतिहास, पृष्ठ क्रमांक – 55
41. अविनाश बहादुर वर्मा, कला एवं तकनीक, पृष्ठ क्रमांक – 55
42. डा0 मधु श्रीवास्तव, बुन्देलखण्ड की लोक चित्रकला, पृष्ठ क्रमांक – 104
43. अविनाश बहादुर वर्मा, कला एवं तकनीक, पृष्ठ क्रमांक – 57
44. डा0 मधु श्रीवास्तव, बुन्देलखण्ड की लोक चित्रकला, पृष्ठ क्रमांक – 107
45. तारकनाथ बड़ेरिया, भारतीय चित्रकला का इतिहास, पृष्ठ क्रमांक – 11

46. जागरण सखी, नबम्वर 2004, पृष्ठ क्रमांक – 89

47. दैनिक जागरण, 26 दिसम्वर 2004

48. कला त्रिमासिक पत्रिका, जनवरी से मार्च 2004

49. डा0 मधु श्रीवास्तव, बुन्देलखण्ड की लोक चित्रकला, पृष्ठ क्रमांक – 42

50. डा0 मधु श्रीवास्तव, बुन्देलखण्ड की लोक चित्रकला, पृष्ठ क्रमांक – 146

51. डा0 कृष्ण बैरागी, कला दीर्घा 2000, पृष्ठ क्रमांक – 67

52. डा0 मधु श्रीवास्तव, बुन्देलखण्ड की लोक चित्रकला, पृष्ठ क्रमांक – 149

अध्याय तृतीय

आधुनिक कला और लोक कला ।

आधुनिक कला
और
लोक कला

तृतीय अध्याय

आधुनिक कला और लोक कला

एक अजनबी दुनिया में जन्में मनुष्य की आन्तरिक अभिलाषा होती है। अपने परिवेश की अनबुझ विविधताओं को अपनी समझ में लाने, उनसे कोई संवाद स्थापित कर पाने की और इसके साथ सहचार्य स्थापित कर पाने की। इसी सहचार्य से वह अपने निकट के मानव समुदाय से भी तादात्म्य स्थापित करता है, कला साधना इसी की साधना होती है। ताकि हम अपने परिवेश को उसमें दिखा सके।[1]

साहित्य, संगीत तथा कला के बिना मनुष्य पशु के समान है और इन्ही कलाओं की उद्भावना के फलस्वरूप लोककला का जन्म हुआ। लोककला मानव और लोक संस्कृति के विकास के विभिन्न स्तरों का चित्रित स्वरूप है। यह जीवन के विभिन्न पक्षों को उद्‌गाठित करती है। जीवन के विभिन्न रंग इसमें बिखरे है।[2] अगर हम लोककला का अर्थ जाने तो लोककला का अर्थ होगा लोक यानि मानव और लोककला यानि मानव जाति की कला किन्तु इस विचार से आदिम कला से लेकर आधुनिक कला तक की सभी कलाओं को लोककला माना जाना चाहिये।[3]किन्तु ऐसा नहीं हैलोक चित्रकला का अटूट और आत्मीय संबध जमीन और क्षेत्र से होता है जहाँ वह जन्म लेती है। लोक वातावरण में जनमानस में फलती फूलती है। क्षेत्र विशेष की परम्परा, जीवन पद्धति और प्राकृतिक परिवेश सभी मिलकर लोक–कलाओं के स्वरूप का निर्माण करते है। लोक चित्रकला, लोक–संस्कृति के शताब्दियों के अनुभव रहन–सहन, हास–उल्लास, दुख–व्यथा, रीति–रिवाज, विश्वास तथा मान्यताओं के साथ आगे बढ़ती आयी है।[4] किन्तु समय के साथ भारतीय संस्कृति में अनेक परिवर्तन हुये है। उसकी

दिशाये बदली है सांस्कृतिक परिवर्तनों में विश्वासों के रूप बदले है। किन्तु वे विश्वास टुटे नहीं है। विकास क्रम में जो अनावश्यक लगा वह पुराने पत्रों की तरह अपने आप झड़ गया और जैसे नयी कोपलें उगती है वैसे ही उसमें नवीन विचारधाराओं ने जन्म लिया है। समय के साथ लोककला में भी परिवर्तन हुआ है।

हम देखते आये है कि समय के साथ हम मनुष्य बदले है वैसे ही समय परिवर्तन के साथ नये अनुभव भी हमसे जुड़ते गये और हमारी सोच, संस्कृति और परम्परा में दबलाव आया जिसे हम नयी पीढ़ी में हस्तान्तिरित करते चले गये। यही कला के साथ भी होता आया है। कभी कभी कला के तत्व बाहर से भी आये और हमारी कला परम्परा और बाहर से आये प्रभावों के अन्तर सम्बन्धों से कुछ नये रूपाँकर उभरे हमारी उत्कृष्ट कलाओं ने बाहरी प्रभावों को उसी हद तक ग्रहण किया, जिस हद तक वे उनकी अपनी परम्पराओं के साथ संगति बैठा पायी है। यही लोककला के साथ हुआ।[5] लोककला ने बाहरी प्रभावों को उतना ही ग्रहण किया जितना उसे आवश्यक लगा।

जैसे कि भारत में ईरानी और मुगलों के आगमन के बाद चित्रों के चारों तरफ हाशिये का चित्राँकन होने लगा।

19 वीं शताब्दी में भारत में अंग्रेजी शासन की स्थापना के साथ ही भारतीय परम्परावादी चित्रकला धीरे–धीरे अपना स्वरूप खोने लगी। यह वह समय था जहाँ समकालीन कला के लिये एक माहौल तैयार हुआ। खासकर उन्नीसवीं शताब्दी के बाद से हमारी कला काफी उथल–पुथल से गुजरी। क्योंकि पश्चिमी कला में किसी दृश्य या वस्तु को उसी रूप में चित्रित करने की दिशा में अत्याधिक प्रगति हुई थी। जिसमें वह यर्थात जैसी दिखती थी। मानवीय आकृति में चमड़े की हर झाई , मांसपेशियां की जटिल बनाबट और झुर्रिया सजीव हो उठती थी। पेड़ पौधे और पशु भी सजीव हो उठते थे।[6] भारत में जब यह कला प्रभाव आये तो इसने भारतीय कला जगत को प्रभावित

किया, और भारतीय कलाकार इसमें प्रभावित होकर पश्चिमी शैली में कार्य करने लगे। इससे भारतीय कला जगत में नये अंकुर फूटे। भारतीय कला के पुराने परम्परागत संस्कारों में बदलाव आया, नये कला सिद्धान्त, रूप प्रयोग, तकनीक पद्धतियों का विकास हुआ।[7] जिससे आधुनिक कला का जन्म हुआ तथा भारतीय कलाकारों द्वारा बनायी गयी कृति , आधुनिक कला कहलायी। हमारे देश के कलाकार यूरोपीय शैली से प्रभावित थे। किन्तु वह उसे पूर्ण रूप से नहीं अपना पाये। कलाकारों ने उस शैली में काम तो किया किन्तु उनके चित्रों के विषय अधिकतर भारतीय थे इस शैली में सर्व प्रथम राजा रवि वर्मा ने काम किया। कुछ भारतीय कलाकार जो आधुनिक शैली को नहीं अपना पाये। वह गाँवों और कस्बों की तरफ चले गये और अपनी कला शैली में चित्रांँकन करके अपनी परम्पराओं को बनाये रखने की कोशिश करने लगे। बंगाल की लोककला इसी का उदाहरण है। बंगाल में कलकत्ता के काली मन्दिर के कालीघाट में प्रायः कागज, कपड़ा , टाट , कपड़े पर चिपके कागज तथा केनवास पर प्रायः लोक चित्रों का चित्रांँकन किया जाता था चित्र खनिज रंगों से टेम्परा विधि में चित्रण करके सशक्त तूलिका द्वारा बाहय सीमा–रेखाँकन कर दिया जाता था। उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दियों में इस प्रकार के चित्र बनते रहे किन्तु समय परिवर्तन के कारण इन चित्रों में लोक शैली की चित्रण–पद्धति के साथ साथ यूरोपियन तकनीक का भी सम्मिश्रण किया गया।[8] इसी प्रकार उड़ीसा के पट–चित्र नाथ–द्वार के पट चित्र, तंजौर शैली के चित्र, केदारनाथ, बद्रीनाथ, द्वारका आदि में बिकने वाले धार्मिक चित्रों तथा मधुबनी (मिथिला, बिहार) राजस्थान, उत्तर प्रदेश, गुजरात, मालवा आदि की लोक शैलिया अत्यन्त जीवन्त रूप में अपने अपने क्षेत्रों में परम्परागत रूप में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में विकसित होती रही है।

19वीं शताब्दी के अन्तिम चरण में हमारे देश में कई परिवर्तन हुये। नये उद्योग–धन्धों के विकास ने गाँवों के जीवन को पथ भ्रष्ट कर दिया। गाँव का

परिवेश और समुदाय टूट चुका था लोग औद्योगिक नगरों और महानगरों में रहने लगे थे। जिनका कोई समुदाय नहीं था। अब कला किसी सामुदायिक भावना या धर्म से प्रेरित नहीं थी जिसमें अनेक आस्थायें जुड़ती हो। आधुनिकीकरण की इस धारणा का प्रभाव लोककला पर पड़ा। इन शताब्दियों में व्यक्तिवाद, प्रतिस्पर्धा और असीमित धनार्जन को आधुनिकता का अनिवार्य लक्षण माना गया।[9] इस कारण उस समय लोक चित्रकला का हास हुआ। उस समय कलाकार ने लोक चित्रकला को हेय दृष्टि से देखा और उसे गँवारों की कला कहा। किन्तु कुछ कलाकार को लोककला ने प्रभावित किया। और उनके द्वारा लोककला को अपनाया गया। लेकिन समय के साथ हमारी चित्रकला की तकनीक में अन्तर आया जिससें लोक चित्रकला में परिवर्तन हुआ।

हम प्रारम्भ से देखते आ रहे है कि ग्रामों में ही नहीं वरन् शहरों में भी जन समुदाय का एक बहुत बड़ा वर्ग लोक चित्रकला का संवाहक रहा है। यदि हम प्राचीन काल से वर्तमान तक के लोक चित्रकला के इतिहास के बारे में सोचे तो वह सदैव परिवर्तनशील प्रतीत होगी। आज लोक चित्रकला में औद्योगीकरण और आधुनिकीकरण के प्रभाव से अनेक परिवर्तन हुये है। जैसे कि दीपावली, करवाचौथ , अहोई अष्टमी आदि पर बने चित्र आदि इन चित्रों को दीवारों पर बनाया जाता है। किन्तु आज इन चित्रों को छपे हुये पोस्टर या छापा चित्रों में परिवर्तन कर दिया गया है जिससे दीवारों को गन्दा होने से बचाया जा सके व समय की बचत हो किन्तु आज इक्कीसवीं सदी में मानव जीवन में व्याप्त आधुनिकता से कलाकारों का मोह भंग हुआ है।[10] और हम इसे आधुनिक कला की अच्छायी ही कहेगें कि वह हर शैली और वस्तु से प्रेरणा लेकर कुछ नया करने की सोचता है। इस कारण आधुनिक कलाकारों ने लोककला को विभिन्न रूपों को देखा वह उससे प्रभावित हुये। आज के आधुनिक समय में लोककला भी अपना स्थान ग्रहण किये हुये है क्योंकि लोककला केवल कलाकार की कला नहीं है , बल्कि उसमें लोगों की भावना व सहयोग जुड़ा होता है। धार्मिक व

सामाजिक उद्देश्य के प्रति समर्पित लोक कलाकार आधुनिक कलाकार के समान केवल आत्म संतोष के लिये ही चित्रण नहीं करता, बल्कि यह आधुनिक कला के समान , कलाकार की आत्मिक अभिव्यक्ति होती है।[11] लोककला न केवल लोगों के धार्मिक कार्यो एवं उत्सवों व दैनिक जीवन में घुल मिल गयी है बल्कि यह उनकी धार्मिक एवे मांगलिक भावनाओं व सौन्दर्य प्रियता की पूर्ती करती है लोक कथायें, पौराणिक कथायें व वीर गाथायें उनके सामने उपयोगी ज्ञान का भण्डार खोलती है व प्रेरणा स्त्रोत होती है। लोककला के बाहय रूप का कोई परिवर्तन नहीं हुआ और यह पीढ़ियों से हमारे समाज में चली आ रही है। भजनकीर्तन महिलाओं के गीत , रामलीला , कृष्णलीला , पाण्डव कथा धार्मिक, संस्कारों पर बनाये जाने वाले चित्र, आकृतियां देवताओं के चित्र, भित्ति चित्र, वस्त्रों के डिजाइन आदि एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को जमीन जायदाद की तरह हस्तान्तिरित होती आयी है।

समाज की धार्मिक मान्यताओं , प्रतीकों व समान आकारों को निरन्तर दुहराते रहने से लोककला में रूढ़िबद्धता आयी है। यद्यपि क्षेत्र व धार्मिक मान्यता अन्तर के अनुसार इन प्रतीकों व आकारों में भिन्नता पायी जाती है समय के परिवर्तन ने लोककला में व्याप्त इस रूढ़िबद्धता को कुछ कम कर दिया है। लोककला का प्रचलन देहातों में अधिक होता है। जहाँ का सामाजिक जीवन आदिवासियों के जीवन से अधिक सभ्य, किन्तु नागरी जीवन से अधिक परम्परावादी व अपरिवर्तनशील होता है नगरों में भी लोककला का प्रादुर्भाव होता है क्योंकि वहाँ भी देहातों को छोड़कर बसे हुये मनुष्य होते है जो शहरों में अपने साथ देहाती परम्परागत रीतिरिवाजों व धार्मिक मान्यताओं को भी ले जाते है। किन्तु वहाँ के जीवन व रहन सहन से कला में कुछ परिवर्तन की सम्भावना भी बनी रहती है क्योंकि शहरी की भागदौड़ और व्यस्थ जीवन में एक तो समय का अभाव रहता है और लोककला में प्रयुक्त होने वाला कुछ समान ऐसा होता है जो शहरों में नहीं मिल पाता व जगह की समस्या रहती है। किन्तु लोककला

परम्परा व रीति रिवाजों में शामिल होने के कारण आसानी से छोड़ी भी नहीं जा सकती है। इस कारण नगरीय जीवन में भी लोककला अपने परम्परागत रूप के साथ शामिल होती है।[12]

आज भारत में लोककला के रूप सम्बन्धित तत्वों का विकास इतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना कि उसके सर्जन की धार्मिक भावना , सामाजिक व परम्परा के प्रति निष्ठा की रक्षा है। वहीं 19वीं शताब्दी से 21वीं शताब्दी तक आधुनिक कला ने भी प्रगति की है। चित्रों में छाया और प्रकाश के द्वारा यर्थात दर्शाने की जगह रंगों के धब्बों के चयन से ही सब कुछ दर्शाया जाने लगा। कलाकार द्वारा डाले गये रंग के धब्बे कलाकार की विशिष्टा से जुड़ गये। अब कलाकार के लिये चित्र सतह भी महत्वपूर्ण हो गई है चित्रकार दूर की वस्तुओं को धूमिल और दूर की वस्तु को चटक रंगों द्वारा पास लाने लगा। चित्र की सतह को तरह तरह के रूप व साज सज्जा देकर बनाया जाने लगा। इसमें कोलॉज भी बनाये गये है।[13]

आधुनिक कला में लोककला के विपरीत नित नये प्रयोग और नवीनता को महत्व दिया जाता है आधुनिक कलाकार ने नये प्रयोग करने और नयी शैली में कलाकृति बनाने के लिये प्रायः अपनी सभी प्राचीन शैलीयों और कलाओं से प्रेरणा ली है जैसे कि 19वीं शताब्दी जो कलाकार यर्थाथ चित्रण बनाने के एक महीना या साल लगता था वह आज उसी चित्र को कठोर तूलिका घात द्वारा रंगों के प्रभाव से कम समय में यर्थात चित्रण में दर्शाता है। आदिवासी कला एवं ग्रामीण जीवन को प्रस्तुत करने वाली लोककला को आधार बनाकर कितने ही आधुनिक चित्रकारों ने कला जगत में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। इस प्रकार भारतीय समकालीन कला में प्रमुखतयः तीन प्रकार के चित्रकार है। एक वे जो प्राचीन परम्पराओं के आधार पर आज भी चित्रण कर रहे है। दूसरे वे जो नितान्त पश्चिम की कला से प्रेरणा लेकर उसी शैली में कलाकृतियों का निर्माण कर रहे है। तथा तीसरे प्रकार के वह चित्रकार है जो परम्परा और प्रगति का

समन्वय द्वारा नवीन कलाकृतियों का निर्माण कर रहे है यह चित्रकार समय के साथ चल है किन्तु वह अपनी परम्परा को साथ लेकर चल रहे है वह पूर्ण रूप से आधुनिक शैली को नहीं अपना पा रहे है।[14]

भारतीय समकालीन कलाओं के विकास क्रम से ज्ञात होगा कि कला का विकास सामान्यतः प्रयोग धार्मिता पर विशेष रूप से केन्द्रित रहा है। फिर भी इनके परे जाकर कलाकारों ने रचना के नये संसाधन खोजे। परम्परागत माध्यमों के विरूद्ध आधुनिक समय में प्रयुक्त होने वाली वस्तुओं का प्रयोग चित्रों में किया।

आदि मानव के पास शिला खनिज रंग तथा जानवरों की चर्वी और खून था। इसलिये उनकी रचना उन्हीं चीजों पर केन्द्रित रही। कला शिलाओं से निकलकर चिकनी सतह पर आ गई। भवनों गिरिजाघरों एवं मन्दिरों की सपाट दीवारों पर चित्र अनुरंजित होने लगे खून और चर्वी की जगह खनिजों को प्रयोग किया गया। वानस्पतिक रंगों का बहुलता से प्रयोग हुआ। दीवारों के बाद चित्र कपड़े , ताड़ तथा कागज पर आ गये। भारत में मिनिएचर चित्रों की रचनायें कागज पर की जाने लगी कागज के बाद कैनवास केनवास के बाद नेक तरह की सतह जैसे प्लाईबोर्ड , मेसोनाइट बोर्ड जूट तक प्रयोग किया गया। चित्रों की मौलिकता बदल गई।[15]

आज हमारे देश में चित्रकला के अच्छे परिणाम आने लगे है और देश में समकालीन कला के लिये एक माहौल तैयार हुआ है आज का युवा कलाकार अपने माहौल , परिवेश और रोजमर्रा के बुनियादी सवालों और सरोकारों से अपने को जुड़ा हुआ देख पा रहा है वह प्रेरणा के लिये पश्चिमी देशों को नहीं देखता।

यही एक महत्वपूर्ण परिवर्तन है आज का भारतीय कलाकार इस नये वातावरण को झेलने के लिये ही नहीं उसे आत्मसात करने के लिये भी तैयार हो चुका है उसकी नियति अब एक निर्णायक दौर से गुजर रही है।[46]

सन्दर्भ संग्रह

1. सच्चिदानन्द सिन्हा, समकालीन कला, फरवरी–मई 2002, अंक 21 पृष्ट सं0 32।

2. मधु श्रीवास्तव, बुन्देलखण्ड की लोक चित्रकला लोक चित्रकला का भविष्य एवं उन्नयन, अध्ययन–7, पृष्ट सं0 176।

3. र0वि0 साखलकर, कला के अन्तः दर्शन, पृष्ट सं0 24।

4. मधु श्रीवास्तव, बुन्देलखण्ड की लोक चित्रकला लोक चित्रकला का भविष्य एवं उन्नयन, अध्ययन–7, पृष्ट सं0 176।

5. मधु श्रीवास्तव, बुन्देलखण्ड की लोक चित्रकला लोक चित्रकला का भविष्य एवं उन्नयन, अध्ययन–7, पृष्ट सं0 176।

6. सच्चिदानन्द सिन्हा, समकालीन कला, फरवरी–मई 2002, अंक 21 पृष्ट सं0 32।

7. एस0वी0एल0 सक्सेना, आनन्द लखटकिया, भारतीय चित्रकला, परम्परा और आधुनिकता का अन्तर्द्वन्द, पृष्ट सं0 96।

8. गिर्राज किशोर अग्रवाल, कला और कलम, पृष्ठ सं0 234।

9. मधु श्रीवास्तव, बुन्देलखण्ड की लोक चित्रकला लोक चित्रकला का भविष्य एवं उन्नयन, अध्ययन–7, पृष्ठ सं0 176।

10. मधु श्रीवास्तव, बुन्देलखण्ड की लोक चित्रकला लोक चित्रकला का भविष्य एवं उन्नयन, अध्ययन–7, पृष्ठ सं0 178।

11. र0वि0 साखलकर, कला के अन्तःदर्शन लोककला की अर्थवेता, पृष्ठ सं0 32।

12. सच्चिदानन्द सिन्हा,समकालीन कला अंक 21,मई–2002,पृष्ठ सं033।

13. र0वि0 साखलकर, कला के अन्तःदर्शन लोककला की अर्थवेता, पृष्ठ सं0 34।

14. जय सिंह नीरज , महात्मा गाँधी और कलात्मक सृजन समकालीन कला, अंक 17–1996, पृष्ठ सं0 34।

15. डा0 राम विरंजन , कला दीर्धा , अप्रेल 2003 , वर्ष–3 , अंक – 6, आधुनिक कला और प्रयोग धार्मिता, पृष्ठ सं0

16. मीनाक्षी भारती समकालीन कला अंक–6, अप्रेल–2003, वर्ष–3, पृष्ठ सं0 49।

अध्याय चतुर्थ

भोपाल के समकालीन चित्रकारों में लोक कला का प्रभाव

4.1 - एल . एन. भावसार

4.2 - लक्ष्मण भाण्ड

4.3 - सचिदा नागदेव

4.4 - सुशील पॉल

4.5 - सुरेश चौधरी

भोपाल के समकालीन चित्रकारों में लोककला का प्रभाव

4.1 - डॉ. एल.एन.भवसार

4.2 - लक्ष्मण भाण्ड

4.3 - सचिदा नागदेव

4.4 - सुशील पॉल

4.5 - सुरेश चौधरी

अध्याय चतुर्थ

भोपाल के समकालीन चित्रकारों में लोककला का प्रभाव

डा0 लक्ष्मी नारायण भावसार

कला के क्षेत्र में कला साधना को पूजा समझने वाले लोग बहुत कम मिलते हैं। किन्तु लक्ष्मी नारायण भावसार एक ऐसे चित्रकार हैं जो कला को पूजा समझते हैं आप चित्रकला के क्षेत्र में शीर्ष स्थान पर विराजमान हैं। आप एक प्रसिद्ध चित्रकार के अतिरिक्त एक चिंतक के रूप में भी जाने जाते हैं आप अपनी मातृभूमि से जुड़े हुये हैं तथा आप अपने गुरूओं को आज भी सम्मान देते हैं।

जीवन परिचय:- लक्ष्मी नारायण भावसार का जन्म 1 सितम्बर, 1939 को मालवा के हृदय शाजापुर में हुआ था। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा शाजापुर में हुयी। इसी समय आपने पारिवारिक वातावरण में अपने बड़े भाई डा0 आर.सी. भावसार के सानिध्य में आपकी चित्र प्रतिभा मुखरित हुई आपके बड़े भाई भी चित्रकार है और एक तरफ से वह आपके गुरू हैं। आपने विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन से एम0ए0 चित्रकला की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन में आपके गुरू प्रोफेसर चिंतामणि, हरि खाडिन्तकरजी और पद्मश्री डा0 विष्णु श्रीधर वाकणकर आदि रहे। जे.जे. स्कूल आर्ट बम्बई से आपने जी.डी. आर्ट में डिप्लोमा प्राप्त किया।

आपने इन्द्रिरा कला संगीत विश्वविद्यालय से विधावाचस्पति की उपाधि प्राप्त की। जिसमें आपका विषय **"मालवा क्षेत्र में चित्रावर्णो और माण्डनों का**

कलात्मक और सांस्कृतिक विवेचन" रहा।

आपके पिताजी कपड़े के व्यापारी थे उन्हें पढ़ाई–लिखाई के उपरान्त सरकारी नौकरी या इसी प्रकार का अन्य कोई कार्य करने की लेशमात्र भी इच्छा नहीं थी। किन्तु आपके पिताजी ने आपके गुरूजनों की बात मानकर आपको चित्रकला की प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर दिया। जिससे आपकी चित्रकला बनाने की प्रतिभा मुखरित हुयी और आपने भारत सरकार के शिक्षा और सांस्कृतिक मंत्रालय द्वारा सर जे.जे. स्कूल आर्ट बम्बई में आयोजित वर्कशाप और सेमीनार में मध्य प्रदेश के प्रोफेसर के रूप में शिरकत की।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग , नई दिल्ली के सहयोग से इन्द्रिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ में ललित कलाओं के लिये आयोजित कार्यशाला और सेमिनार में स्थापित चित्रकार के रूप में भागीदारी की। आप मध्यप्रदेश के सौन्दर्य सलाहकार भी रहे। आप ललितकला अकादमी नई दिल्ली में मध्यप्रदेश की ओर से मनोनीत सदस्य भी रहे हैं। आपको लोक कलाओं में विशेष योगदान और चित्र प्रतिभा के लिये "मानव रत्न" की उपाधि से सम्मानित किया गया है। आप आदिवासी कलाओं के लिये मध्यप्रदेश शासन द्वारा एक लाख रूपये की पुरस्कार राशि के चयन समिति के सदस्य भी रहे हैं।

देश विदेश की कला दीर्घाओं और कला संग्रह में तथा देश के बड़े–बड़े महानगरों में और बड़ी–बड़ी संस्थाओं में आपकी कलाकृतियां सुशोभित है। देश की प्रसिद्ध पत्र पत्रिकाओं धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, इलस्ट्रेटेड वीकली तथा कई पत्र–पत्रिकाओं में आपके रेखा चित्र प्रकाशित होते रहे हैं। दूरदर्शन और आकाशवाणी में भी कला विशेषज्ञ के रूप में आपने परिचर्चा की है। आप शासकीय हमीदिया कला , वाणिज्य एवं विधि महाविद्यालय में चित्रकला के प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्ष रहे हैं तथा भोपाल विश्वविद्यालय की चित्रकला अध्ययन परिषद के अध्यक्ष हैं।

लक्ष्मी नारायण भावसार ने चित्रधर्म और प्रकृति के चित्रात्मक अध्ययन के

लिये समूचे भारत की यात्रा की। वह हिमालय से कन्या कुमारी , द्वारिका से जगन्नाथ पुरी और नेपाल काठमांडु के काष्ठ मण्डप, पोखरा से सूदूर मानसरोवर से हिम शिखरों , ऋिषीकेष, बनारस, ओंकारेश्वर , गंगा और नर्मदा के कई तीर्थस्थलों की कला यात्रा करने गये।

आप पांच वर्षों तक सूदूर मालवा आन्चल की पगडडियों में भटक कर मालवा के लोक जीवन में झांककर मालवा के चित्रावण, माण्डेन, लोकगीत, लोक कला संस्कार, तीज–त्यौहार और इन सबमें प्रतिष्ठित और पुजित कलाओं को उजागर कर उनका गहन अध्ययन कर अपने शोध भाषण और प्रवचन के माध्यम से उसे प्रतिष्ठित किया।

लक्ष्मी नारायण भावसर की चित्रकलाः–लक्ष्मी नारायण भावसार ने भारत भूमि के सौन्दर्य को नदी, हिमाच्छादित पर्वत, हिमशिखर, उपवन , मन्दिर, मस्जिद , सरोवर , पर्वो की श्रद्धावान जनसमूह की भीड़–भाड़ को अपने दृष्य चित्रों में रंगरूपित कर अपने दर्शकों में एक पहचान बनाई है। आपने समूचे भारत का भ्रमण किया और उसके सौन्दर्य को अपनी कला में दिखाया। आप लोककला के जाने माने चित्रकार हैं, और लोक कलाकार के रूप में आपकी ख्याती अधिक है। आपके अनुसार "लोककला एक ऐसा ज्ञान है जो हमें शास्त्रों से जोड़ता है। और शास्त्र हमें जमीन से जोड़ता है। लोक कला केसर के समान है जो मीठे में पड़ते ही अपनी खुशबू सभी दिशाओं में फैलाती है और जो मीठा है वो हमारा शास्त्र है जब हम शास्त्र से जुड़ेगें तो लोक कला से हम अपने आप जुड़ जायेगें। लेकिन शास्त्र सीमित है, और लोक असीमित है।" आप अपने बारे में बताते है कि "जब आपने अपना पूरा ज्ञान प्राप्त कर लिया। बम्बई से जी.डी. आर्ट का डिप्लोमा ले लिया । विश्वविद्यालय में अब्बल आये। उसके बाद यह देखा कि कुछ भी नहीं जानते। यह तो बो सब है जो दुनिया में चल रहा है। असली ज्ञान तो घर में है आपके अनुसार आपकी माताजी बहुत अच्छी कला

बनाती हैं। वो जो घर पर जमीन पर बनाती है उसे माण्डना कहते हैं। और जो दीवार पर बनाती हैं उसे चित्रण कहते हैं उसे देखने में जो रूझान है, सम्मोहन है, मोहकता, भावमयता, सरसता व अपनापन है वो और किसी में नहीं है। हम जो तेल चित्रण और एक्रिलिक करते है वो नीरस और सूखा–सूखा सा लगता है।" इसलिये आपको लोक चित्रण करना अति प्रिय है। आपकी ख्याति एक लोक चित्रकार के रूप में है। आपने लोक कला के ऊपर काफी काम किया है। आपका लोक चित्रण शैली में विशेष योगदान है। आपको व्यक्ति चित्रण बनाने में भी वरिष्ठता हासिल है। आपने देश के कई महान और सम्मानजनक पुरूषों के व्यक्ति चित्र बनाये है , जैसे नेहरूजी , महात्मा गांधी , राजीव गांधी , इन्दिरा गांधी, पूर्व राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा आदि। पूर्व राष्ट्रपति डा0 शंकर दयाल शर्मा का आपने अभी व्यक्ति चित्रण बनाया है जो करीब आठ फुट के केनवास पर है वह व्यक्ति चित्रण इतनी कार्य कुशलता से बनाया है कि जैसे वह अभी बोलने लगेगा। व्यक्ति चित्रण पूर्णयत सजीव बना है।

चित्रकला के विषयः– भावसार जी ने लोककला के ऊपर काफी काम किया। जिसमें आपने भारत के अनेक पर्व , तीज त्यौहार का चित्रण किया है इसके अलावा आपको प्रकृति चित्रण और भूमि चित्रण करना पसन्द है। आपने प्रकृति के चित्रात्मक अध्ययन के लिये समूचे भारत में भ्रमण किया। अपने प्रकृति चित्रण में आपने पर्वतों के समस्त रूप और पानी के स्वभाव को दर्शाया है जिसमें जल की गहराई , प्रतिबिम्ब , बहाव , बन्धाव सभी दिखाया है। व्यक्ति चित्रण बनाने में आपको निपुणता हासिल है।

चित्रों की रंग योजनाः– लक्ष्मी नारायण भावसार अपने स्वभाव के अनुरूप ही हल्के और सौम्य रंगों का प्रयोग करते हैं। आपके प्रकृति चित्रण में हरे और नारंगी रंग की अधिकता है जो आपकी आशावादी प्रवृत्ति और धार्मिक प्रवृत्ति को दर्शाते है। आपके चित्रों में चटक और भड़कीले रेगों का अभाव है। तूलिका घात हल्के से प्रयोग किये गये है। जल का चित्रण करने में रंगों में सरलता है।

चित्रों के माध्यमः– आपने तेल चित्रण अधिक किया है इसके अतिरिक्त आपने जल रंग और बाटिक चित्रण भी किया है आपने कागज, केनवास, कपड़े, दीवार तथा हार्डबोर्ड सभी धरातलों पर काम किया है। आपने तेल रंगों के द्वारा प्राकृतिक सुषमा को दिखाया है।

(भेंटवार्ता पर आधारित)

चित्रसंख्या 1– चित्रफलक लोककला का उत्तम उदाहरण है इस चित्र में ऊंट पर सवार प्रेमी द्वारा भाले से अपनी प्रेमिका को पत्र देते हुये चित्रित किया है और प्रेमिका भाले से उस पत्र को निकाल रही है। चित्र में आकृति सपाट बनी हुई है कहीं पर भी छाया प्रकाश दिखाने की कोशिश नहीं की गई है। चित्र तेल माध्यम से बना हुआ है चित्र में आकृतियों को गहरे रंग की रेखा से सीमित किया गया है।

चित्रसंख्या 2– यह चित्र लोककला का उत्कृष्ट उदाहरण है जो बाटिक कला में बनाया गया है। इस चित्र में गाँव की स्त्री को खेत से काम करके लौटते हुये दिखाया गया है। स्त्री पीठ पर अपना बच्चा बाँधे हुये है उसके एक हाथ में हशिया और दूसरे हाथ में घास का गठ्ठा है। स्त्री अपने सर पर डलिया रखे हुये है जिसमें पानी के घड़े और कपड़े रखे हुये है। सम्भवतः यह उसकी जरूरत का सामान है इस चित्र में बाटिक रंगों का प्रयोग हुआ है।

चित्रसंख्या 3– यह प्रकृति चित्रण है। इस चित्र में आकाश को बादलों से घिरा दिखाया गया है जो कि गहरा नीला और कालापन लिये हुये है। जो वर्षा की सूचना दे रहा है। कहीं कहीं हल्की सी धूप बादलों से झांकती हुई दिख रही है। दूर दिखते पहाड़ हल्की सी धुन्ध लिये हुये हैं। पर्वत के पास दोनों तरफ तालाब बना हुआ है जिसका जल शान्त और निर्मल दिख रहा है सम्भवतः यह वर्षा का दृश्य है।

चित्रसंख्या 4:– यह चित्र भी एक भूमि चित्रण है। जिसमें पर्वत के ऊपर मन्दिर बनाया गया है। यह चित्रण भावसार जी की धार्मिक भावना को उजागर करता है। चित्र में नदी के किनारे एक पर्वत है। जिसके ऊपर छोटे–छोटे कई मन्दिर बने है। चित्र में नाव भी बनी हुई है जो यह दर्शा रही है। कि नाव द्वारा नदी को पार करके मन्दिर तक आया जाता है। चित्र को गहरे तूसिका घात द्वारा बनाया गया है। चित्र में रंगों की अधिकता है।

चित्रसंख्या 5:– चित्र सं0 5 भी लक्ष्मीनारायण भावसार की धार्मिक और सामाजिक व्यक्तित्व को दर्शाता है। यह एक धार्मिक पर्व का चित्रण है। जो मन्दिर के पास किसी मेले को दर्शा रहा है। मन्दिर नदी के किनारे स्थित है। नदी पर पुल बना हुआ है। जिसे पार करके लोग मन्दिर तक जा रहे हैं। कुछ मनुष्य नदी में स्नान कर रहे है। मन्दिर पहाड़ी के नीचे बना हुआ है। यह एक तेल चित्रण है। जिसमें हल्के और सौम्य रंगों का प्रयोग हुआ है।

चित्रसंख्या 6:– चित्र संख्या भूमि चित्रण है यह एक किले का चित्रण है। जोकि नदी के किनारे बना हुआ है। जो देखने में काफी पुराना लगता है। नदी में किले की परछाई दिख रही है। नदी का जल शान्त है चित्र को किले के अन्दर ही कही बैठ कर बनाया गया है। चित्र में दूरी को भी दिखाया गया है। यह तेल चित्र है।

चित्रसंख्या 7:– यह भी भूमि चित्रण है। गांव के समूचे दृश्य को दिखाया गया है। यह तेल चित्रण है। जिसे केनवास पर बनाया गया है। इसमें आपने

अपनी शैली के विपरीत तेज और चटक रंगों का प्रयोग किया है। चित्र में लाल रंग का प्रयोग अधिक है। जोकि गांव में फैली अशान्त और आतंकित वातावरण को दिखा रहा है।

चित्रसंख्या 8:– यह लक्ष्मी नारायण भावसार द्वारा बनाया गया लोकशैली का एक बहुत ही उत्तम चित्र है जो आपकी धार्मिक भावना को भी दर्शाता है यह शंकर जी की बारात का दृश्य है जिसमें शंकर जी की आकृति को अन्य आकृति से बड़ा दिखाया गया है जो अपने नन्दी बैल पर सवार है एक हाथ में डमरू तथा दूसरे में त्रिशूल लिये हुये हैं। शंकर जी की बारात में बृाहम्या, विष्णु, यक्ष यक्षिणी, गन्दर्व सभी देवता व बारातियों को दिखाया गया है। जो गाजे बाजे के साथ ढोल बजाते हुये चल रहे है। कुछ नाच रहे है। यह शंकर जी की बारात का उत्तम दृश्य है जिसे तेल रंग से बनाया गया है आकृति सपाट बनी हुई है एक गहरी रेखा से आकृति को सीमित किया गया है।

चित्रसंख्या 9:– यह चित्र फलक वाटिक चित्रण है जो किसी राजकुमारी का है। जो मृग से बातें कर रही है। और उसकी ओर देख रही है। पास ही कबूतरों को जोड़ा है जो दाना चुग रहा है चित्र लोककला में बना हुआ हैं जो उनका लोककला के प्रति लगाव दर्शाता है।

चित्रसंख्या 10:– चित्रफलक दस भावसार जी का देश प्रेम दर्शाता है। यह भारतीय सेना का दृश्य है जिसमें जवाहरलाल नेहरू द्वारा जवानों को उनकी बहादुरी का सम्मान देते हुये दिखाया गया है। चित्र में सेना के बड़े अफसर जवाहरलाल नेहरू के साथ खड़े है एक सिपाही अपने हाथ में राष्ट्रीय ध्वज लिये हुये है। चित्र में हल्के और सौम्य रंगों का प्रयोग हुआ है। तूलिका घात कोमल व सरल है।

चित्रसंख्या 11:– निम्नलिखित चित्र चित्रसंख्या (6) के समान ही है। जो किले को देखकर ही बनाया गया है किन्तु यह दृश्य अन्य किसी स्थान पर बैठ कर बनाया गया है।

लक्ष्मण मुकून्द भाण्ड

लक्ष्मण मूकून्द भाण्ड की ख्याति एक प्रसिद्ध चित्रकार और अध्यापक के रूप में है। आपका पूरा जीवन कला को समर्पित है। आपके लिये कला आपका दूसरा जीवन है आप एक दार्शनिक , विद्वान , कलाकार तथा प्रतिभाशाली चित्रकार है आपकी कला में एक विशेष आकर्षण है।

जीवन परिचयः– लक्ष्मण भाण्ड का जन्म 4 अक्टूबर को 1930 में उज्जैन में हुआ था। आपका पूरा नाम श्री लक्ष्मण मुकून्द भाण्ड है। आपके पिता का नाम मुकून्द राव भाण्ड था। और माता का नाम लक्ष्मी मुकून्द भाण्ड है। आपकी माध्यमिक शिक्षा ग्वालियर से पूरी हुई। आपने बोम्बे के जे.जे. स्कूल कला से चित्रकला में डिप्लोमा किया। आपके पिता जी भी एक चित्रकार थे जिससे कला का गुण आपमें वंशानुगत आया। आपके पिता एक चित्रकार और शिक्षक के रूप में जाने जाते थे। आपने कला की शिक्षा उन्ही से ली। आपके पिताजी का ग्वालियर में एक घर था जिसमें उन्होने गुरूकुल नाम से स्कूल भी खोला। जहां दूर से छात्र पढ़ने के लिये आते थे।

आपका जीवन बहुत उतार चढ़ाव वाला रहा। किसी कारण वश आपके पिताजी ने अपनी सरकारी नौकरी गंवा दी जिससे आपकी पारिवारिक परिस्थितियां खराब हो गई आपने अपने पिताजी को सहारा देने के लिये अन्य छोटा काम शुरू किये। आपने मोनोग्राम डिजाइनर और मुख्य पृष्ठ को सजाने का काम किया। और अन्य काम किये। उसके बाद आपको ग्वालियर के मेडिकल महाविद्यालय में अध्ययन के कार्य के लिये चुना गया। जिसमें आपका काम सिर्फ शारीरिक संरचना को बनाना था । लेकिन इस काम से आप सन्तुष्ट नहीं थे। क्योंकि इसमें ज्यादा कुछ करने को नहीं था। लेकिन इस समय आपको पढ़ने के लिये काफी लेख और चित्र मिले। जिसने आपको इतनी सहायती दी कि आप

कवर पेज पर आने लगे। आप लेखक के रूप में नवपथ पत्रिका से जुड़े। आपने व्यँग चित्रकार (कार्टुनिस्ट) के रूप में भी काम किया। आपने पत्रकारिता की जानकारी ली। उसके बाद आपने भारती नामक पत्रिका में लिखना शुरू किया। आप मध्य प्रदेश के प्रचार विभाग से भी जुड़े। आपने 1964 में एम.एस. भाण्ड नाम से भोपाल में चित्रकला का एक स्कूल खोला। जहां आपने स्वयं भी अध्यापन कार्य किया। यहां दूर दूर से छात्र छात्रायें आते थे। इस समय आप शोध में छात्र छात्राओं की मदद करते है। उनका मार्ग दर्शन करते है। आपकी सुनने की शक्ति अब कमजोर हो गई है। इसलिये आपका अधिकतर समय घर पर ही बीतता है।

लक्ष्मण भाण्ड की चित्रकलाः- लक्ष्मण भाण्ड ने आरम्भ में लोकशैली में काम किया। आपकी प्रसिद्धि भी लोक कलाकार के रूप में अधिक है। मुख्यतः आपने सभी शैलीयों में कार्य किया है आधुनिक शैली में आपने धनवादी, बिन्दुवाद तथा अमूर्त चित्रण आदि सभी में कार्य किया है। आप पिकासों और मातिस से विशेष प्रभावित है। आपने प्रभाववादी शैली में भी कार्य किया है। आपने अमूर्त शेली में प्रकृति चित्रण और भूमि दृश्य अधिक बनाये हैं। आपने बिन्दुवादी शैली में चित्रांकन किया। जिसमें आपने पत्रिका का कवर पेज पर चित्रण किया। आपने आपनी चित्रकारी में इस तरह के प्रयोग किये है। आपने सात स्वरों को सात रंग में चित्रित किया हैं आपने लोककला को भी मिश्रित शैली में प्रयोग किया आपने धनवादी शैली में अधिक चित्रण किये। आपने पत्रिकाओं के लिये भी चित्रकारी की जिसमें आपने कार्टून अधिक बनाये।

जब लक्ष्मण भाण्ड पंजाब होस्टल में वार्डन थे। तब आपने दिमाग में ट्यूमर होने का चित्र बनाया। जिसमें आपने दिखाया कि ट्यूमर कैसा पनपता है। इसकी प्रेरणा आपने बाल के अन्दर की संरचना से ली थी। इस तरह आपने अपनी चित्रकारी में कई तरह के प्रयोग किये। लक्ष्म्मण भाण्ड अपने समय के एक

आधुनिक चित्रकार थे। तथा आधुनिक चित्रकार के रूप में आपको ख्याति भी मिली।

कला का माध्यमः– आपने सभी माध्यम में कार्य किया है। आपने अपनी चित्रकला में पेन्सिल, जल रंग, चारकोल , स्याही, तेल रंग, एक्रलिक आदि सभी माध्यम का प्रयोग किया। आपने कागज , होर्डबोर्ड , केनवास, भित्ति आदि पर चित्रण कार्य किया है। 1960 में अपने जलरंग और जलरोधी स्याही को बाटिका की तरह प्रयोग करके चित्रण कार्य किया। पारदृश्य जल रंग चित्रण में आपकी वरिष्टता है। जल रंग और तेलरंगों को आपने तूलिका , चाकू या सीधे ट्यूब व अपने हाथों की अंगलियों से प्रयोग किया। आपने कभी यथार्थ चित्रण नहीं किया। लेकिन रायपुर के कला छात्रों के आग्रह पर उन्होने यथार्थ चित्रण करके दिखाया। आपने कभी भी यथार्थ चित्रण नहीं किया था और एक आधुनिक कलाकार के लिय यह करना कठिन भी था लेकिन आपने यह यह कर दिखाया।

कला के विषयः– लक्ष्मण भाण्ड ने सभी विषयों को लेकर चित्रण कार्य किया है। आपने व्यक्ति चित्रण प्रकृति चित्रण, भूमि चित्रण, संयोजन सभी बनाये है। संयोजन में आपने नारी चित्रण और सामाजिक विषय अधिक बनाये है। आपने लोकचित्रकला के विषय को लेकर भी चित्रण किया है। आपने लोककला के विषयों को लेकर आधुनिक शैली में चित्राकंन कार्य किया है।

(भेटवार्ता पर आधारित)

चित्रसंख्या 12:– यह धनवादी शैली का चित्र है। जिसे जल रंग से बनाया गया है। यह चित्र संयोजन है। जिसमें दो स्त्री और पुरूष हैं। दोनों स्त्रियां आपस में बाते कर रही हैं। जिसमें एक स्त्री शान्त हैं जबकि दूसरा पुरूष और स्त्री उसे कुछ समझा रहे है। चित्र को आपने अपनी जल रंग विशेषता के अनुसार बनाया है। चित्र में पारदर्शक जल रंग भरे गये है।

<u>चित्रसंख्या 13:–</u> यह चित्र धनवादी शैली में बना है। जिसका शीर्षक शिव आराधना है। यह तैल चित्रण है। चित्र का विषय लोकशैली से प्रेरित है लेकिन इसे बनाया आधुनिक शैली में है। चित्र में एक स्त्री तानपुरा लिये हुये शिव आराधना में लीन है। पास ही शिवलिंग बना हुआ है। स्त्री की भावभंगिमा अस्पष्ट है। चित्र में हल्के और सौम्य रंग प्रयोग किये गये है।

<u>चित्रसंख्या 14:–</u> यह अभूर्त शैली में बनाया गया चित्र संयोजन है। इसे तेलरंग से बनाया गया है। चित्र में एक स्वस्थ पुरूष को बनाया गया है। पुरूष का आधा शरीर बना है। तथा आधा भाग को हरे रंग से चित्रित किया गया है जो स्वस्थ और आशावादीता को दर्शाता है। चित्र में हरे रंग से पेड़ पौधे बनाये गये है। कहीं कहीं फल बने हुये है। जो स्वस्थ को दर्शा रहे है। चित्र हमें स्वस्थ की प्रेरणा दे रहा है।

<u>चित्रसंख्या 15:–</u> यह चित्रफलक लोक शैली का है। जिसे आधुनिक और लोकशैली के मिश्रित शैली में बनाया गया है। चित्र में आकाश पाताल और पृथ्वी तीनों लोकों को दिखाया गया है। चित्र में पेड़ के नीचे कृष्णजी बैठे है। जो बांसुरी बजा रहें है। दूर कहीं राधा का चित्र बना है। जो बांसुरी की आवाज पर दौड़ी हुई चली आ रहीं है। नीचे पाताल में शेषनाग बने हुये है। जो अपने फन के ऊपर मन्दिर को सम्हाले हुये है। मन्दिर की संख्या तीन है। दूसरी तरफ मोर पंख बना हुआ है। जिसमें कृष्ण और उनकी गाय की आकृति बनी है। आकाश में उड़ते हुये पक्षियों का जोड़ा है। यह सभी चित्र कृष्ण से सम्बन्धित है। चित्र में गहरे और चटक रंग प्रयोग किये गये है।

<u>चित्रसंख्या 16:–</u> यह आधुनिक और लोकशैली का मिश्रित शैली का चित्र है। जिसे मिश्रित माध्यम में बनाया गया है। चित्र में तीन स्त्रियां बनी हुई है। जिसमें मां और उसकी दो बेटियां बनी हुई है। वह खेत से काम करके लौट रही है। मां के सर के ऊपर घास का गठ्ठा है। चित्र को ब्लेड में रंग लगाकर बनाया गया है। चित्र में स्त्रियों के चेहरे के भाव बहुत ही सुन्दर हैं छोटी लड़की

के चेहरे की मासुमियत अलग ही दिख रही है।

चित्रसंख्या 17:– चित्र का विषय लोकशैली का है। लेकिन इसे बनाया गया है आधुनिक शैली में , यह चित्र गणेश जी का है। जिसे मिश्रित माध्यम में बनाया गया है। यह एक्रेलिक और तेल रंग से बना है। जिसे ब्लेड से बनाया गया है। चित्र को धनवादी शैली में बनाया गया है। चित्र को केनवास पर बनाया गया है।

चित्रसंख्या 18:– यह चित्र संयोजन है जिसका शीर्षक नृत्य हैं चित्र को जल रंग से बनाया गया है चित्र में राधा और कृष्ण नृत्य कर रहे हैं। संग में ग्वाल और गोपीयां भी है जो नृत्य कर रहे है। कृष्ण को नीले रंग से बनाया गया है। चित्र श्रंगार रस से ओत प्रोत है। आकृति सपाट बनी हुई है। उनमें कोई भी उभार नहीं दिया गया है। चित्र में सरल और सौम्य रंग भरे गये है।

चित्रसंख्या 19:– चित्र एक प्रकृति चित्रण है। जिसे जल रंग से बनाया गया है। चित्र किसी पुराने खण्डहर का है। जो अब जरजर हालत में है। जल रंग से बनाया गया है। चित्र बहुत सुन्दर बन पड़ा है।

चित्रसंख्या 20:– चित्रफलक एक स्त्री का चित्र है जिसका शीर्षक करूण पुकार है। चित्र जल रंग से बना है। यह एक नग्न स्त्री का चित्र है। जिसकी स्थिति दयनीय है। स्त्री अपने हाथ उठाये भगवान से करूणा पुकार कर रही है। स्त्री बहुत दुखी है। स्त्री के पीछे अन्धेरा दिखया गया है। दूर कहीं कोने में हल्की सी पीले रंग की रोशनी हो रही है।

चित्रसंख्या 21:– चित्रफलक लोकशैली और आधुनिक शैली को मिलाकर बनाया गया है चित्र का शीर्षक पर्यावरण है। चित्र पर्यावरण पर आधारित है जिसे हार्डबोर्ड पर थर्माकोल चिपकाकर बनाया गया है। चित्र को जल रंग और तेल रंग दोनों मिलाकर मिश्रित माध्यम में बनाया गया है। चित्र में जमीन , पानी और वन तीनों को दिखाया गया है स्त्री की तुलना पेड़ से की गई है। और पुरूष को जमीन के रूप में दिखाया गया है। सूरज और चांद को प्रतीक चिन्हों

के रूप में दिखाया है। स्त्री और पुरूष को प्रकृति के प्रतीक चिन्ह के रूप में दिखाया गया है कि यह एक दूसरे के बिना अधूरे हैं। पेड़, पानी और जमीन मिलकर जिस प्रकार समूचा वातावरण बनाते हैं उसी प्रकार स्त्री , पुरूष और बच्चों का परिवार बनता है।

चित्रसंख्या 22:– चित्र संयोजन तेल रंग से केनवास पर बनाया गया है। जिसमें दो स्त्री आपस में एक दूसरे से सटी हुई बैठी हैं। एक स्त्री अर्द्धनग्न है। और वह चुनरी से अपने आपको ढके हुये हैं, दोनों स्त्री विचार की मुद्रा में है।

चित्रसंख्या 23:– निम्न चित्रफलक लक्ष्मण द्वारा बनाया गया रेखा चित्र है। जिसे पेन्सिल से बनाया गया है। यह स्त्री का रेखा चित्र है।

चित्रसंख्या 24:– चित्रफलक लक्ष्मण भाण्ड द्वारा बनाया गया श्वेत श्याम चित्र है। जिसे आपने पत्रिका के लिये बनाया था। जिसका शीर्षक **कालिदास समारोह** है।

सचिदा नागदेव

सचिदा नागदेव एक प्रभावशाली वरिष्ठतम कलाकार है जो किसी पहचान के मोहताज नहीं हैं। आपकी कला बोलती है। जो सामाजिक जीवन और परिवेश से जुड़ी हुई है। आप चित्रकारी की दुनिया का जगमगाता सितारा हैं। जो दुनिया के बड़े बड़े शहरों में अपनी रोशनी फैलाये हुये है।

जीवन परिचयः– सचिदा नागदेव का जन्म 25 अक्टूबर 1939 को उज्जैन में हुआ था। आपकी आरम्भिक शिक्षा उज्जैन से हुई। आपने ललितकला की शिक्षा भारती कला भवन उज्जैन से ली। आपने 1961 में बोम्बे के जे.जे. स्कूल कला से जी.डी. चित्रकला का डिप्लोमा लिया। आपने विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन से प्राचीन भारतीय इतिहास एवं परिवेश में परास्नातक किया। इसके बाद 1970 में चित्रकला में परास्नातक किया । आपके कला गुरू वी. एस. वाकनकर है। आप एक अच्छे घर से सम्बन्धित होने के कारण आपका पालन पोषण अच्छे ढंग से हुआ। आपको किसी भी चीज की कमी नहीं रही। 1976 में मध्यप्रदेश सरकार द्वारा आपको अमृता शेरगील छात्रवृत्ति पुरस्कार से नवाजा गया। भारत सरकार द्वारा आपको वरिष्ठतम कलाकार छात्रवृति पुरस्कार दिया गया। आपको मध्य प्रदेश सरकार द्वारा **''शिखर सम्मान''** द्वारा सम्मानित किया गया। आप ललित कला अकादमी , नई दिल्ली के सदस्य भी रह चुके हैं। इसके अतिरिक्त आप भारत भवन के रूपांकर म्युजियम , नागपुर दक्षिण संस्कृत केन्द्र और मध्य प्रदेश राज्य कला अकादमी के सलाहकार पद पर रह चुके हैं। आप दिल्ली में भी 2 वर्ष तक रहें और एक मुक्त कलाकार के रूप में काम किया।

आपने अनेक समूह और एकल प्रदर्शनी की है , जिसमें आपने अनेक

पुरस्कार प्राप्त किये है। जिसमें मुख्य पुरस्कार जापान की यामुरी टेलीस्टिग द्वारा दिया गया **युसका टरनल** है। आपने भारत, नेपाल, यूरोप, जापान का भ्रमण किया। आपके कला संग्रह कोनटेम्पोरेरी कला संग्रहालय ओसाका जापान, नेशनल मार्डन आर्ट गैलरी नई दिल्ली, ललितकला अकादमी नई दिल्ली, मार्डन आर्ट और गेलरी जयपुर , बिरला आर्ट अकादमी कलकत्ता, स्टेट आर्ट गैलरी भोपाल और ग्वालियर, श्री चित्रायंन कला संग्रहालय केरला, रूपांकर संग्रहालय भारत भवन , भोपाल, एयर इण्डिया कलेक्सन बोम्बे आदि में है। आपने बंगलौर, जर्मनी, नई दिल्ली, चैन्नई, भोपाल, पाण्डुचेरी, बम्बई, मद्रास, इन्दौर, उज्जैन, जापान, दुबई, फ्रॉन्स, काठमाण्डु आदि में करीब 60 एकल प्रदर्शिनी की है।

सचिदा नागदेव की चित्रकला:- आप एक उत्कृष्ट कलाकार है। आपने पारम्परिक कला से लेकर आधुनिक कला तक सभी शैली में चित्रकारी की है। इस समय आप आधुनिक शैली में कार्य कर रहे हैं। आप अपने जीवन के आरम्भ में मिनिएचर विषय पर चित्रण कार्य अधिक किया। आपने भारतीय मिनिएचर , पहाड़ी चित्रकला का चित्रण अधिक किया है। आपने पारम्परिक कलाओं से लेकर अजन्ता, मुगल तथा यूरोपीय कला तक सभी विधाओं में कार्य किया है। सन्तुलित रेखा और गहरे रंग हमेशा आपकों प्रभावित करते है। आधुनिक शैली में आप अमूर्त चित्रण करना पसन्द करते है आपकों अमूर्त चित्रण करना पसन्द है। और उसमें नये नये प्रयोग भी करते है।

चित्रकला के विषय:- आपने सभी तरह के विषयों पर चित्रकारी की है। आपकी चित्रकारी के विषय पारम्परिक भारतीय चित्रकला के होते थे। आपने प्रकृति चित्रण भी किया है जैसे उगता हुआ सूरज, डूबता हुआ सूरज, सुबह की रोशनी, घास के ऊपर पड़ने बाली रोशनी, नई उगी हुई घास का रूप, पत्थर बृहमाण्ड आदि आपने यथार्थ घटनाओं का भी चित्रण किया है जो उस समय हो

रही है। जैसे आतंकवाद, भोपाल गैस काण्ड आदि। आपने मृत्यु विषय को लेकर भी चित्रण किया है। जिसमें आपने जन्म से लेकर मरण तक को दर्शाया है।

चित्रण की तकनीकः– सचिदा नागदेव ने माध्यम के तौर पर पेन, पेन्सिल, तेलरंग, जलरंग, एक्रिलिक व व चारकोल आदि सभी को अपनाया है। आप चटक, गहरे और भड़कीले रंगों का प्रयोग ज्यादा करते है। आपने केनवास हार्डबोर्ड कागज पर चित्रण कार्य किया है। रंगों को आप तूलिका, चाकू, बड़ेब्रश आदि से लगाते है।

(भेंट वार्ता पर आधारित)

चित्रसंख्या 25:– यह चित्रसंख्या आधुनिक शैली में बनाया गया है। जो प्राकृतिक आपदा पर आधारित है। यह भोपाल में घटित भोपाल गैस काण्ड पर आधारित चित्र है। जिसमें हजारों लोगों की जान गई। कई विकलांग हो गये। और उनमें कई रोग पनपे। उसी का यह चित्र है। यह तेल चित्रण हैं चित्र में सुरज लाल है आकाश में काले बादल छायें हुये। आकाश में गहरापन है। शरीर से आत्मा निकलकर आकाश में विचरण कर रही है। और ऊपर आकाश से उस आपदा को निहार रही है।

चित्रसंख्या 26:– यह अमूर्त शैली में बनाया गया है जिसे केनवास पर तेल रंग से बनाया गया है। यह एक प्रकृति चित्रण है जिसमें पेड़, पहाड़, घर, पक्षी आदि बने हुये हैं। चित्र को बड़े तूलिका घात से बनाया गया है।

चित्रसंख्या 27:– चित्रसंख्या एक अमूर्त शैली में बनाया गया है जिसे केनवास पर तेलरंग से बनाया गया है। यह प्रकृति दृश्य है। जिसमें सचिदा जी ने उगी नई नई कोमल घास को बनाया है। चित्र में सुन्दर चटक गहरे हरे रंग का प्रयोग किया गया है।

चित्रसंख्या 28:– यह चित्र भी अमूर्त शैली में बनाया गया है जो प्रकृति चित्रण है। जिसे तेलरंग से केनवास पर बनाया गया है। इसमें सूरज को उगते

हुये व डूबते हुये दिखाया गया है। उगता हुआ सूरज और डूबता हुआ सूरज लालिमा लिये हुये है। वही उन्होने बनाया है। सचिदा जी ने सूरज के दोनों ही रूपों को दिखाया है।

चित्रसंख्या 29:– यह प्रकृति चित्रण है जिसे अमूर्त शैली में बनाया गया है। यह तेलरंग से केनवास पर बनाया गया है। कहीं कहीं पेस्टल रंगों का भी प्रयोग किया गया है। इसमें गांव का दृश्य, सूरज पेड़, पानी आदि को बनाया गया है। इसमें तेज गहरे चटक मुख्य रंगों का प्रयोग किया गया है। यह रंग लाल, हरे पीले सफेद व काला है।

चित्रसंख्या 30:– यह चित्र संयोजक है। इसे तेलरंग से बनाया गया हैं जिसमें तीन स्त्रियों का चित्र हैं जो कश्मीर के वस्त्र पहने हुये है। स्त्रियों नदी के किनारे खड़ी है। पास ही पानी बह रहा है। पीछे पहाड़ियों वर्फ से घिरी हुई है। कुछ मकान भी बने हुये। स्त्रियां बहते हुये पानी को देख रही है। चित्र को गहरे तूलिक घात से बनाया गया है। चित्र में चटक रंगो का प्रयोग किया गया है।

चित्रसंख्या 31:– यह एक स्त्री का चित्र है जो पहाड़ी शैली में बना हुआ है। चित्र को छोटे छोटे तूलिका घात द्वारा बनाया गया है। जो बिन्दुवादी शैली से बना हुआ है। स्त्री के पीछे प्रकृति दृश्य बना हुआ है। स्त्री शाल ओड़े खड़ी हुई है। वह एकटक निहार रही है। जैसे किसी को देख रही है।

चित्रसंख्या 32:– यह चित्र यूरोपियन विषय का है। जो यथार्थ शैली में बनाया गया है। चित्र में जंगल का दृश्य है। जिसमें एक लड़का पेड़ के नीचे बैठा है, और वाद्ययन्त्र बजा रहा है। लड़का वाद्ययन्त्र बजाने में लीन है। उसका वाद्ययन्त्र सुनकर जंगल के सभी जानवर उसके पास आकर बैठ गये है। और मग्न होकर संगीत सुन रहे हैं। चित्र में भेड़ , बकरी, हिरन, शेर, चीता आदि सभी बने हुये है।

चित्रसंख्या 33:– यह एक पौराणिक चित्र है जिसकों जलरंग द्वारा कागज पर बनाया गया है। चित्र में एक देव कन्या सितार बजा रही है। आकाश में बादल छा रहे है। ऐसा लगता है कन्या मेघ मल्हार गा रही है जिससे बादल आकाश में छा रहे हैं कन्या के पीछे एक दरवाजा बना हुआ है। जिसके बाहर कुछ स्त्री आपस में बातें कर रहीं है। बाहर बनी बालकनी से दूर कहीं एक महल दिख रहा है। चित्र में हल्के और पारदर्शक रंगों को प्रयोग किया गया है।

चित्रसंख्या 34:– यह पहाड़ी दृश्य का चित्र है। जिसे तूलिका घात से बनाया गया है। चित्र में एक स्त्री बनी हुई है। जो अपनी गोद में बच्चे को लिये हुये है। पीछे एक इमारत बनी हुई है। उसके पास ही पेड़ बने हुये है। जिनके पास एक झोपड़ी है। जिसमें दो साये बने हुये है।

चित्रसंख्या 35:– निम्न चित्रसंख्या प्रकृति चित्रण है। जिसे तेल रंग से केनवास पर अमूर्त शैली में बनाया गया है। चित्र पीले रंग से बनाया गया है। जिसमें सूरज को और उसकी गर्मी को दिखाया गया है। कहीं कहीं बादल दिख रहे है जो सफेद रंग से बने हुए है।

चित्रसंख्या 36:– निम्न कलाकृति को अभूर्त शैली में बनाया गया है । कहीं कहीं चित्र में यथार्थ शैली भी दिख रही है। चित्र प्रकृति वायु मण्डल का दॄश्य हैं जिसमें आकाश से उल्का पिण्ड गिरते हुये बनाये गये है। कुछ पत्थर को स्त्री के रूप में दिखाया गया है। चित्र केनवास पर तेलरंग से बनाया गया है।

चित्रसंख्या 37:– निम्न कलाकृति प्रकृति चित्रण है। जिसे अमूर्त शैली में बनाया गया है। चित्र में भूमि, पेड़, आकाश को दिखया गया है। तथा चित्र में कत्थई व सफेद, नारंगी व नीले रंगों का प्रयोग हुआ है।

स्व0 सुशील पॉल

भारत के कला जगत में स्व0 सुशील पॉल एक सुप्रसिद्ध कलाकार थे। जिनकी प्रतिभा के चिन्ह आज भी भारत के कई शहर में है। कला जगत में आपका विशिष्ट योगदान है। आपने चित्रकार के रूप में कई महत्वपूर्ण कार्य किये व छात्र छात्राओं का मार्ग दर्शन किया।

जीवन परिचयः– स्व0 सुशील पॉल का जन्म 15 जून 1917 में पूर्वी बंगाल के फर्रदपुर में हुआ था। कलकत्ता के हिन्दु स्कूल से आपने अपनी प्राथमिक शिक्षा पूरी की। एक बार जब आप अपने चाचा प्रमोद राजन पॉल के साथ शान्ति निकेतन गये। तो वह वहाँ नन्दलाल बोस से मिले। वहाँ नन्दलाल बोस और उनके चाचा ने उन्हें कला के लिये प्रोत्साहित किया। उसके बाद आपने कलकत्ता के राजकीय कला स्कूल से 6 वर्ष का ललित कला का डिप्लोमा आपने प्राप्त किया। जोकि आपने प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया। और वहाँ से कला में वजीफा भी जीता। उसके बाद आप कलकत्ता की पूर्वीकला भारतीय सँस्था से आप जुड़े और भारतीय कला का 2 साल का डिप्लोमा प्राप्त किया। जहाँ आपने काशीनाथ मजूमदार के मार्गदर्शन में चित्रकारी का अध्ययन किया। और रवीन्द्रनाथ टैगोर, गगेन्द्रनाथ टैगोर और गिरधारी मोहापात्रा से मार्ग दर्शन प्राप्त किया। हिन्दु महासभा सत्र कलकत्ता के लिये पंडाल की सजावट की और राष्ट्रीय नेताओं के व्यक्ति चित्र बनाये। आप कलकत्ता में हेमन्त मजूमदार और जू पिओन (चायना) की चित्र प्रदर्शिनी को देखकर आप प्रभावित हुये। इतिहास लेखक स्टेला क्रेमरिस , शशी कुमार सरस्वती , निरंजन राय और देवी प्रसाद घोस की देखरेख में आपने "कला मूल्यांकन" विषय का एक साल का कोर्स किया कलकत्ता के अशुतोष म्यूजियम में आपने कलाकार की भांति कार्य किया। जहां आपने सिगरिया गुफा का बड़े आकार का चित्र फ्रेसको विधि मे

बनाया। कलकत्ता विश्वविद्यालय की भौगोलिक संस्था में आपने कलाकार के रूप में कार्य किया। महानगर प्रचार, आदर्श प्रचार और दूसरी ब्रिट्रिश फार्म के साथ आपने व्यवसायिक कलाकार के रूप में कार्य किया।

आप कई सरकारी और गैर सरकारी स्कूलों में अध्यापक के पद पर रहे। आपकों कई माननीय व्याक्तियों द्वारा अध्यापन कार्य के लिये आमंत्रित भी किया गया। आपने म0प्र0 के मंत्री डा0 शंकर दयाल शर्मा के कहने पर सरकारी स्कूल में ललित कला संस्थान का प्रारम्भ किया। वहां आप ललितकला के प्रोफेसर रहे। आपने शिक्षा मंत्री शंकर दयाल शर्मा के कहने पर ही महारानी लक्ष्मीबाई कन्या महाविद्यालय में ललितकला विषय का प्रारम्भ किया। जहाँ आपने 100 से अधिक मेधावी छात्रों का मार्गदर्शन किया। यहाँ आप विभागाध्यक्ष भी रहे। आपने कई सम्मानीय व्यक्तियों को चित्रकारी भी सिखाई। जैसे भोपाल के कमिश्नर के.पी. भार्गव, नोयल बेनर्जी आदि। आपको कई जगह आपकी प्रदर्शिनी के लिये भी आमंत्रित किया गया। आप ललित कला की विभिन्न शिक्षण संस्थाओं और समिति के सदस्य भी रहे हैं जैसे कि ललित कला विभाग , विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन , भोपाल विश्वविद्यालय मध्य प्रदेश , जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर, इन्दौर विश्वविद्यालय प्राधोगिक शिक्षण संस्था , मध्य प्रदेश बोर्ड भोपाल, मध्य प्रदेश कला परिषद, मध्य प्रदेश टेस्ट बोर्ड र्कोपरेशन आदि।

1977 में आप महारानी लक्ष्मीबाई कन्या महाविद्यालय से आप सेवानिवृत्व हुये। 1933 से 1999 तक के सफर में आपने कई एकल प्रदर्शनी और कई समूह प्रदर्शिनी की। और कई कला शिविर में आपको आमन्त्रित किया गया।

आपने कलकत्ता, रानीखेत, इन्दौर, साँची, भोपाल, काठमॉण्डु, पचमढ़ी, शिमला, मुम्बई आदि में कई एकल प्रदर्शिनी लगायी। तथा सम्पूर्ण भारत और उसके कई जिलों में समूह प्रदर्शिनी में शिरकत भी लिया। जिनमें कलकत्ता दिल्ली, पटना, हैदराबाद, ग्वालियर, भोपाल, खैरागढ़, पचमढ़ी आदि मुख्य है। आपको कई कला शिविर में भी बुलाया गया , जैसे कि 1978 में इन्द्ररा कला

संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ (म0प्र0) में आपको ग्रीष्मकालीन सत्र में 'कला की मुख्य' विषय में भागीदारी के लिये आमंत्रित किया गया। उत्तर मध्य जिला संस्कृति केन्द्र इलाहाबाद द्वारा पंचमढ़ी में आयोजित कला शिविर 1962 में दिल्ली के गर्वनर भगवान सहाय ने आपको चित्रकारी के लिये आमंत्रित किया। इसके अतिरिक्त आपको कई सम्मान और पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है। जिसमें मुख्यतः कलकत्ता की ललितकला अकादमी द्वारा दिया गया कास्य पदक। 1941 में हैदराबाद द्वारा दिया गया राजाराम देव स्वर्ण पदक जलरंग भूमि चित्रण के लिये, कमलायर जग चांदी का पदक सर्वश्रेष्ठ पश्चिमी शैली की कलाकृति बनाने के लिये दिया गया। नई दिल्ली AIFACS द्वारा प्रदान किया वरिष्ट कलाकार सम्मान जिसमें आपको चांदी की प्लेट और अंग वस्त्र प्रदान किया गया। मध्य प्रदेश सरकार द्वारा प्रदान किया गया शिखर सम्मान आदि। आपके चित्रों का संग्रह अशुतोष म्यूजियम , कलकत्ता , जिला स्तर संग्रहालय भोपाल, प्रादेशिक शिक्षण संस्था भोपाल, म0प्र0 पुलिस भोपाल, महारानी लक्ष्मीबाई कन्या महाविद्यालय भोपाल , हमिदिया कालेज भोपाल , शिक्षा मण्डल अजमेर, यूनियन कार्बाइड इण्डिया लिमिटेड तथा विट्रेनिया हाउस आदि में है।

आप इतने महान चित्रकार थें। किन्तु जब में आपसे मिलने भोपाल पहुंची तो यह मेरा दुर्भाग्य था कि में आपसे नहीं मिल पाई। क्योंकि मेरे भोपाल पहुंचने से दो दिन पहले ही आपका इन्तकाल हो चुका था 13 सितम्बर 2006 को आप पंच तत्व में विलीन हो चुके थे।

सुशील पॉल की चित्रकला:- आपकी ख्याति सम्पुर्ण भारत में वरिष्ठतम समकालीन चित्रकार के रूप में हैं। आपने जलरंग, तैलरंग में अधिक कार्य किया है। आपको प्रकृति चित्रण करना ज्यादा अच्छा लगता था आपके चित्रों में रंगों का संयोजन बहुत ही सुन्दर होता था आपने लगभग सभी शैलियों में काम किया है। आपने धनवादी शैली, अमूर्त शैली , परम्परागत, लोककला, शास्त्रीय शैली

सभी में कार्य किया है। आप नन्दबोस से प्रभावित थे लेकिन आपने किसी की नकल नहीं की। आपने अपनी नयी शैली विकसित की और अपनी अलग पहचान बनायी। आपने किसी की नकल नहीं की।

चित्रों की तकनीकः– आपने अपनी चित्रकारी में प्रयोग बहुत कम किये है। आप चित्रों को सीधे तूलिका से बनाते थे। उसमें हाथ या अन्य किसी माध्यम का प्रयोग बहुत कम करते थे। आपने चित्रों को कागज, केनवास तथा हार्डबोर्ड पर बनाया। आपने टेम्परा में भी कार्य किया। चित्रों में रंग का प्रयोग सामान्य रूप से करते थे। रंगों में वह प्रयोग नहीं करते है।

चित्रों का विषयः– आपने व्यक्ति चित्रण प्रकृति चित्रण , वस्तु चित्रण , भूमि चित्रण तथा चित्र संयोजन सभी बनाये थे। आपके चित्रों के विषय सामान्य जीवन से ही लिये गये थे। आपने अपने चित्रण में महारानी लक्ष्मीबाई, बाल गंगाधर तिलक, महात्मा गांधी , कमला नेहरू, पद्मनी , बुध, फूल, पत्ति, बगीचे, पेड़ , पुराने खण्डर, पुराने किले, महल, झीलों के कोने, तालाब, ट्रेन , मस्जिद, शहरों के दृश्य, जंगल के दृश्य आदि सभी बनाये।

रंग योजनाः– आपकी चित्रकारी में रंग योजना बहुत ही सुन्दर थी चित्रों में प्रकृति के मुख्य रंगों का प्रयोग किया गया जैसे हरा, नीला, आसमानी, पीला, लाल आदि। चित्रों में हरे रंगों का प्रयोग अधिक किया गया। आप चित्रों में गहरे चटक रंगों का प्रयोग करते थे। चित्रों में रंगों को उनके वास्तविक प्राथमिक रंगों के रूप में लगातें थे।

(भेटवार्ता पर आधारित)

चित्रसंख्या 38:— निम्नलिखित कलाकृति प्रकृति चित्रण है। जिसका शीर्षक पूजा है। चित्र को तेल रंग से केनवास पर बनाया गया है। चित्र में समुद्र किनारे की गई पूजा को दर्शाया गया है। जिसमें तीन नारियल , गेदें , कनेर और गुड़हल के फूल चढ़ाये हुये हैं। जिन्हें पूजा अर्चना के बाद जल में प्रवाहित किया गया है। आसमान गहरा नीला व पीला आसमान है। चित्र में हल्के सौम्य तूलिका घात का प्रयोग किया गया है।

चित्रसंख्या 39:— चित्रफलक एक स्त्री का व्यक्ति चित्रण है जिसे केनवास पर तेलरंग से बनाया गया है। यह व्यक्ति चित्र सुशील पाल की अर्द्गनी का (पत्नि) है। चित्र में आपकी पत्नि के चेहरे पर हल्की सी मुस्कुराहट है और वह शरमाकर चेहरे झुकाये हुये है।

चित्रसंख्या 40:— यह चित्रण एक भूमि चित्रण है। जिसमें हरा भरा वातावरण है। चारों तरफ पेड़ पौधे घास हैं और बीच में एक मकान बना हुआ है। चारों तरफ हरियाली फैली हुई है। चित्र को तेलरंग से केनवास पर बनाया गया है।

चित्रसंख्या 41:— निम्न चित्र एक प्रकृति चित्रण है। जिसमें फल का बगीचा बनाया गया। जिन पर फल लगे हुये। फल लाल रंग के है। जो शायद सेब है। चित्र को आधुनिक शैली में बनाया गया है। फल और पत्ती स्पष्ट नहीं बने है। रंगों को लगाने में कठोर सघन तूलिका घात का प्रयोग किया गया है चित्र को हार्डबोर्ड पर तेलरंग से बनाया गया है। रंग को बिना मिलाये फलक पर लगाया गया है।

चित्रसंख्या 42:— चित्रफलक वस्तु चित्रण है। चित्र में एक फूलदान बना हुआ है। जिसमें विभिन्न प्रकार के फूल लगे हुये हैं। जो लाल, गुलाबी व सफेद रंग के है। चित्र में आस पास का धरातल हरें और नीले रंग से बनाया गयाा है। चित्र में रंग संयोजन बहुत ही सुन्दर हैं। चित्र को केनवास पर तेलरंग से बनाया गया है। चित्र में कठोर तूलिका घात का प्रयोग किया गया है।

<u>चित्रसंख्या 43:–</u> निम्न चित्र का शीर्षक <u>शान्त सड़के</u> हैं। जिले धनवादी शैली में बनाया गया है। चित्र तेलरंग से केनवास पर बनाया गया हैं। रंगों को छोटे छोटे फलकों के रूप में लगाया गया है। चित्र में शहर का रात्रि का दृश्य हैं सड़कें शान्त व खाली है। कहीं उजाला कही अन्धकार फैला हुआ है। चित्र में गहरे व धुंधले रंगों का प्रयोग है।

<u>चित्रसंख्या 44:–</u> चित्रसंख्या प्रकृति चित्रण है। जिसका शीर्षक <u>''लकड़ी का रास्ता''</u> है। चित्र उत्तर प्रभाववादी शैली में तेलरंग से केनवास पर बनाया गया है। रंगों को छोटे छोटे फलकों में लगाया गया है। चित्र में जंगल का दृश्य हैं चारों तरफ हरियाली फैली हुयी है पेड़ एक कतार में लगे हुये है। उन्हीं के बीच से जंगल का रास्ता है।

<u>चित्रसंख्या 45:–</u> निम्न चित्रसंख्या भूमि चित्रण है। जिसमें पहाड़ का दृश्य है। संध्या के समय पहाड़ का सौन्दर्य दिखाया गया है। सूरज की पीली रोशनी में छोटी छोटी पहाड़ियों का सौन्दर्य और निखर रहा है। चित्र को तेलरंग से केनवास पर बनाया गया है।

<u>चित्रसंख्या 46:–</u> निम्न कलाकृति प्रकृति दृश्य है। जिसकों उत्तर प्राभाववाद शैली में बनाया गया है। चित्र में दृश्य को किसी ऊंचे स्थान पर बैठ कर बनाया गया। दूर कहीं एक किला है। पास ही छोटा सा जंगल है। जिसमें बीच बीच में कहीं कहीं पहाड़ी है। जंगल में यदाकदा एक दो झोपड़ी है। चारों तरफ हरियाली फैली हुई है। चित्र को केनवास पर तेलरंग से बनाया गया है।

<u>चित्रसंख्या 47:–</u> निम्न फलक अमूर्त शैली में बनाया गया प्रकृति चित्रण है। जिसमें एक बार फिर उन्होने जंगल के पेड़ पौधो को चिन्हित किया गया है। चित्र हार्डबोर्ड पर तेलरंग से बनाया गया है।

<u>चित्रसंख्या 48:–</u> निम्न कलाकृति बृहमाण्ड का चित्रण जिसमें यर्थाथ चित्रण किया हैं चित्र को केनवास पर तेलरंग से बनाया गया। निम्न कलाकृति में सूरज को बनाया गया है। जिसमें सूरज को आग में दहकले हुये दिखाया

गया है। सूरज लाल रंग से बना है आस पास अन्य गृह है।

चित्रसंख्या 49:– निम्न कलाकृति स्त्री चित्रण है। जिसमें नजरे झुकाये हुये स्त्री बनी हुई है। स्त्री जुड़ा बनाये सफेद रंग ब्लाउज पहने व नीले रंग की साड़ी पहने चित्रित है। चित्र को पेस्टल रंग से कागज पर बनाया गया है।

चित्रसंख्या 50:– चित्र प्रकृति चित्रण है। जिसमें गेंदे के फूल व अन्य प्रकार के पीले रंग के फूल चित्रित हैं। यह प्रकृति चित्रण यर्थाथ में कही बैठकर बनाया गया है। वातावरण हरा भरा है। चित्र को केनवास पर तेल रंग से बनाया गया है।

सुरेश चौधरी

समकालीन चित्रकारों में सुरेश चौधरी अपना विशिष्ट स्थान रखते है। आपने काफी कम समय में ही अपनी प्रसिद्धि पा ली। और अपनी पहचान बनाई। आप एक अर्से से समकालीन कला में अपना योगदान दे रहें है। आपने विदेशों में भी भारत का नाम रोशन किया है । आप बहुत ही सजग और अनुभवी कलाकार है।

जीवन परिचयः– सुरेश चौधरी का जन्म 1943 में इन्दौर में हुआ था। आप एक अच्छे घर से सम्बन्धित होने के कारण आपकी शिक्षा अच्छे ढंग में हुई। आपने इन्दौर से अपनी शिक्षा पूरी की। उसके बाद इन्दौर के ही कला स्कूल से आपने ललितकला में डिप्लोमा लिया। बोम्बे के जे.जे. आर्ट स्कूल से आपने जी.डी. आर्ट का डिप्लोमा किया। आपने इन्दौर से कला में परास्नातक किया। इसके बाद आपने कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा। आपने अनेक चित्र प्रदर्शिनीयां लगाई कई चित्रकला प्रतियोगिता में भागीदारी की और पुरस्कार प्राप्त किये। उसके बाद आपने विदेशों का भी भ्रमण किया और वहाँ अपने चित्रों की प्रदर्शिनी लगाई और सम्मान प्राप्त किया। आप कई कला समिति के सदस्य और सलाहकार भी रहे है।

आपने मुख्यतः अहमदाबाद , जम्मू और कश्मीर , नई दिल्ली, कलकत्ता, भोपाल , मुम्बई आदि में अनेक एकल प्रदर्शिनी आयोजित की है। इसके अतिरिक्त आपने कई समूह प्रदर्शिनी में भागीदारी की है जैसे कि मध्य प्रदेश के इन्दौर, भोपाल, ग्वालियर आदि में आयोजित प्रदर्शिनी। इसके अतिरिक्त मध्य प्रदेश कला परिषद द्वारा आयोजित सम्पूर्ण भारत कलाकार शिविर, ललितकला अकादमी नई दिल्ली द्वारा आयोजित चित्रकला मूर्तीकला , छापाकला समूह

शिविर, कलिदास अकादमी, उज्जैन भोपाल भारत भवन छापा शिविर, ललितकला कन्दरा, पटना तथा सम्पूर्ण भारत कला प्रदर्शिनी कलकत्ता, दिल्ली, भोपाल द्वारा आयोजित प्रदर्शिनी में भागीदारी की। आपने 1978 में मध्य प्रदेश सरकार प्रदत्त अमृता शेरगिल पुरस्कार प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त वरिष्ट कलाकार और कलात्मक चित्रकारी का पुरस्कार भी आपने प्राप्त किया।

आप ललितकला अकादमी नई दिल्ली , नागपुर तथा रिशतरिया कला कन्दरा लखनऊ की सलाहकार समिति के सदस्य भी रह चुके है।

आपके कला संग्रह एअर इण्डिया बोम्बे , शिपला भारतीय तेल, यूनियन कार्बाइड बोम्बे, ललितकला अकादमी नई दिल्ली, मध्य प्रदेश भवन नई दिल्ली अमेरिका की बैंक मुम्बई नई दिल्ली कलकत्ता आदि इसके अतिरिक्त इग्लैण्ड, फ्रॉन्स, जापान, जर्मनी कनाडा, यू.एस.ए., स्वजरलैण्ड, यू.एस.एस.आर. आदि में आपके कला संग्रह है।

सुरेश चौधरी की चित्रकलाः– आपका चित्रकारी से लगाव बचपन से ही था। क्योंकि आपके घर में इस तरह का वातावरण था। आपकी माताजी ही तीज त्यौहार पर मांड़ना और भित्ति पर चित्रण करती थी। इसलिये आपकी चित्रकारी के आरम्भ में आप पर लोककला का प्रभाव था। बाद में आप अमूर्त शैली में चित्रण करने लगे। आप यर्थाथ चित्रण भी करते थे। लेकिन जब आप आन्तिरिक भावना को प्रधान रख चित्रण करने लगे तो यर्थाथ आपने आप ही खत्म हो गया और अमूर्त चित्रण बनाने लगा। लेकिन आपकी चित्रकारी में अब भी यर्थाथ का प्रभाव है। अमूर्त चित्रण में आपकों भूमि चित्रण करना पसन्द है। इसके अलावा आप घोड़ों का चित्रण भी अत्याधिक करते है। आपको घोड़ी के चित्र बनाना पसन्द है। आप बताते हैं जब आप पड़ते थे। तब आपके घर के पास एक स्टर्ट फार्म हाउस (घोड़ो का अस्तबल) हुआ करता था तब आप वहां देखते रहते थे। और उनका रेखा चित्र बनाते रहते थे। उसके बाद आपने उनकी

चित्रकारी भी की।

चित्रों का विषयः– आप अधिकतर भूमि चित्रण मावन चित्रण (जिसमें मुख्यतः) स्त्री को लेकर चित्रण, घोड़ों के ऊपर चित्रण तथा प्रकृति चित्रण करते हैं आपने लोककला के विषय पर भी चित्रण कार्य किया है। भूमि चित्रण में इमारतों, भवनों, मन्दिरों शहर के दृश्यों को आपने बनाया है।

रंग योजनाः– आपके चित्रों में रंगों का प्रयोग बहुत ही सुन्दर तरीके से किया गया है। आपके चित्रों में यह विशेषता है कि एक ही रंग को विभिन्न आयामों में लगाया गया है। जिससें सम्पूर्ण कलाकृति तैयार हुयी। अधिकतर कलाकृति में रंगों को गाढ़े लेप के रूप में लगाया है। चित्रों में चमकदार रंगों का प्रयोग किया गया हैं व गहरे रंगों का प्रयोग किया गया है।

चित्रों की तकनीकः– आपने तेल रंग से चित्रण अधिक किया है। चित्र प्रायः केनवास पर बने है। आपने जलरंग में कम कार्य किया आप रंगों का चित्रफलक पर प्रायः गाढ़े लेप में लगाते थे। रंगों को धरातल पर लगाने के विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का प्रयोग करते थे। जैसे की तूलिका, चाकू आदि चित्र में रंग संयोजन बहुत ही सुन्दर है चित्रों में तूलिका घात हल्का व लय में प्रयोग किया गया। सम्पूर्ण चित्र को एक ही रंग के विभिन्न तान में बनाया गया है।

(भेटवार्ता पर आधारित)

चित्रसंख्या 51:– यह भूमि चित्रण हैं जिसे अमूर्त शैली में बनाया गया है। चित्र तेलरंग से केनवास पर बनाया गया है। चित्र शहर का दृश्य है। जो रात के अन्धेरे में नीली रोशनी से नहाया हुआ है। दृश्य रात का है। चांद निकला हुआ है। आकाश में नीली रोशनी फैली हुई है एक ओर हल्की सी धुंध है शहर की बड़ी बड़ी इमारतें चित्र में दर्शायी गयी हैं।

<u>चित्रसंख्या 52:–</u> चित्रसंख्या अमूर्त शैली में बनाया गया भूमि चित्रण है। जिसे तेलरंग से केनवास पर बनाया गया है। यह भी शहर का दृश्य हैं जिसमें छोटी बड़ी इमारतें दिखाई दे रही है। चित्र में दिन का दृश्य है। चित्र कत्थई व काले रंग से धुंधलापन लिये हुये बनाया गया है।

<u>चित्रसंख्या 53:–</u> निम्न फलक भी अमूर्त शैली में बनाया गया। भूमि चित्रण हैं जिसमें सुरेश चौधरी ने शहर की बड़ी बड़ी इमारतों को दिखाया है। चित्र को नारंगी रंग बनाया गया हैं जिसमें यह पता चलता हैं कि चित्र का दृश्य संध्या के समय का हैं सूर्यास्ति से सम्पूर्ण वातावरण नारंगी रंग की चादर से ढक गया है।

<u>चित्रसंख्या 54:–</u> चित्रसंख्या अमूर्त शैली में बनाया गया है। जो किसी पहाड़ी का दृश्य है। चित्र को कथई रंग से नई तकनीक में बनाया गया है। चित्र केनवास पर बना है। चित्र में आकाश और पाताल दोनों को दिखाया गया है। पहाड़ी को जमीन के अन्दर और ऊपर दिखाया गया है।

<u>चित्रसंख्या 55:–</u> चित्रसंख्या अमूर्त शैली में बनाया गया हैं जिसें ध्यान से देखने से ऐसा पता चलता है। कि यह किसी पानी के जहाज का चित्र है और आसपास का वातावरण देखकर ऐसा लगता हैं कि यह परेशानी में है। आसपास का धरातल गहरे रंग से बना है। चित्र को आपने नवीनता लिये हुये बनाया है। चित्र एक्रिलिक रंगों द्वारा बना है।

<u>चित्रसंख्या 56:–</u> चित्रसंख्या अमूर्त शैली में बनाया गया है। जिसमें रंगों को विभिन्न तरीके से चित्र फलक पर लगाया हैं और प्रकृति में रंगों के सौन्दर्य को दिखाया है।

<u>चित्रसंख्या 57:–</u> निम्नलिखिल कलाकृति एक भूमि चित्रण हैं जिसें अमूर्त शैली में बनाया गया हैं चित्र तेल रंग से केनवास पर बना हुआ है। निम्न कलाकृति समुद्र के किनारे स्थित शहर की है। जो रात्रि में चाँद की रोशनी से नहाया हुआ है। सम्पूर्ण चित्र नीले रंग से व उसके विभिन्न शेड में बनाया हुआ

है।

<u>चित्रसंख्या 58:–</u> यह चित्र अमूर्त शैली में तेलरंग से केनवास पर बनाया गया है। जिसका शीर्षक **<u>रेस (दौड़)</u>** है। चित्र में घोड़ों को दौड़ते हुये विभिन्न रूपों में दिखाया गया है। चित्र में घोड़ों के अदभुत दृश्य है। चित्र में गहरे और धुंधले रंगों का प्रयोग किया गया है। चित्र में तूलिका संचालन कुशलतापूर्वक किया गया है।

<u>चित्रसंख्या 59:–</u> निम्नलिखित चित्र अमूर्त शैली में बनाया गया है। यह घोड़े की कलाकृति है। जिसे कुशल तूलिका संचालन द्वारा बहुत ही सुन्दर ढंग से बनाया गया है। तुलिका संघालन में लय है। चित्र को देखने से पता चलता है कि आपकों घोड़े बनाने का कितना पसंद हैं।

<u>चित्रसंख्या 60:–</u> निम्न चित्र अमूर्त शैली में बनाया गया है। चित्र दहकते हुई आग का है। कलाकृति किसी चपटी वस्तु या चाकू से बनायी गयी है। चित्र में गहरे लाल रंग व काले रंग का प्रयोग किया गया है। जो शायद लावा है।

अध्याय पंचम

भोपाल के समकालीन चित्रकारों में लोक कला का प्रभाव

5.1 - डी. डी. धीमान

5.2 - मंजूषा गांगुली

5.3 - रश्मि जोशी

5.4 - शोभा घारे

5.5 - प्रमोद राय

भोपाल के समकालीन चित्रकारों में लोककला का प्रभाव

5.1 - डी.डी. धीमान

5.2 -मंजूषा गांगुली

5.3 -रश्मि जोशी

5.4 - शोभा धारे

5.5 -प्रमोद राय

पंचम अध्याय

भोपाल के समकालीन चित्रकारों में लोककला का प्रभाव

डी.डी. धीमान

भारत के कला जगत में देवी दयाल धीमान का योगदान कम नहीं है। आप समकालीन चित्रकला में प्रसिद्ध कलाकार है जो प्रतिभावान व वरिष्ठतम चित्रकार है आप एक व्यक्ति चित्रकार के रूप में प्रसिद्ध है।

जीवन परिचयः– डी.डी. धीमान का पूरा नाम देवी दयाल धीमान है। आपका जन्म 1 मार्च 1937 को सिहोल जिले में हुआ था। आपकी शिक्षा इन्दौर ललितकला महाविद्यालय में हुई। आपने इन्दौर से 1963 में जी.डी. आर्ट का पंचवर्षीय कोर्स किया। 1977 में आपने परास्नातक किया। आपके गुरू इन्दौर के प्रो0 चन्देस कुमार सक्सेना है। आप अपने समय के काफी प्रसिद्ध व्यक्ति चित्रकार रहे है। जब भी आपके जिले में कोई प्रसिद्ध व सम्मानित व्यक्ति या अधिकारी आता था तो उसे आपके द्वारा बनाये गये व्यक्ति चित्र भेंट किये जाते थे। आपके जिले के कलैक्टर साहब आपकी प्रतिभा पहचानते थे। एक बार जब डॉ0 शंकर दयाल शर्मा आपके जिले में आये तो उन्होने आपकी कलाकृति देखी और आपके बारे में पूछा तब वह धीमान जी से मिले और बात की तब उन्होने कहा कि वह उन्हें जे.जे. स्कूल बोम्बे भेजना चाहते है। लेकिन उस समय वह किसी कारण वश वहाँ नहीं जा सके। उसके करीब दो साल बाद डॉ0 शंकर

दयाल शर्मा शिक्षा मंत्री बने तब आप जे.जे. स्कूल इन्दौर में अध्यापक के पद पर नियुक्त हुये। वहाँ आप पाँच साल तक अध्यापक पद पर रहे। उस समय बीच बीच में आप बोम्बे आते जाते रहे। आप भोपाल में अध्यापक पद पर रहे। अब अध्यापक के पद से आप सेवानिवृत्त हो चुके है। और लेखन का कार्य करते है। आपका अधिकतर समय लेखन कार्य में ही व्यतीत होता है।

डी.डी. धीमान की चित्रकलाः– आपकी ख्याति एक व्यक्ति चित्रकार के रूप में है। आपने हर विषय व शैली पर कार्य किया है। पारम्परिक, लोककला, आधुनिक शैली , प्रकृति चित्रण , व्यक्ति चित्रण तथा संयोजन सभी बनाये है। लेकिन आपकों व्यक्ति चित्रण करना और लोककला के ऊपर कार्य करना ज्यादा पसन्द है। आपके ऊपर लोककला का काफी प्रभाव है। यदि यह कहा जाये कि आप लोककला के कलाकार हैं तो अतिशियोक्ति न होगी। आपको बचपन से ही लोककला के ऊपर काम करना पसन्द है। क्योंकि आपके घर में ही इस तरह का काम होता था। इसके अतिरिक्त आपके ऊपर यामिनी राय का प्रभाव ज्यादा था। आपको उनके चित्र ज्यादा पसन्द है। प्रारम्भ में आपने लोककला के ऊपर चित्रण किया। परन्तु बाद में आप आधुनिक शैली में कार्य करने लगे। जो आपने अपने गुरू चन्देस कुमार सक्सेना से प्रभावित होकर किया। किन्तु आप कभी भी पूर्णतः आधुनिक शैली में चित्रांकन नहीं कर पाये। आपकी चित्रकारी में लोककला का प्रभाव आ जाता था और कोई भी व्यक्ति आपकी कलाकृति देखकर यह बता सकता था कि यह चित्र किसी लोककला से प्रेरित कलाकार ने बनाया है। आपके अनुसार आपने कभी भी वो कार्य नहीं किया जो समझ में न आये। या जिसका हर व्यक्ति अलग अर्थ निकाले।

चित्रकला की तकनीकः– आपने पेस्टल रंगों में ज्यादा कार्य किया है। लोककला का चित्रण करने में आप लोक रंगों का प्रयोग ज्यादा करते थे जैसे

गुरू, काजल, हल्दी, चूना आदि आप एक ऐसे परिवार से थे जहां आप रंग नहीं खरीद पाते थे। तो आप हाथ से रंग बनाते थे। आप पेस्टल रंगों में भी पाउडर रंगों का प्रयोग करते थे। आपने तेल चित्रण भी किया है। आपने केनवास, हार्डबोर्ड तेल कागज (Oil Sheet), कागज आदि सभी पर कार्य किया है। आप सौम्य रंगों का प्रयोग करते थे। चित्रों में कठोर तूलिका घात का प्रयोग करते हैं अधिकतर चित्रों में उत्तर प्रभाववादी शैली का प्रभाव था।

चित्रांकन का विषयः– आपने व्यक्ति चित्रण अधिक किया है। इसके अलावा आप लोक विषय पर ज्यादा चित्रण किया करते है। आपने प्रकृति चित्रण और पौराणिक विषयों पर भी चित्रण कार्य किया है।

चित्रों की रंग योजनाः– आप हल्के और धुधले रंगों का प्रयोग ज्यादा करते थे आप दो या दो से अधिक रंगों को आपस में कम मिलाते और उन्हें छोटे छोटे कतारो के रूप में या पास पास लगाते थे। जिससे रंग चित्रफलक पर मिश्रित प्रतीत होता था। और रंगों को गाढ़े लेप के रूप में लगाते थे।

चित्रसंख्या 61:– यह चित्रसंख्या एक प्रकृति चित्रण है। जिसमें आपने बादल से धिरा हुआ आसमान बनाया हैं जो प्रकृति में आकाश के सौन्दर्य को प्रकट कर रहा हैं बादल बरसात के मौसम को दर्शा रहा है। चित्र में पहाड़, नदी, पेड़ आदि बने हुये है। बादलों की परछाई नदी में दिख रही है। यह चित्र अति सौन्दर्यपूर्ण है।

चित्रसंख्या 62:– निम्नलिखित चित्र प्रकृति चित्रण है। जिसमें एक बड़ा वृक्ष बनाया गया है। उसके नीचे एक झोपड़ी बनी हुई है। जो चारों तरफ से वृक्षों से घिरी हुई है। यह चित्र प्रकृति सौन्दर्य को प्रकट कर रही है, चित्र में रंगों को छोटे छोटे कतारों में लगाया है। जिससे चित्र में उभार दिखाई देता है। और चित्र सजीव प्रतीत होता है।

<u>चित्रसंख्या 63:–</u> चित्रसंख्या एक व्यक्ति चित्रण है। जो एक पुरूष बुजुर्ग का है। यह बैठा हुआ चित्रित है। बुजुर्ग एक सफेद रंग की धोती बांधे हुये है। चित्र में आकृति को काले रंग से रेखांकित किया गया है। चित्र में आकृति के आस पास का धरातल गहरे रंगों से बनाया गया है। चित्र में रंगों की अधिकता है।

<u>चित्रसंख्या 64:–</u> निम्न चित्र एक महिला का है। जिसे बैठे हुये चित्रित किया गया है, महिला पूरी बांह की कमीज पहने हुये है। और देहाती छिटदार साड़ी पीने हुये है।, स्त्री के चेहरे पर उदासी है। चित्र देखने से पता चलता है। कि स्त्री गरीब घर की है। चित्र मंगों से रंगा गया है।

<u>चित्रसंख्या 65:–</u> चित्र एक स्त्री का है। जो घड़ा लिये बैठी हुई है। स्त्री सफेद रंग की साड़ी पहने हुये है। स्त्री देहाती है। जो उसी तरीके से साड़ी पहने हुये है। चित्र अस्पष्ट बना हुआ है। चित्र में रंगों को चौड़े चौड़े फलकों में लगाया गया है।

<u>चित्रसंख्या 66:–</u> यह चित्र भी एक गांव की स्त्री का हैं जो घड़ा लिये बैठी हुई है। स्त्री सीढ़ी पर बैठी हुई है। वह हरे रंग की साड़ी पहने हुई है। उसके गले में सफेद काले मोती की माला है। स्त्री को थककर बैठे हुये चित्रित किया गया है। चित्र में चटक और जीवित रंगों को कम मिश्रित करके लगाया गया है। चित्र में चटक और गहरे रंगों का प्रयोग किया गया है। जिससे चित्र सुन्दर बन पड़ा है।

<u>चित्रसंख्या 67:–</u> निम्न चित्र एक बुजुर्ग महिला का व्यक्ति चित्र है। जिसे यर्थाथ शैली में बनाया गया है। चित्र बहुत ही सजीव बन पड़ा है।

<u>चित्रसंख्या 68:–</u> इस फलक का शीर्षक **नृत्य** है। यह चित्र संयोजन है। जिसका विषय लोककला का है। और जिसे बनाया आधुनिक शैली में है। चित्रफलक को तेलीय कागज पर तेलरंग से बनाया गया है। चित्र कुछ कुछ

धनवादी शैली का लगता है। चित्र में एक स्त्री और दो पुरूष बने हुये है। यह सभी नृत्य कर रहे है। स्त्री नृत्य कर रही है जबकि एक पुरूष ढोल बजा कर नाच रहा है। और दूसरा पुरूष ढपली बजाता हुआ नाच रहा है। यह चित्र धीमानजी ने अपनी शैली के विपरीत बनाया है। क्योंकि यह आधुनिक शैली का चित्र है। और आप लोक कलाकार है इसलिये इस चित्र में आपकी छाप स्पष्ट दिखती है।

चित्रसंख्या 69:— निम्नलिखित चित्र भू—दृश्यांकन है। जिसमें नदी के किनारे स्थित एक मन्दिर का चित्रण किया गया है। पास ही एक किला बना हुआ है। मन्दिर से नीचे नदी में जाने के लिये सीड़ी बनी हुई है। मन्दिर के पास ही एक छोटी सी मड़िया बनी हुई है। तथा मन्दिर के पीछे एक खण्डर नूमा इमारत है। मन्दिर भी देखने में अति प्राचीन लगता हैं नदी में बत्तख बनी हुई चित्र को तेल रंग से बनाया गया है।

चित्रसंख्या 70:— चित्रफलक का शीर्षक **भील** है। चित्र का विषय लोककला का है। जिसमें एक लड़के को धनुष वाण में दर्शाया गया है। जो उसके हाथ से छूट कर गिर गया है। लड़का श्याम रंग का है। वह कंधे पर थैला ढागे हुये है। उसके वाण भी नीचे गिरे हुये है उसके सारे औजार नीचे पड़े हुये है। पास ही सफेद रंग का एक घोड़ा है जो दौड़ रहा है। लड़के के पीछे सूर्य बना हुआ है जो दर्शाता है कि लड़का आम इन्सान नहीं है। लड़का एक और हाथ से इशारा कर रहा है। वह पीले रंग की धोती बांधे हुये है। चित्र को आधुनिक शैली में बनाया गया है। दो या अधिक रंगों को आपस में कम मिलाकर पास पास कतारों में लगाया गया है। चित्र में आकृतियां अस्पष्ट है। तथा फलक में गहरे, तेज, चटक रंगों का प्रयोग किया गया है।

चित्रसंख्या 71:— यह कलाकृति व्यक्ति चित्रण है। जिसे तेलरंग से हार्डबोर्ड पर बनाया गया है। चित्र किसी बुजुर्ग (सज्जन आदमी) का है। जो पारसी टोपी पहने है। चश्मा लगाये और सफेद रंग के कपड़े पहने हुये है।

मंजूषा गांगुली

आप एक चर्चित महिला चित्रकार है। आपकी ख्याति एक राष्ट्रीय कोलॉज कलाकार, लेखक और अध्यापिका के रूप में है। आपकी अपनी एक पहचान है आप कविताये लिखने की भी शौकीन है। आपकी चित्रकारी और लेखन आपके मन का आईना है।

जींवन परिचयः– मंजूषा गांगुली का जन्म 1952 में 5 नबम्बर को भोपाल में हुआ था। आपकी पूरी शिक्षा भोपाल में हुई। आपने भोपाल से चित्रकला में डिप्लोमा प्राप्त किया और चित्रकला में परास्नातक किया। आपके गुरू लक्ष्मण भाण्ड, सुशील पाल और शोभा घारे है। लक्ष्मण भाण्ड और सुशील पाल के मार्ग दर्शन में आपने परास्नातक और डिप्लोमा किया और शोभा घारे ने आपको पढ़ाया है। रज़ा जी के ऊपर आपने शोध कार्य किया है। आप एक राष्ट्रीय महिला कलाकार है। जिसमें आपकी पहचान एक कोलाज कलाकार के रूप में है। राष्ट्रीय स्तर पर आपकी कलाकृति पुरस्कृत की जाती है। करीब करीब 6 साल से आप राष्ट्रीय कलाकार के रूप में आप राष्ट्र स्तर पर है। ललितकला अकादमी नई दिल्ली के मुख्य वरिष्ठ कलाकार के रूप में आप जानी जाती है। आपको कोलाज बनाने में राष्ट्रीय कलाकार के रूप में जाना जाता है। आपने 1979 से कोलाज बनाना आरम्भ किया। और इसी में आपकी विशिष्टता है। आपके अनुसार जब आपने कोलाज बनाना आरम्भ किया तब आप चाहतीं थी कि आपका काम सबसम हटकर हो। आप जो काम करें वो सबसे अलग हो। आपने वो काम नहीं करने की कोशिश की। जो सब करते है। पूरे भारत में अब तक आप 30 एकल प्रदर्शिनीयां लगा चुकीं है। इसके अलावा आपने कई कला शिविरों में भागीदारी की है। आपने राष्ट्रीय स्तर पर और प्रदेशिक स्तर पर भी काम किया

है। जैसे कि ललितकला अकादमी नई दिल्ली में भारत भवन भोपाल, कला परिषद जबलपुर, उज्जैन आदि में। आप देश के हर कोने में गयी है। और वहाँ जाकर आपने काम किया है।

आप लेखन कार्य में भी रूचि रखती है। रज़ा जी के ऊपर आपने किताब भी लिखी है कला, परम्परा और परिवेश। अब तक आपकी चित्रकला विषय को लेकर कई पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है। जिनमें "कला, परम्परा और परिवेश" जोकि दिल्ली से प्रकाशित हुई है। ''कला में भारतीयता और पाश्चात्य'', इसका आपने मराठी से अनुवाद किया है। यह ग्रन्थ अकादमी से प्रकाशित हुई है। इसके अतिरिक्त आप हिन्दी में कवितायें भी लिखती है। जिसमें आपका ''हरा बादल सपनों का'' आपका कविता संग्रह प्रकाशित हो चुका है। चित्रकला से सम्बन्धित लेख भी आपके समकालीन कला और कला दीर्धा में प्रकाशित होते रहते है जिसमें समकालीन कला में प्रकाशित मध्य प्रदेश की समकालीन कला, कला दीर्धा में प्रकाशित सचिदा नागदेव के मोहक रंग संघात और गुलाम मोहम्मद शेख के जीवन, मुख्य रूप से है। 1993 से आप मध्य प्रदेश की वरिष्ठ महिला चित्रकार है। और 30 साल से आप चित्रकारी कर रही है। आप मध्य प्रदेश की जानी मानी महिला चित्रकार है। इस समय आप हमिदिया कालेज भोपाल में ललितकला विभाग में विभागाध्यक्ष है।

मंजूषा गांगुली की चित्रकलाः– आप मध्यप्रदेश की विशेषतम प्रसिद्ध महिला चित्रकार है। और आपकी विशेषकर पहचान कोलॉज कलाकार के रूप में है। कोलाज बनाने में आपको विशिष्टता हासिल है। और कोलॉज बनाने में राष्ट्रीय कलाकार के रूप में आपको पहचाना जाता है। आपने 1979 से कोलॉज बनाना आरम्भ किया। तब आप चाहतीं थी कि आप जो काम करें वो सबसे हटकर हो आप वो काम कभी न करें तो सब करते है। इसके बाद आपने आपनी शैली में कोलॉज बनाना आरम्भ किया आपके अनुसार आपने सबसे पहले

कोलॉज में कार्बन पेपर का प्रयोग किया। आप कोलॉज बनाने में कार्बन पेपर का प्रयोग करतीं है। आप दाबा तो नहीं करतीं लेकिन कोलॉज में कार्बन प्रयोग करने वाली आप पहली महिला कलाकार है।

अपने जीवन की शुरूआत में आपने अमूर्त चित्रण करना आरम्भ किया। जिसमें आपने तेल, एक्रलिक और पेस्टल दोनों माध्यमों का प्रयोग किया। इसके बाद आपने कोलाज बनाना आरम्भ किया। आप 30 साल से चित्रकारी कर रहीं है। और अब तक आप 30 एकल प्रदर्शिनी प्रदर्शित कर चुकीं है।

चित्रकला का विषयः– मंजूषा गांगुली ने आपनी चित्रकला में नारी सौन्दर्य को प्रदर्शित किया है। और नारी को विभिन्न रूपों को चित्रित किया है जिसमें एक अलौकिकता झलकती है। चित्रों में नारी के प्रेम , श्रंगार , मातृत्तव रूप को आप प्रदर्शित करती है, चित्रों में कल्पनाशीलता, सुन्दर वातावरण और भेषभूषा को प्रदर्शित किया गया है।

चित्रों की तकनीकः– आपने चित्रों को कागज, केनवास, हार्डबोर्ड तथा भिन्ति आदि सभी पर चित्रित किया है। तथा माध्यम के तौर पर आपने पेस्टल, तेलरंग , जलरंग , एक्रलिक सभी को प्रयोग किया है। कोलाज बनाने में आपने भिन्न प्रकार के कागज, कपड़ों की कतरन, रिवन, सूतली, शादी के कार्ड, कांच, रद्दी – कागज, तथा कार्बन पेपर आदि का प्रयोग किया है। चित्रों में कोमल तथा कठोर दोनों ही तूलिकाघात का प्रयोग किया गया है। तूलिका संचालन में आपकी विशिष्टा है।

रंग योजनाः– आपने तेलरंग , जलरंग , एक्रलिक पेस्टल तथा मोम सभी माध्यम में चित्रण किया है। आप तेज, चटक और गहरे रंगों का प्रयोग ज्यादा करतीं है। आपके रंगों में संगीतमयता और लयवद्धता हैं चित्रों में लाल, नीला

तथा पीला रंग आवश्यक रूप से विद्यमान रहता है। जिसमें लाल और पीला रंग क्रोध, प्रेम और कामुकता को घोतक है जबकि नीला रंग निराशा और शीतलता का घोतक है। चटक व गहरे रंग आपको उत्साहित स्वभाव को प्रदर्शित करते है।

चित्रसंख्या 72:— निम्नलिखित फलक एक कोलाज है जिसका शीर्षक "**परीसभा**" हैं यह कोलॉज कागजों को काटकर बनाया गया है। जिसमें एक रानी परी और बाकी की सेविका परी है। इन परियों को कठपुतली के रूप में बनाया गया है। रानी परी सभा में कुछ कह रही है शेष सब उसे सुन रही है। धरातल नीले रंग से बना है शायद वह आकाश दिखाया गया है कोलॉज में परियों को कठपुतली के रूप में प्रदर्शित किया गया है। यह पीले रिवन से लटकी हुई है। परियों कपड़े और वेशभूषा विभिन्न प्रकार के कागजों से बनी हुई है। यह पेपर निम्नलिखित है जैसे सेन्डर्स पेपर , शादी के कार्ड , आईवर पेपर, क्राफ्ट पेपर और कार्बन पेपर आदि परियों के पंखों को कार्बन पेपर से बनाया गया है।

चित्रसंख्या 73:— चित्रसंख्या एक कोलॉज है। जिसमें परियां बनी हुई है। जिसमें एक रानी परी है तथा दूसरी राजकुमारी परी है। रानी परी राजकुमारी परी से कुछ कह रही है। परियो के पंख व वस्त्र कार्बन पेपर से बने हुये है तथा बाल और सिर पर लगे पंख विभिन्न प्रकार के कागज से बने है। पीछे का धरातल पेस्टल रंग तथा एक्रलिक रंग से बना हुआ है।

चित्रसंख्या 74:— चित्रफलक का शीर्षक **सपना** है जिसे केनवास पर तेलरंग और एक्रलिक द्वारा मिश्रित माध्यम में बनाया गया है। चित्र में पंख फैलाये परी को बनाया गया है। परी को अमूर्त शैली में चित्रित किया गया। आकृति पूर्णतया स्पष्ट नहीं है। चित्रफलक में परी अपने पंख फैलाये हुये है जो सुनहरी रोशनी को देख रही है। चित्र में कठोर तूलिका घात का प्रयोग किया गया है। तथा सम्पूर्ण चित्र को पीले , नारंगी , लाल तथा मटमैले पीले रंग से

बनाया गया है, चित्र बहुत ही सुन्दर बन पड़ा है, रंग को छोटे छोटे कतरों के रूप में लगाया गया है जिससे रंगों का बहुत ही सुन्दर प्रभाव उत्पन्न हुआ है।

<u>चित्रसंख्या 75:–</u> निम्न चित्रसंख्या स्त्री सौन्दर्य को दिखाता है जो फिर से एक सुन्दर परी को दर्शाता है जिसे आधुनिक शैली में बनाया गया है। चित्र को मिश्रित माध्यम में तेलरंग और एक्रलिक रंग द्वारा बनाया गया है। परी के पंख श्वेत रंग से और परी का वर्ण नीले रंग से बनाया गया है। परी के बालों के रंग विरंग पंख लगे हुये है।

<u>चित्रसंख्या 76:–</u> निम्न चित्रसंख्या अमूर्त शैली में बना हुआ है। जिसे एक्रलिक रंग द्वारा केनवास पर बनाया गया है। चित्र किसी राजसी स्त्री का है जो श्वेत वस्त्र पहने हुये है। उसके सर पर मुकुट है। मंजूषा गांगुली की विशेषता अनुसार चित्र में लहरदार रंग विरंगी आकृति बनी हुई है।

<u>चित्रसंख्या 77:–</u> चित्रसंख्या अमूर्त शैली में बना है जिसका विषय लोककला का है। और बनाया गया है। आधुनिक शैली में। चित्र को केनवास पर एक्रलिक व तंलरंग द्वारा बनाया गया है। चित्र में राधा और कृष्ण को सागर की गहराई में खोया हुआ दिखया गया है। कृष्ण बांसुरी बजा रहे है। और राधा उसकी बांसुरी पर मतमुग्ध हो रही है।

रश्मि जोशी

मध्य प्रदेश की चित्रकला में आप एक अर्से से अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। आप चित्रकला में नयी युवा पीढ़ी का मार्गदर्शन करती है। और देश को युवा, होनहार तथा प्रतिभावना कलाकार की पहचान करती है। आप गम्भीर संवेदनशील व अनुभवी कलाकार है। आप देश के कोने कोने में जाती है और कलाकारों को प्रत्तोसाहित करती है। आप मध्य प्रदेश में सक्रिय महिला चित्रकार है।

जीवन परिचयः– रश्मि जोशी का जन्म उज्जैन में 1959 में हुआ था। आपके तीन भाई और एक बहन है। जिनमें आप सबसे छोटी है। आपके पिताजी पुलिस में अधिकारी पद पर थे। पिताजी पुलिस में होने के कारण उनके तबादले बहुत हुआ करते थे। जिसमें उनकी आरम्भिक शिक्षा ठीक से नहीं हो पाई। अनेक बार देहात में तबादले के वजह से आपकी शिक्षा इस प्रकार के स्कूलों में भी हुई जहां बैठने के लिये फर्श तक नहीं था। उसके बाद आपके पिताजी का तबादला इन्दौर हुआ। वहां के नूतन कालेज इन्दौर से आपने अनेक विषयों में परास्नातक किया। जैसे कि दर्शनशास्त्र , समाजशास्त्र , मनोविज्ञान तथा चित्रकला आदि। अपने विधि की शिक्षा भी प्राप्त की। नूतन कालेज इन्दौर से आपने चित्रकला में परास्नातक किया। चित्रकला में आपके गुरू लक्ष्मीनारायण भावसार है। आपके ही मार्गदर्शन में आपने उज्जैन से चित्रकला में शोधकार्य किया तथा लक्ष्मीनारायण भावसार के मार्गदर्शन में ही आपने डी.लिट् की उपाधि ली। जिसमें लक्ष्मीनारायण भावसार के बड़े भाई रामचन्द्र भावसार भी आपका सहयोग व मार्गदर्शन करते रहे। आपने चार विषयों में परास्नातक किया तथा आपने विधि की भी शिक्षा ली है। इतने विषयों में परास्नातक करने में आपके बड़े भाई का सहयोग रहा।

उन्हीं के मार्गदर्शन में आपने यह शिक्षा दीक्षा ली। इय समय आप सरोजनी नायडू शासकीय कन्या स्नात्कोतर महाविद्यालय में ललितकला विभाग में विभागाध्यक्ष पद पर है। तथा आने वाली युवी पीढ़ी का मार्गदर्शन करती है और उन्हें शोध कार्य कराती है।

रश्मि जोशी की चित्रकलाः-

आपको बचपन से ही चित्रकला का शौक रहा है जब आप पाँचवी में पढ़ती थीं तब उज्जैन में कार्तिक मेला लगा हुआ था। तब वहां मेले में अपने लीपन को मोटा मोटा लीपकर उसमें टूटीं हुई चूड़ियों से कुछ कोप (डिजाइन) बनायी। जिसकी मेले में काफी प्रशंसा हुई। आपके अनुसार जब आप छोटी थी तब आप अपनी स्कूल की कापी में कुछ न कुछ डिजाइन बनाती रहती थी। और आपकी अध्यापिका आपकी माताजी से शिकायत करती थी। इस प्रकार चित्रकला का शौक आपको बचपन से ही था। आप पर लोक कला का प्रभाव ज्यादा है जो आपके आसपास के वातावरण दादाजी व अपनी मां से आया। लोककला आपने बचपन से देखी और समझी है। आपको मेहन्दी व माण्डने से लेकर गोदने तक सभी में रूचि है। आपने अमूर्त शैली, आधुनिक शैली, यर्थाथ चित्रण, लोककला, पारम्परिक चित्रण, राजस्थानी शैली आदि सभी में चित्रण किया है। आपके अनुसार "हमारे सारे तीज त्यौहार और पर्व या हम हिन्दुओं के सारे त्यौहार में से कोइ भी ऐसा नहीं है जो लोककला से न जुड़ा हुआ हो। चाहे वो गीत संगीत का क्षेत्र हो या भितित चित्रण या माण्डना आदि। इन सभी से लोककला जुड़ी हुई है। और जो लोक है वो हमारे मानस से बाहर नहीं निकल सकता। जिस दिन हम लोक को मानस से बाहर निकाल देगें हमारे हाथ कुछ नहीं बचेगा"।

चित्रकला का विषयः- आपने लगभग सभी विषयों पर चित्रण कार्य किया। सामाजिक , पौराणिक , यर्थाथ शैली , आधुनिक तथा लोककला आदि जिनमें आपने प्रकृति चित्रण, वस्तु चित्रण, नारी चित्रांकन नारी के विविध रूप, व्यक्ति चित्रण आदि सभी बनाये है। इसके अतिरिक्त आपने गणेश आकृतियों को विभिन्न प्रकार से बनाया है। लोक विषयों का चित्राँकन और युद्ध आदि के चित्र भी बनाये है। आपने सिरेमिक से कार्य और विभिन्न प्रकार के पत्थरों से भी चित्रांकन किया है।

चित्रों का माध्यमः- अपने जलरंग , तेलरंग , एक्रिलिक , पेन्ट आदि सभी माध्यम का प्रयोग करके चित्रांकन किया है। इसके अतिरिक्त आपने लोकरंगों जैसे गेरू, चूना, हल्दी, हिरोजी आदि को भी अपनी कला में शामिल किया है। आपने धरातल के रूप में लकड़ी, कागज, हार्डबोर्ड, केनवास, कपड़ा तथा भित्ति व भूमि सभी का प्रयोग किया है आपने प्रयोग के लिये सिरेमिक, पत्थर, कांच, सूतली, कलावा कपड़े आदि से भी चित्र बनाये है। जिन्हें हम कोलॉज भी कहते हैं।

चित्रों की तकनीकः- अपने सभी शैली में काम किया है चाहे वो यर्थाथ चित्रांकन हो या बिना मिलाये रंगो का प्रयोग या अमूर्त चित्रण या रंगों को सपाट भरना। आपने सभी तकनीक में काम किया है। अपने गहरे, चटक, तेज रंगों का प्रयोग किया है। तूलिका घात गहरे है तथा रंगों को बिना मिलाये प्रयोग किया गया है। उन्होंने चित्र फलक पर ही रंगों को मिश्रित किया है। यर्थाथ चित्रण में रंगों में सौम्यता है। आपने तूलिका को सन्तुलित रूप में प्रयोग किया। आपने रंगों में भी प्रयोग किये व उन्हें नये प्रयोग में लगाया तथा कलाकृतियों में भी प्रयोग किये जैसे फेविकाल या गोंद से कपड़े को फलक पर चिपकाकर नायक नायिका के वस्त्र बनाना आदि।

चित्रसंख्या 78:– निम्नलिखित चित्रांकन लोकशैली का उत्कृष्ट कलाकृति हैं जिसमें सुरती बजाते हुये एक द्वापर को चित्रित किया गया है। जिसे जलरंग से बनाया गया है। इसमें रंगों को सपाट भरा गया है। आकृति को कहीं भी उभार नहीं दिया गया है। चित्र में कहीं कहीं आलेखन और लोक आकृतियां भी बनी हुई है। आकृति को काले रंग से रेखाकिंत किया गया है। जिस घर में शादी होती है वहां सूरती बजाते हुये द्वापर का चित्र बनाते है, जोकि शुभ माना जाता है।

चित्रसंख्या 79:– निम्न चित्रसंख्या प्रागैतिहासिक काल के जंगली भैंसे का चित्र है। जिसे सिरेमिक और मारबल से हार्डबोर्ड पर बनाया गया है , इसकी आँख हरे रंग के मोती की बनी हुई है। तथा चित्र को तेलरंग से रंगा गया है। भैसे के बीच में बनी गोल आकृति और इससे निकली रेखायें यह दर्शाती हैं कि यहां सूरज को चित्रित किया गया है। आसपास बनी आकृतियों प्रागैतिहासिक पत्थर व धार्मिक चिन्हों की है। भैसें को किसी देवरूप में दिखाया गया है।

चित्रसंख्या 80:– यह प्रकृति चित्रण है। जिसे रश्मि जोशी ने आधुनिक शैली में बनाया है। इसका शीर्षक **तीन वृक्ष** है। इस कलाकृति को आपने हार्डबोर्ड पर तेलरंग से बनाया है। चित्र में तेज, चटक व गहरे रंग का प्रयोग किया गया। चित्र में कठोर तूलिका घात का प्रयोग किया गया हैं रंगों को फलक पर ही हल्का मिश्रित किया गया है हरे और कथई रंग से उन्होने घास और भूमि को बनाया है जबकि पेड़ को पीले और नारंगी रंग से बनाया गया है।

चित्रसंख्या 81:– यह चित्रफलक अमूर्त चित्रण है जिसका शीर्षक इन्तजार है। चित्र देखकर पता चलता है कि इसका विषय पारम्परिक या लोक विषय से प्रेरित है चित्र में एक स्त्री को घुटने पर हाथ रखे बैठे बनाया गया है जो कुछ सोच रही है व किसी का इन्तजार कर रही है। यह एक भावपूर्ण दृश्य हैं चित्र को तेलरंग से फलक पर बनाया गया है जिसे तूलिका चाकू , ब्लेड आदि से बनाया गया है। स्त्री को श्याम वण्र से बनाया गया है।

चित्रसंख्या 82:– यह एक बहुत ही सुन्दर और भावपूर्ण चित्र है जिसको आधुनिक शैली में तूलिका और रंगों के विभिन्न प्रयोग से बनाया गया है। इसमें अधिका अधिक रंगों का प्रयोग किया गया है। चित्र एक स्त्री का है जो पूर्ण नेत्रों से किसी को निहार रही है। स्त्री के गहने लोक शैली के है। कृति को तेलरंग से बनाया गया है। नेत्रों की भगिमा भाव पूर्ण है।

चित्रसंख्या 83:– यह चित्रसंख्या एक तेलरंग चित्रण है। जिसे काष्ठ पर बनाया गया है। फलक का शीर्षक विराह है। जिसमें शकुन्तला और उसकी सखियों को चित्रित किया गया है। चित्र में शकुन्तला राजा दुष्यन्त की विराह में डूबी हुई है और उसकी सखियां उसे दिलासा दे रही है। चित्र में शकुन्तला नजरे झुकाये हुये है। और सोच में डूबी हुई है। चित्र में जंगल का दृश्य है जिसमें पेड़ पहाड़ जानवर (तोता, पक्षी, हिरन) आदि सभी बने हुये है चित्र में रंगों को सपाट भरा गया है। धुधले व हल्के रंगों का प्रयोग किया गया है। जिससे उदासी के वातावरण का आभास होतो है।

चित्रसंख्या 84:– रश्मि जोशी लोककला से प्रभावित चित्रकार है लेकिन उन्होने सभी शैली में काम किया है। यही कारण है कि आधुनिक शैली में काम करने के बाद भी उनमें लोककला का प्रभाव आ जाता है। यह चित्रफलक आधुनिक शैली लोककला की मिश्रित शैली का उदाहरण है जिसमें विषय और साजसज्जा लोकशैली की है। और बनाया गया आधुनिक पद्धति में। जिसमें एक सुहागिन स्त्री मगल कलश और फूल माला लिये हुये द्वार पर खड़ी है, वह पूरे साजश्रंगार में है उसका चेहरा और आंखों की भगिमा प्रेम से भरी हुई है। स्त्री को हरे रंग से बनाया गया है जो खुशहाली का प्रतीक है। चित्र में हल्के तूलिका घात का प्रयोग किया गया है।

चित्रसंख्या 85:– यह तेल चित्रण है जिसे केनवास पर बनाया गया है। यह युद्ध का दृश्य है चित्र में युद्ध का विगहंम दृश्य है सब एक दूसरे पर आक्रमण कर रहे है। कुछ मनुष्य मृत्यु को प्राप्त हो चुके है। मुख्य व्यक्ति जैसे राजा,

सेनापति, सैनिक आदि हाथी और घोड़े पर सवार है। तथा भाला, तलवार, ढाल आदि लिये हुये है। यह समूचा दृश्य रात का है।

चित्रसंख्या 86:– आधुनिक शैली में बनाया गया निम्न चित्रसंख्या एक तेल चित्रण है। जिसे हाथ कपड़े और तूलिका से बनाया गया है यह चित्रण स्त्री का है जो गांव की है और विश्राम की मुद्रा में घास पर आकर बैठी हुई है उसके गोद में बच्चा है जिसे वो स्नतपान करा रही है पास ही उसकी डलिया रखी हुई है चित्र को सीमित रंगों से बनाया गया है।

चित्रसंख्या 87:– निम्न चित्रसंख्या पर गणेश जी का चित्रांकन किया गया है जिसे तेलरंग से बनाया गया है। और लोकरूप देने की कोशिश की गई है चित्र को सिर्फ दो रंगों से बनाया गया है सफेद और कथई। आकृति आधुनिक शैली में बनी हुई है। तथा रंगों को रेखांकन द्वारा भरा गया है। आकृति में सफेद रंगों से अलंकरण किया गया है। चित्र में गणेशजी की सवारी चूहे को भी चित्रित किया गया है।

चित्रसंख्या 88:– निम्न कलाकृति को हार्डबोर्ड पर तेलरंग से बनाया गया है इस तेलरंग में गणेश आकृति को आधुनिक शैली में बनाया गया है। चित्र में प्रायः लाल और पीले रंग का प्रयोग किया गया है।

चित्रसंख्या 89:– निम्न कलाकृति लोककला की शैली में बनाई गई है कलाकृति को सफेद व कथई रंग से बनाया गया है चित्र में लक्ष्मी पद्म बनाकर उसे विभिन्न प्रकार से अलंकृत किया गया है लक्ष्मी पद्म के चारों ओर घर की डिजाइन बनायी गई है जो घर में लक्ष्मी के आगमन को दर्शा रहा है।

चित्रसंख्या 90:– निम्न कलाकृति लोककला का आलेखन है जिसे कोलॉज की तरह बनाया गया है कलाकृति को पेपरमेशी के काम द्वारा बनाया गया है जिसे सुतली, कांच, कलावा व मूलतानी मिट्टी, सिरेमिक द्वारा बनाया गया है।

शोभा घारे

समकालीन चित्रकारों में शोभा घारे अपना विशिष्ट स्थान रखती है, आपके चित्रों में आधुनिक और लोकशैली का परस्पर समन्वय दिखाई देता है। आप चित्रकार होने के साथ–साथ एक लेखक, अध्यापक, समाजसुधारक, अच्छी इन्सान और प्रकृति प्रेमी भी है। मध्य प्रदेश की महिला कलाकारों में आप राष्ट्र स्तर की प्रसिद्ध कलाकार है जिनकी कला बरबस ही सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती है।

जीवन परिचयः– शोभा घारे का जन्म 10 नबम्बर 1951 को गुना मध्य प्रदेश में हुआ था। आपकी आरम्भिक शिक्षा म0प्र0 में हुई उसके बाद आपने मुम्बई के जे. जे. स्कूल आर्ट से परास्नातक पास किया। मुम्बई से ही आपने स्पेशल ग्राफिक कोर्स किया ललितकला में परास्तक करने पर आपने स्वर्ण पदक हासिल किया। आपको अपने जीवन में काफी संघर्ष करना पड़ा उसके बाद भी अपने हिम्मत नहीं हारी और अपना कार्य करतीं रहीं। और आपने अपनी एक अलग पहचान बनाई। अब तक आप आठ व्यक्तिगत प्रदर्शनियां भोपाल , नई दिल्ली , मुम्बई, कोलकत्ता , बैंगलौर , चेन्नई, लन्दन तथा सिंगापुर में आयोजित कर चुकी है। जिसमें आपने अपनी चित्रकारी का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। और युवा चित्रकार के रूप में अपनी पहचान बनायी। आपने कई समूह प्रदर्शिनी भी की है। जिसमें मुख्यतः न्यूयार्क, जापान, पोलैण्ड, जर्काता, अमेरिका आदि में आयोजित प्रदर्शिनी है। और भारत का नाम रोशन किया वहाँ आपकी कला की सराहना की गई। और वहाँ आपकी श्रेष्ठ चित्रकारी के लिये पुरस्कार भी प्रदान किये गये। आपने कई कला शिविर भी लगाये है जिसमें मुख्य आल इण्डिया प्रिन्ट मेकिंग केम्प भारत भवन भोपाल , राष्ट्रीय महिला कलाकार छापाकृति शिविर भुवनेश्वर,

अखिल भारतीय वरिष्ठ कलाकार शिविर आयफेक्स नई दिल्ली, चित्रॉवन चित्रकला शिविर उज्जैन और अखिल भारतीय समकालीन कलाकार शिविर मुम्बई है। आपने अपने जीवन में कई उपलब्धियां हासिल की है इसमें मध्य प्रदेश सरकार द्वारा आपको अमृता शेरगिल फैलोशिप भोपाल में दी गई। ललितकला अकादमी नई दिल्ली द्वारा आपको राष्ट्रीय रिसर्च फैलोशिप दी गई तथा भारत सरकार संस्कृति विभाग नई दिल्ली द्वारा आपको राष्ट्रीय छात्रवृत्ति प्रदान की गई। देश में आयोजित विभिन्न कला आयोजन में आपको 53 सम्मानीय पुरस्कारों से नबाजा गया है। जिसमें मुख्य सम्मान 43वीं राष्ट्रीय कला प्रदर्शिनी ललितकला अकादमी बैंगलौर , 9 वीं अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी लखनऊ आदि के अतिरिक्त नागपुर चण्डीगढ़, मुम्बई, दिल्ली, कोलकत्ता, भोपाल द्वारा दिये गये है। आपने कई देशों का भ्रमण किया और वहाँ के आपने अपनी चित्र प्रदर्शनी लगाई और वहाँ के चित्रकारों का मार्ग दर्शन किया। आपने अपनी प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। आपकी महत्वपूर्ण कला के संग्रह भारत भवन रूपांकर संग्रहालय भोपाल , नैशनल गैलरी ऑफ मार्डन आर्ट नई दिल्ली , मार्डन आर्ट गैलरी एवं जहांगीर आर्ट गैलरी मुम्बई सहित जकार्ता , जापान , अमेरिका, आस्ट्रेलिया और इंग्लैण्ड आदि में है। इस समय आप भारत भवन भोपाल से जुड़ी हुई है और वहाँ की एक महत्वपूर्ण सदस्य है। आप आने वाली युवा पीढ़ी का मार्ग दर्शन करती है। आज भी आप अपने रचनाकर्म में लीन रहती है।

<u>कला साधना:–</u> आप एक प्रकृति प्रेमी कलाकार है प्रकृति के मनोहर दृश्य और जीव जन्तु की जीवनचर्या आपको प्रकृति से जोड़े रखती है। प्रकृति आपकी सहचरी हैं और शायद इसलिये आपको प्रकृति चित्रण करना पसन्द है आपकी चित्रकारी के विषय भी प्रकृति से जुड़े रहते है। आप अमूर्त चित्रण करती है। जब आप चित्रांकन करतीं है तो वह आपकी ध्यान की मुद्रा होती है। उस समय आप ध्यान मग्न होकर चित्रकारी करती है। आपका ध्यान और कहीं नहीं

भटकता। आपको क्या बनाना है इसके लिये आपको सोचना नहीं पड़ता है आपने सिरेमिक में भी कार्य किया है, उसमें भी आप प्रकृति से सम्बन्धित कार्य करती है जैसे वन्य जीवन , जंगल , छोटे बड़े जीव जन्तु आदि। आपकी चित्रकारी में विभिन्न प्रकार की डिजाइन या (आलेखन) का प्रभाव भी देखने को मिलता है। आपके अनुसार जब आप 10वीं व 11वीं में थी तब आपको चित्रकला में आलेखन बनाना पड़ता था तब आपने काफी आलेखन बनाये थे तो वह प्रभाव आप पर अब भी बना हुआ है जो आपकी चित्रकारी पर दिखाई देता है। आप आपने जीवन के आरम्भ से ही प्रकृति के अत्यन्त करीब थी। आप बताती है "जब आप छोटी थी तब आप अपनी मां से आटे की लोई लेकर उससे से ही कुछ न कुछ बनाती रहती थी। जैसे चिड़िया गुड़िया या आदमी आदि। तो इस तरह का काम आप शुरू से करतीं थी। जब आप बड़ी हुई तब आप जंगल या बगीचे आदि में घूमने जाती थीं तो अपने साथ कापी और पेन ले जाती और वहीं बैठकर चित्रांकन करती। और वहाँ के पशु–पक्षी , जीव जन्तु आदि को चित्रित करतीं। शोभा घारे चित्रकार और छापा चित्रकारी दोनों है। आपके चित्रों में अलंकारिक रचनाकर्म आवश्यक रूप से विधमान रहता है।

रंग विधानः– रंग विधान में गहरे और ठण्डे रंगो का प्रयोग ज्यादा करती है आपके चित्रों में हरा और नीला रंग ज्यादा देखने को मिलता है जो प्रकृति और आकाश का है। जो यह बताता है कि आप एक आशावादी और शान्त स्वभाव की कलाकार है। इन रंगों के अतिरिक्त आपके चित्रों में पीला और कथई रंगों का उपयोग अधिक दिखता है जो धरती की बड़ी हुई गर्मी को दिखाती है। आपके कुछ चित्रों में काली सी स्याही रंग की गहरी पट्टी भी दिखाई देती है जो पृथ्वी पर बड़ते पर्यावरणीय दोहन को दिखाती है जिसके अनुसार अगर हम इसी प्रकार पृथ्वी के सौन्दर्य को खण्डित करते रहे तो यह रंगारंग विश्व स्याही में बदल जायेगा।

चित्रण विषयः– आप प्रकृति को अपने अत्यन्त करीब मानती है। आप प्रकृति को अपना मित्र मानती है। इसलिये आपको चित्रकारी के विषय भी प्रकृति से जुड़े हुये है। आपने प्रकृति के किसी भी रूप को नहीं छोड़ा लगभग सभी विषयों का चित्रण किया है। आपने अपने चित्रों में पेड़ पहाड़, भूमि, जल के विभिन्न रूप , फल फूल छोटे छोटे जीव – जन्तु जैसे मकड़ी , चीटी , चूहा, कनखजूरा, मेढक, चिड़िया, मछली, तथा जानवर आदि सभी बनाये है। आपने बादलों के विभिन्न रूपों का चित्रण किया। आपके चित्र में वर्षा का दृश्य भी देखने को मिलते है। आपने पहाड़ियों की संवेदना और सौन्दर्य को दर्शाया है जो सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक दिखाई देता है। बरसात में छोटी बड़ी नदियों के रूप तालाबों, पहाड़ों झरनों का अपना अलग नृत्य संगीत, सर्द हवाओं के साथ वृक्षों की ताल, बादल और बिजली की चकाचौंध सभी को आपने दर्शाया है। आपके चित्रों में आलेखन और लोककला का प्रभाव भी दिखाई देता है। आलेखन और लोककला आपके चित्रों में रेखाकर्म में पायी जाती है।

चित्रण तकनीकः– आपने जलरंग, तेलरंग चित्रण, एक्रिलिक, स्याही, पेन तथा सिरेमिक आदि सभी में कार्य किया है धरातल के रूप में आपने केनवास, विभिन्न प्रकार के कागज तथा हार्डबोर्ड आदि सभी का प्रयोग किया है। जब आप चित्रण करती है तो अप इतने ध्यान की मुद्रा में कार्य करती है। कि चित्र को अपने अनुसार बनाने के लिये आप स्पंज, हाथ, तूलिका, पेन, कागज, लकड़ी आदि सभी से रंगों को धरातल पर लगाती है तथा अमूर्त चित्रण में भिन्नता लाती है आपके अनुसार आप जब चित्रण कार्य शुरू करती तो उसे यर्थाथ चित्रण से शुरू करती है। और बनाते बनाते आप उसमें इतना ध्यान मुद्रा में आ जातीं है। कि उसे अमूर्त शैली में बनाने लगती है।

चित्रसंख्या 91:– यह शीर्षक विहीन चित्रसंख्या है जिसे कागज पर मिश्रित माध्यम में बनाया गया है। यह अमूर्त शैली में बनाया गया है यह एक प्रकृति

चित्रण है। जिसमें सम्पूर्ण वातावरण को पीले रंग से बनाया गया है। जिससे आभास होता है कि यह दिन का दृश्य है। सूरज निकल रहा है। चित्र में पहाड़ बना हुआ है। जिस पर जंगल का दृश्य है। कहीं कहीं चित्र में अलंकरण दिखाई देता है।

चित्रसंख्या 92:– यह अमूर्त शैली में बनाया गया एक प्रकृति चित्रण है। जिसे मिश्रित माध्यम में कागज पर बनाया गया है। चित्र में सम्पूर्ण वातावरण पीले रंग से बनाया गया। काले घने बादल छाये हुये है और उन से वर्षा हो रही है। चित्र में कुछ धुंधलापन है। और नीचे की ओर एक बड़ी गहरे रंग की पट्टी है। यह सम्पूर्ण चित्र प्रकृति वातावरण में फैले हुये प्रदूषण को दर्शाता है पीला रंग पृथ्वी का बढ़ता तापमान दर्शा रहा है।

चित्रसंख्या 93:– यह अमूर्त शैली में बनाया गया। शीर्षक विहीन चित्र फलक है जिसे मिश्रित माध्यम में बनाया गया है। चित्र को जल रंग, एक्रिलिक तथा पेन द्वारा कागज पर हाथ, तूलिका तथा स्पंज से बनाया गया है। चित्र को नीले रंग द्वारा बनाया गया है। जोकि शान्त और ठण्डा रंग है। चित्र में पर्वत, वर्षा, बादल और आकृतियों में कहीं कही लोककला का प्रभाव दिखाई देता है। चित्र में रेखाकर्म द्वारा प्राकृतिक आकृतियों को दिखाया गया है।

चित्रसंख्या 94:– निम्न चित्रसंख्या को कागज पर मिश्रित माध्यम में जलरंग और एक्रिलिक रंगों द्वारा बनाया गया है चित्र में प्रकृति सौन्दर्य को दिखाया गया है। चारों तरफ हरियाली फैली हुई है। पीला रंग सूरज की रोशनी को दर्शाता है चित्र में हरे रंग से जल बनाया गया है। महीन रेखाओं द्वारा जल का बहाव दिखाया गया है। तेज हवा चल रही है और सब कुछ उसके प्रभाव में बह रहा है।

चित्रसंख्या 95:– यह शोभा घारे द्वारा बनाया गया प्रकृति का बहुत ही सुन्दर दृश्य है जिसमें समुद्र में वर्षा से होने वाली हलचल को दिखाया गया है। समुद्र के ऊपर वर्षा हो रही है। उसमें तूफान आया हुआ है। लेहरें एक दूसरे

से टकरा रही है। तथा सम्पूर्ण दृश्य रात का है। बिजली कोध रही है। वर्षा से समुद्र में उथल पुथल मची हुई है।

चित्रसंख्या 96:— यह चित्रसंख्या अमूर्त शैली में बनाया गया बहुत ही सुन्दर दृश्य है। चित्र को मिश्रित माध्यम में जलरंग व एक्रलिक रंगो द्वारा बनाया गया है। जिसमें कहीं कहीं लोककला का प्रभाव भी दिखाई देता है। चित्र में एक बरगद का वृक्ष की पत्तियां लाल और हरे रंग से बनी हुई है। जो नयी और पुरानी पत्तियों को दर्शा रही है। सम्पूर्ण धरातल को हरे रंग से दर्शाया गया है जो उनके रंग संयोजन को दिखाता है। चित्र में रेखा द्वारा आकृतियों बनायी गई है।

चित्रसंख्या 97:— यह चित्र संयोजन अमूर्त शैली में कागज पर बनाया गया है। चित्र पर्वत व प्रकृति वातावरण को दर्शाया गया है। धूप निकली हुई है गर्मी का मौसम दिखाया गया है। आसमान में पंतगे उड़ रही है। चित्र को पीले व कथई रंग से बना गया है जिससे वह बहुत ही सुन्दर बन पड़ा है।

चित्रसंख्या 98:— यह चित्र संयोजन भी प्रकृति को लेकर बनाया गया है चित्र को कागज पर अमूर्त शैली में बनाया गया है। यह सम्पूर्ण पृथ्वी मण्डल का दृश्य है। जिसे नीले, हरे व कहीं कहीं काले रंग से बनाया गया है जो हरियाली, जल और प्रदूषण को दिखाता है। आपके चित्र में एक बार फिर काले रंग की पट्टी है जो बड़ते हुये प्रदूषण को दर्शा रही है। चित्र में रेखाकर्म भी विधामान है।

चित्रसंख्या 99:— यह एक चित्र संयोजन है। जिसमें जंगल के वातावरण और जीवन को दर्शाया गया हैं जंगल में पेड़ पहाड., तालाब , जंगली जानवर, जीव–जन्तु, पक्षी आदि सभी कुछ है। कहीं वर्षा हो रही है। कहीं चिड़ियां आकाश में विचरण कर रही है। कहीं दाना चुग रही है। या आपस में खेल रहीं है पेड़ पर लिपटा सांप अपने शिकार की तलाश में है। बँन्दर एक डाली से दूसरी डाली पर कूद रहे है। चूहा अनाज खा रहा है। खरगोश झाँड़ी में छुपा

हुआ है मोर नाच रहा है। कीट पतंगे फूल आदि पर मण्डरा रहे है। इस प्रकार नाना प्रकार के दृश्य है। लेकिन चित्र में नीचे की ओर गहरे रंग की पट्टी भी है। जो बढ़ते प्रदूषण से खत्म हो रहे जंगल को दर्शा रही है। चित्र में लोककला का प्रभाव दिख रहा है। चित्र को नीले रंग से बनाया गया है। तथा सम्पूर्ण आकृतियां रेखाओं द्वारा बनी है।

चित्रसंख्या 100:– यह दृश्य अमूर्त शैली में बनाया गया जलीय वातावरण का है। जिसे मिश्रित माध्यम में कागज पर बनाया गया है चित्र नीले व पीले रंग से बनाया गया है।

चित्रसंख्या 101:– निम्न कलाकृति को अमूर्त शैली में कागत पर एक्रिलिक व जलरंग से चित्रित किया गया है। चित्र में धरातल पीले और नारंगी रंग से बनाया गया है। तथा कहीं कहीं काले रंग से पक्षी बनाये हुये। चित्र में रेखांकन द्वारा निम्न प्रकार की कई कलाकृति भी बनायी गयी है। तथा कलाकृति के नीचे एक काले रंग की पट्टी भी जों बड़ते हुये प्रदूषण को दर्शा रही हैं चित्र में पीला रंग भी पृथ्वी के बड़ते हुये तापक्रम को दर्शा रहा है।

चित्रसंख्या 102:– निम्न कलाकृति प्रकृति चित्रण है। जिसे अमूर्त शैली में कागज पर मिश्रित माध्यम में चित्रित किया गया हैं चित्र में पहाड़ी पर वर्षा होते हुये दर्शाता गया हैं आकाश गहरे कथई रंग से बनाया गया है शेष धरातल पीले रंग से बना है।

प्रमोद राय

प्रमोद राय विशिष्ट प्रतिभा के धनी है। वह चित्रकार विचारक, समीक्षावादी व मार्गदर्शक आदि सभी है। आपने अपने जीवन में चित्रकारी का सफर कुछ देर से शुरू किया किन्तु आपने काफी कम समय में अपनी प्रसिद्धि पर ली। और अपनी पहचान बनायी। चित्रकारी करना प्रमोद राय का शौक है।

जीवन परिचयः– प्रमोद राय का जन्म 12 जून 1943 को बिलासपुर में छत्तीसगढ़ जिले में हुआ था। आप वास्तव में सागर शहर के रहने वाले है आपके पिता ए0सी0 राय एक आई0एस0 आफिसर थे। आपकी माता इन्दुराय हिन्दी की शिक्षिका थी। आपके दो भाई एक बहन है। आपकी शादी सन् 1966 में शशी राय से हुई जोकि अब सरोजनी नायडू महाविद्यालय में प्राचार्य पद पर है। आपने अपने विद्यार्थी जीवन की शुरूआत महाराष्ट्र के चन्दनपुर नामक शहर से की। आपकी प्राथमिक शिक्षा बिलासपुर से हुई। आपके पिताजी सरकारी कर्मचारी थे इस कारण उनके तबादले काफी हुआ करते थे। इस लिये प्रमोद राय की शिक्षा कई शहरों से हुई। आपने विज्ञान में स्नातक और परास्नातक भोपाल के एम.पी.एम. विद्यालय से किया। उसके बाद इसी विद्यालय में आप जीवविज्ञान के अध्यापक बन गये। तीन साल नौकरी करने के बाद आप शोध करने सागर चले गये। 18 महिने में आपने अपना शोध कार्य पुरा किया। आपने उसके बाद 37 साल तक अध्यापन कार्य किया फिर इसी विद्यालय में आप प्रधानाचार्य पद पर रहे। अब आप आप अपने पद सेवानिवृत्त हो चुके है। आपकी चित्रकला का शौक बचपन से ही था लेकिन पढ़ाई के चलते आप अपना शौक पूरा नहीं कर पाये। लेकिन अब आप सेवानिवृत्त हुये तो आपको ऐसा लगा कि आप आपना पूरा समय अपने शौक को दे सकते है। और आपने ऐसा किया अब

तक आप 90 कलाकृतियों का निर्माण कर चुके है। इसके अतिरिक्त दो कला प्रदर्शनियां भी कला परिषद में आपकी लग चुकी है।

आपको All Indian Arts Creafts society pletinum jubillee celebration की तरफ से श्रेष्ठ कलाकृतियों के लिये सम्मानित किया गया है। प्रमोद राय ने कभी भी अपनी कलाकृति इस उद्देश्य से नहीं बनाई कि उन्हें किसी बड़े स्तर का प्रमाण पत्र मिले या किसी प्रतियोगिता में विजयी हो। आपने आज तक अपनी किसी कलाकृति को विक्रय नहीं किया। आपने अपने शौक को कभी भी व्यवसायिक रूप देने की चेष्टा नहीं की।

प्रमोद राय की चित्रकलाः- अपने जीवन की शुरूआत में आपने तीन कलाकृति बनाई थी। उसके बाद करीब 25 साल बाद आपने फिर से सन् 2002 से चित्रकारी शुरू की। जिसके लिये आपने गुरू के रूप में अपनी किताबों को चुना। किताबें ही आपकी गुरू है। आधुनिक चित्रकारों में आप बानगव से प्रभावित है। तथा उनकी शैली में आपने कई कलाकृति बनायी है। आपने लोककला में भी काम किया है। आप बताते हैं जब आप छोटे थे तब आपका घर एक गाँव के पास था जब आप गाँव में जाते थे तो गांव में घरों की दीवारों पर गोवर मिट्टी गेरू और चूने से कुछ चित्र व आलेखन बने देखते थे जो आपको बहुत अच्छे लगते थे। तब आप सोचते थे कि मैं भी कुछ ऐसा बनाऊं। वहीं से आपने लोककला की प्रेरणा ली। आपने आपनी कलाकृति में कई प्रयोग भी किये है। जैसे मोम और एक्रलिक को एक साथ प्रयोग करना , मोमरंग के चित्र, एक्रिलिक और तेलरंग आपने बनाये है।

चित्रों के विषयः- आपने व्यक्ति चित्रण, वस्तु चित्रण, प्रकृति चित्राण चित्र संयोजन आदि सभी गनाये है। आपके चित्रों के विषय भी अलग होते है। जैसे काम करता हुआ कारीगर, उदास बैठी स्त्री, फूलदान, मूर्ती, रखे हुये कांशे के

वर्तन या वनस्पति विज्ञान की किताबों में बने विभिन्न प्रकार के चित्र , झोपड़ी आदि।

रंग योजनाः— आपके अधिकतर चित्रों में लाल रंग की अधिकता होती है। जो आपमें उत्साह को दर्शाता है। आपने चमकीले गहरे व प्रमुख रंगों का प्रयोग किया है। चित्रों में गहराई या अन्धकार दिखाने के लिये आप काले रंग का प्रयोग अधिकतर करते है। इसके अतिरिक्त आपके चित्रों में नीला रंग का भी प्रयोग बहुतया देखने को मिलता है।

तकनीक योजनाः— आपने जलरंग, तेलरंग, एक्रिलिक मोम के रंग, पेस्टल रंग सभी में कार्य किया है। आपने कागज केनवास व हार्डबोर्ड आदि सभी प्रकार के धरातल का प्रयोग किया किया है। आपने अपने चित्रों में तरह तरह के प्रयोग किये है। जैसे पेस्टल और तेलरंग का एक साथ प्रयोग, पेस्टल और एक्रिलिक रंगों का प्रयोग आदि आपके चित्रों में गहरे रंग का प्रयोग अधिक देखने को मिलता है। जिसे आप चित्रफलक पर सपाट लगाते है।

चित्रसंख्या 103:— यह चित्रसंख्या व्यक्ति चित्रण है। जिसे हार्डबोर्ड पर तेलरंग, से बनाया गया है। जिसका शीर्षक "**कारीगर**" है। इसे आपने सन् 1977 में बनाया था। यह चित्र कश्मीरी कारीगर का है। जो पीलत के फूलदान पर चित्रकारी कर रहा है। वह कश्मीरी टोपी पहने है। यह प्रमोद राय के जीवन की सबसे पहली कृति है।

चित्रसंख्या 104:— चित्रसंख्या उत्तर प्रभाव वाद के बानगव से प्रभावित है। चित्र का शीर्षक "**श्रंगार**" है चित्र को हार्डबोर्ड पर तेलरंग से बनाया चित्र में सुन्दर रंग संयोजन है। इसमें पेड़ के नीचे बैठी दो स्त्री चित्रित है। वह विश्राम की मृद्रा में है। एक स्त्री दूसरी का श्रंगार कर रही है। चित्र को बिन्दु वादी शैली में बनाया गया। स्त्री आदिवासी है। जिन्हें नीले रंग से बनाया गया

है। उनके पास कुछ वर्तन भी रखे है।

<u>चित्रसंख्या 105:–</u> चित्र में गाँव की झोपड़ी बनायी गई है। झोपड़ी के बाहर कपड़े सूख रहे। तथा घर के बाहर ही बैलगाड़ी का पहिया, बल्टी व मजदूरी का सामान रखा था। झोपड़ी के पास ही गाय बैठी है तथा पास चरवाहा बैठा है। चित्र में झोपड़ी को हरे रंग से बनाया गया है। यह चित्रफलक पेपर पर एक्रिलिक और पेस्टल रंग से बनाया गया है।

<u>चित्रसंख्या 106:–</u> चित्रफलक का शीर्षक प्रतीक्षा है। जिसे पेपर पर एक्रलिक और पेस्टल के मिश्रित माध्यम द्वारा बनाया गया है। चित्र में एक स्त्री चित्रित है जो पेड़ के नीचे बैठी किसी की प्रतीक्षा में है। वह उदास नजरे झुकाये बैठी है। और शायद अपने प्रेमी का इन्तजार कर रही है। चित्र में आकृति को सपाट बनाया गया है। और उसे बाहय रेखा द्वारा उभारा गया है।

<u>चित्रसंख्या 107:–</u> इस कलाकृति का शीर्षक **"चार सूरजमुखी"** हैं इसे एक्रिलिक और तेलरंग द्वारा केनवास पर बनाया गया है। जिसमें चार सूरजमुखी के फूल बने हुये है जो कुछ पुराने और मूरझाये हुये लग रहे है। जिनकी कुछ पत्तियां नीचे की तरफ गिरी पड़ी है। फूल फूलदान में लगे हुये है। फूलदान के पास ही लाल रंग की एक किताब रखी हुई है। चित्र में रंग संयोजन बहुत ही सुन्दर है। यह एक वस्तु चित्रण है।

<u>चित्रसंख्या 108:–</u> यह कलाकृति वस्तु चित्रण है। जिसे केनवास पर तेलरंग और एक्रलिक द्वारा बनाया गया है। चित्र में मेज पर रखी एक मूर्ती, किताबें व कलमदान को बनाया गया है जिसमें कुछ तूलिका रखी है व पीछे की दीवार पर एक कलाकृति टंगी हुई है। चित्र में मेज पर रखी मूर्ती एलोरा की लग रही है।

<u>चित्रसंख्या 109:–</u> चित्रफलक का शीर्षक **पाँच बर्तन** है। जिसे तेलरंग और पेस्टल रंग द्वारा केनवास पर बनाया गया है। चित्र में पाँच मिट्टी के बर्तन बने है। जो पुराने समय के है। चित्र वस्तु चित्रण है। वर्तनों को ग्रे रंग से बनाया

गया है।

<u>चित्रसंख्या 110:–</u> चित्र का शीर्षक **"जंगल का प्रकृति चित्रण"** है। चित्र को तेलरंग और पेस्टल रंग द्वारा केनवास पर बनाया गया है। चित्र एक प्रकृति चित्रण है। जिसे आपने कल्पनाशीलता के आधार पर बहुत ही सुन्दर बना दिया है। चित्र में पेड़ ऐसे बनाये गये है जैसे ठण्डे स्थानों पर पाये जाते है।

<u>चित्रसंख्या 111:–</u> कलाकृति एक प्रकृति चित्रण है। जिसमें नदी के पास जंगल दिखाया गया है। जंगल की परछाई नदी में दिखाई दे रही है। चित्र में रंग संयोजन बहुत ही सुन्दर है। हल्के व धुधले रंगों का प्रयोग किया गया है।

<u>चित्रसंख्या 112:–</u> चित्रफलक प्रकृति चित्रण है। जिसमें कुकुरमुत्ते नामक एक छोटे से फंगस का चित्र बनाया गया है। चित्र को केनवास पर तेलरंग, पेस्टल व एक्रलिक द्वारा बनाया गया है। यह चित्र जीव विज्ञान की किताबों में मिलता है। उससे ही प्रेरित होकर आपने इसे बनाया है।

अध्याय षष्टम्
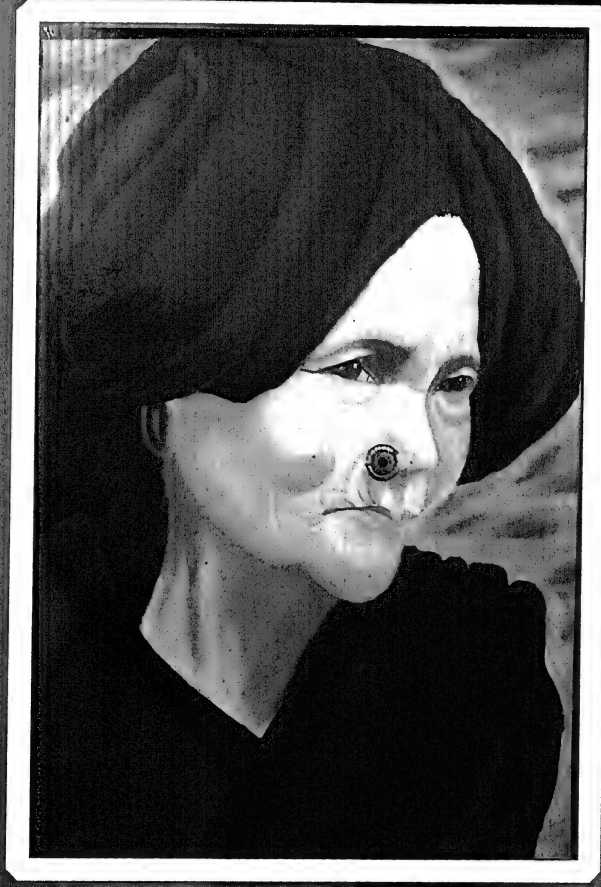
आधुनिक कला और लोककला का तुलनात्मक अध्ययन

6.1 - रेखा

6.2 - रूप

6.3 - वर्ण

6.4 - तान

6.5 - पोत

6.6 - अन्तराल

आधुनिक कला और लोककला का तुलनात्मक अध्ययन

6.1 - रेखा

6.2 - रुप

6.3 - वर्ण

6.4 - तान

6.5 - पोत

6.6 - अन्तराल

षष्टम् अध्याय

आधुनिक कला और लोककला का तुलनात्मक अध्ययन

आधुनिकता से वर्तमान का संकेत मिलता है भूतकाल का वर्तमान स्थिति पर प्रभाव सदैव देखा गया है क्योंकि वर्तमान की नींव तो भूतकाल में है। और भारतीय कला अपनी मूल और मौलिक भारतीय परम्परा में हमेशा विधमान रही है। कला ने स्वयं अपना काल कभी परिवर्तन नहीं किया। लेकिन समय के परिवर्तन ने कला को अनेकों प्रकार से ऩाम संस्कृण प्रदान किया है। जैसे की प्राचीन कला, समकालीन कला, वर्तमान कला और आज की आधुनिक कला नाम से जाना जाता है[1]। इन कलाओं में समय के साथ नाम परिवर्तन तो हुये ही है। साथ ही साथ उनकी शैली तकनीक, माध्यम तथा विषय में भी परिवर्तन हुये है। इन कलाओं में अपने स्थायीत्व के लिये भी संघर्ष होता है।

लोककला की यह मुख्य समस्या है कि वो लोक में व्याप्त होते हुये भी अपने तत्व, विधान, शैली तथा भावों के लिये प्रमाण प्रस्तु करने में असक्षम है[2]। और वहीं आधुनिक चित्रकला बिना किसी नियम भावों, विधान सिद्धान्त के स्वतन्त्र रूप में अपना प्रभाव लिये हुये है, इस प्रकार दोनों की ही अपनी अपनी विशेषता है। जो निम्नलिखित है जैसे कि–

1. लोक चित्रकला जहां सिद्धान्त और परम्परा से बनी है वहीं आधुनिक चित्रकला स्वतन्त्रता और नवीनता की लालसा है[3]।

2. लोक चित्रकला में रेखाँकन और रूप आकार को प्राथमिकता दी जाती है। तथा रंग–विधान सपाट और स्वाभाविक रहता है।

किन्तु आधुनिक चित्रकला में रेखाँकन अथवा रूपाँकन को उतना महत्व

नहीं दिया जाता है। रंग विधान ने उसका स्थान ले लिये है। रंग के द्वारा ही रूप आकार तक का निर्माण कर दिया जाता है[4]।

4. लोककला में एक रूपता बहुत ही लम्बे समय से पायी जा रही है। जबकि आधनिक चित्रकला में नित्य नवीनता और आकर्षण कौतुक के लिये प्रयोगवादी दृष्टिकोण को अपनाया जाता है।

5. लोक चित्रकला का सम्बन्ध समाज से है तथा समाज से सीधे जुड़ी हुई है और पीढ़ी दर पीढ़ी परिवार में आगे बढ़ती रहती है। और आधुनिक चित्रकला व्यक्तिवादी कही जा सकती है जिसको दूसरा नाम "कला, कला के लिये" के लिये दिया जा सकता है।

6. लोककला में भारतीय संस्कृति समावेश है तथा उसमें भारतीय सिद्धान्त पाये जाते है और आधुनिक चित्रकला में भारतीयता से उतनी नहीं जुड़ी जितनी कि लोककला। यह यूरोपीय शैलियों ये विकसित हुई है।

इस प्रकार दोनों की ही अपनी अपनी विशेषता है और इन विशेषताओं से अपने आप ही दोनों में अन्तर झलकने लगता है। आधुनिक कला और लोक कला के इन्हीं अपनी अपनी विशेषता, नियम, तकनीक, सिद्धान्त आदि के आधार पर हम उनका तूलनात्मक अध्ययन करेगें।

आधुनिक कला और लोककला की तुलनाः–

लोककला और आधुनिक कला दोनों ही कलाकार को आत्मिक सुख देती है। और कलाकार को इन्हें चित्रित करने पर सुख की अनुभूति होती है आधुनिक कला का जन्म संघर्ष और प्रतिरोध की उत्तेजक भावना के जन्म के फलस्वरूप हुआ[5]। क्योंकि प्राचीन कला ने कलाकारों को सीमा–सिद्धान्त और परम्परा में बांध दिया था। उसे स्वतंत्रता नहीं थी। वह निश्चित परम्परा के अनुरूप कार्य करने को बाध्य था। आने वाली नयी पीढ़ी के कलाकारों ने इसका विरोध किया

और स्वतंत्रत रूप से कार्य किया। जिससे एक नयी शैली का जन्म हुआ जिसे आधुनिक कला कहा गया और लोककला का उद्भव प्रागैतिहासिक काल से ही स्वीकार किया गया लोकचित्रण के प्रारम्भ के सम्बन्ध में हम यह कह सकते है कि जब किसी आदि मावन ने किसी पत्थर या नुकीली वस्तु से गुहा की भित्ति पर आड़ी तिरछी लकीरें खींचकर भावभिव्यक्ति की वहीं से लोक चित्रकला प्रारम्भ हुई। इस प्रकार दोनों ही कलाओं का जन्म अलग अलग जरूर हुआ है। किन्तु दोनों ही कलाकार को आत्मीय सुख प्रदान करती है।

किन्तु दृश्य कला के मूलधार पर दोनों में अन्तर पाया जाता है। यह मूलधार निम्नलिखित है।

6.1. रेखा 6.4. तान
6.2. रूप 6.5. पोत
6.3. वर्ण 6.6. अन्तराल

रेखाः– आधुनिक कला में कलाकार चित्र बनाने के लिये पूर्णतः स्वतंत्रत होता है। वो अपने विचारों को कैसे भी हमारे सामने रख सकता है। जैसे कि प्रतीकात्मक रूप में या आभासत्मक रूप में या यर्थात चित्रण करके या रेखीय चित्रण द्वारा। और कलाकार इन्हीं के माध्यम से अपने विचार रखता है, आधुनिक कलाकार परम्परा से हटकर कुछ नवीन प्रस्तुत करना चाहता है इसलिये रेखाँकन इतना महत्वपूर्ण नहीं होता है और अन्य शैली जैसे प्रतीकात्मक, आभासत्यक और तकनीक को ज्यादा महत्व दिया जाता है। ऐसा नहीं है कलाकार रेखाँकन कार्य नहीं करते है समकालीन कलाकारों में ऐसे बहुत से कलाकार है जो रेखा के माध्यम से अभिव्यक्ति कर रहे है। किन्तु रेखा का महत्व प्रत्यक्ष न होकर अप्रत्यक्ष रूप से होता है[6]। समकालीन कला में जब रेखाँकन किया जाता है वह तकनीक को ध्यान में रख किया जाता है कलाकार जहाँ धरातल पर तेल रंग या एक्रिलिक रंग लगाता है वहीं वह उस धरातल में रेखाँकन करके कुछ नवीनता लाने की कोशिश करता है या वह लोक कला से

प्रेरित होकर अपने अनुसार अपनी तकनीक में रेखाँकन करता है जैसे की यामिनि राय के चित्रों में जिसमें आपने चित्रों को तेल रंग व जल रंग से बनाया है आकृति चित्रों में सपाट है किन्तु रेखाँकन आपने उन्हीं रंग से किया है। समकालीन कला में प्रत्येक कलाकार अपनी नई तकनीक की खोज में लगा है। इसके लिये वह पूर्ण रूप से स्वतंत्र है कुछ कलाकार रेखा को महत्व दे रहे है कुछ नहीं। यह कलाकार रेखांकन प्रायः पेन पेन्सिल चारकोल, स्याही आदि से करते है।

जबकि लोककला में रेखा का बहुत महत्व है जो एक ओर रूप का निर्माण करती है। वहीं कलाकार की भावनाओं को भी स्वतंत्रता पूर्वक अभिव्यक्ति करती है। रेखाओं द्वारा लोककला का सौन्दर्य बड़ता है। लोककला में रेखांकन ज्यादा होता है और चित्रांकन कम। लोककला में चित्रों में रंगों को सपाट भरकर रेखांकन द्वारा आकृति को सीमित किया जाता है चित्रों में रेखायें गहरी होती है। तथा देवी देवताओं, धार्मिक, प्रतीकात्मक व अलंकरण सब रेखाओं द्वारा ही पूर्ण किये जाते है रूप का स्त्रोत रेखायें है[7]।

लोककला में रंगोली, माण्डने, होई जैसे कला प्रकारों की रचना की जाती है। इसके अतिरिक्त देवताओं के चित्र , पड़ भिति पर चित्रण , खिलौने व जीवनोपयोगी कलात्मक वस्तुओं पर रेचाचित्र द्वारा चित्रांकन किया जाता है। यद्यपि क्षेत्र व धार्मिक मान्यता में अन्तर के अनुसार इन प्रतीकों व आकारों में भिन्नता पायी जाती है। लोककला की रेखा तीखी व रचना पद्धति पूर्व नियोजित होती है। तथा लोककला का चित्रांकन मुक्त हस्त रेखांकन पद्धति द्वारा किया जाता है[8]।

यह रेखांकन प्रायः काले, सफेद या गेरू रंग से किया जाता है चित्र में रेखा का बहुत महत्व होता है जहाँ एक ओर वह रूप का निर्माण करती है वहीं कलाकार की भावनाओं को भी स्वतंत्रता पूर्वक प्रस्तुत करती है। सरल रेखा में शान्ति है तो प्रवाही रेखओं में गति, लावण्य और मधुरता है।

6.2 रूप

प्रत्येक कलाकार चित्रों में मौलिकता के सृजन के लिये विभिन्न प्रकार के रूपों का प्रयोग करता है। और रूप दो प्रकार के होते है एक हमें दृष्टि से दिखाई देता है। और दूसरा जो हम अनुभव करते है समकालीन कलाकार अपनी कला की अभिव्यक्ति करने के लिये पूर्णतयः स्वतन्त्र होता है वह अपनी कला में नई तकनीकों के सृजित करता है , जिसे वह रूपों के माध्यम से दिखाता है जिसका जन्म वह अपने मस्तिष्क में करता है। और इसी मस्तिष्क के आधार पर वह रूप को किसी भी विधि या शैली द्वारा प्रस्तुत करता है जैसे कि आभासत्मक, यर्थाथवाद या प्रतीकात्मक आदि। जैसे कि यदि कोई समकालीन कलाकार गांधीजी के रूप को या उनकी उपस्थिति को दिखाना चाहता है तोजरूरी नहीं कि एक वह उनका पूरा यर्थात चित्रण करें वह एक चश्मा और उनकी पर की वाहय आकृति को रेखांकित करके भी उन्हें दर्शा सकता है। रूप की विविधता के माध्यम से चित्र में संतुलन तथा एकता का प्रभाव उत्पन्न होता है। समकालीन कला में कलाकार के पास बाहय जगत में वस्तुओं का असीम खजाना है जिसे रचनाकार रूपों के माध्यम से धरातल पर बनाते हैं। समकालीन कला का उन वस्तुओं की बारीकियों को नहीं देखता बल्कि अपना स्वभाव और बुद्धि की विवेकता के आधार पर अपनी तकनीक द्वारा उसे चित्रित करता है। वह रूप परंपरागत भी हो सकते हैं या अमूर्त शैली में भी। प्रत्येक कला का चित्रों में मौलिकता के सृजन के लिये विभिन्न प्रकार के रूपों का प्रयोग करता है जो एक दूसरे से पृथक होते हैं यदि दो कलाकारों की कलाकृति में एक से दो रूप मिलते हैं तो वह एक दूसरे की नकल कहलाती है। आधुनिक कला में रूप परिवर्तन की होड़ सी लगी रहती है।

लोक चित्रों की आकृतियां सदैव एक ही मुद्रा में होती है। हाथ व पैरों की स्थिति गतिवान चित्रित की जाती है। किन्तु शरीर सामान्यः स्थिर चित्रित किया जाता है। कभी पूरा चेहरा या कभी आधा चेहरा चित्रित किया जाता है कार्य

करती हुई आकृति का चित्रण करते समय हाथ , अगुलियों और शरीर की वास्तविक स्थिति स्पष्ट नहीं होती है। आकृति का रूप व रंग निश्चित होते है जो पीढ़ी पर पीढ़ी हस्तांतरित होते रहते है। या हो रहे है[9]। आकृतियों कीआँख मुँह नाक गोल बिन्दी व एक छोटी सी रेखा द्वारा बना दिये जाते है। लोककला में रूप परिवर्तन को विशेष महत्व नहीं दिया जाता है न ही रूप परिवर्तन का कोई महत्व है[10]। रूप का निर्माण ऐसे किया जाता है कि आकृति आसानी से समझ में आ सके। लोककला न केवल लोगों के धार्मिक कार्यो व उत्सवों बल्कि उनके दैनिक जीवन में घुल मिल गयी है। वह उनकी धार्मिक एवं मांगलिक भावनाओं व सौन्दर्य प्रियता की पूर्ति करती है। लोककथाऐं, पौराणिक कथाऐं व वीरगाथाऐं उनके सामने जीवन उपयोगी ज्ञान का भंडार खोलती हैं व प्रेरणा स्रोत होती हैं। अगर हम लोक कला के रूप में परिवर्तन करें तो यह उसके समाज उपयोगी कार्य में व्यवधान उत्पन्न होगा। अगर हम लोककला के रूप में परिवर्तन करते हैं तो वह अपने महत्वपूर्ण कार्य से हट जायेगी तब वह हमारी धार्मिक, समाज उपयोगी लोककला नहीं रहेगी।

6.3 वर्ण

रंग की अपनी भाषा होती है रंग रेखा को स्थान और स्थिति देता है। सभी विद्वानों ने रंगों की मान्यता को स्वीकार किया है। मानव जीवन का प्रत्येक पहलू रंगों के प्रभाव से व्यक्त होता है तथा प्रत्येक भाव के लिये एक निश्चित वर्ण होता है। जैसे की नीला रंग निराशा व विशालता का, बैगनी रंग राष्ट्र प्रेम का, हरा रंग हरियाली व प्रसन्नता का, लाल रंग, क्रोध, कामुकता व उत्तेजना का तथा श्वेत रंग शान्ति का, शोक व प्रकाश का प्रभाव उत्पन्न करता है। शोक विषय के लिये नीला व काले आदि रंगों को धूमिल करके भी लगाया जा सकता है। किन्तु यदि आज चित्रकला में रंगों का अध्ययन करे तो ज्ञात होता है। कि कलाकार अपने 'मन' के अनुरूप रंग लगा रहा है जैसे की लक्ष्मीनारायण भावसार के चित्र संख्या 7 में। उदासी के वाताचरण को लाल रंग से भी दर्शाया

जा सकता है वृक्षों का हरा रंग होना आवश्यक नहीं वह लाल भी हो सकता है चित्र संख्या 15 में आकाश का रंग हल्का नीला व सूरज का लाल होना आवश्यक नहीं वह नीला व हरा भी हो सकता है। इस प्रकार हम देखते है कि कलाकार अपनी नवीन खोज के आधार पर रंग लगा रहा है। जिसमें वह रंग को कहीं कहीं प्रतीक्षात्मक भी लगाता है[11]। इसी कारण वृक्ष मेजेन्टा, आकाश लाल, चेहरा हरा , पर्वत–बैजनी तथा वृक्ष के तने हरे हो गये है। आज के समय में कलाकार हर तरह का रंग प्रयोग कर रहा है। प्रकृतिक, खनिज, कृत्रिम आदि न रंगों में जलरंग , एक्रिलिक , तेलरंग प्रमुख है। इन्हें विभिन्न माध्यमों में मिलाकर तैयार करके धरातल पर लगाया जाता है।

लोक चित्रकला में प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया जाता है जिसमें प्रमुख रूप से रज व हल्दी का पीला, सिन्दूर, रोली, महावर व गेरू का लाल, नील का नीला रंग लोक चित्रों में प्रयोग किया जाता है। कभी कभी दैनिक वस्तु का प्रयोग भी लोक कला में किया जाता है। कुछ चित्रों में रंगों का प्रयोग होता ही नहीं है। सिर्फ गोबर से ही चित्रण किया जाता है लोक चित्रकला चित्र या तो रेखाँकन द्वारा बनाते है या आकृति में यदि रंग भरा जाता है तो वह रंग सपाट भरा जाता है। चित्र में प्रमुखतः प्राथमिक रंग ही प्रयोग किये जाते है जैसे कि लाल, हरा, पीला, नीला, काला श्वेत आदि। चित्रों में उभार या छाया प्रकाश को प्रदर्शित नहीं किया जाता है। चित्रों में रंग संयोजन का भी विशेष महत्व नहीं होता है अधिकतर विपरीत रंगों को लगाया जाता है। जैसे कि नीला , लाल, पीला, हरा, काला। किन्तु वर्तमान समय में लोककला में रंगों को लेकर क्रान्ति सी आई है रंगोली को रंगों को अब विभिन्न तान में बनाया जाने लगा है और उन्हे विभिन्न माध्यम में बनाया जाने लगा है जैसे लकड़ी के बुरादे से, बजरी से, रवा सूजी से या रासायन द्वारा। इन रंगों द्वारा रंगोली में भी इतनी सुन्दर कलाकृति बनने लगी है। कि वह सजीव व आंखों को शान्ति देने वाली हो गई है। और देखने में वह ऐसी लगती है जैसे तेलरंग या जलरंग से बनी हो कभी

कभी कलाकार रंगोली को देर तक बनाये रखने के लिये रंगो को गोद में मिलाकर लगाने लगे है।

6.4 तान

तान आधुनिक चित्रकला का एक महत्वपूर्ण गुण है जिसका प्रयोग आज का कलाकार कुशलता पूर्वक करता है। कलाकार आवश्यकतानुसार कितनी ही तानों की रचना कर सकता है। समकालीन कलाकार जहाँ एक ओर चित्र में विभिन्न रंगों का प्रयोग करता है वहीं उन रंगों की विविध तानों को भी स्थान देता है। आधुनिक चित्रकला में जिस प्रकार रेखा, रंग तथा रूप के अपने प्रभाव होते है उसी प्रकार तान के भी विविध प्रभाव होते है। जैसे की हल्की तथा प्रकाशित तान प्रसन्नता , उल्लास तथा गहरी तान निराश , रहस्यमयता का वातावरण दर्शाती है। किन्तु आधुनिक समय में कला के क्षेत्र में इनते नये–नये प्रयोग हो रहे है कि इसके कोई निश्चित नियम निर्धारित नहीं किये जा सकते। लोककला में तान इतनी महत्वपूर्ण नहीं होती है न ही उसे चित्र में चित्रित करने की कोशिश की जाती है। लोक चित्र या तो रेखाँकन द्वारा चित्रित किये जाते है या उसमें रंगों को सपाट भरा जाता है। किन्तु समय परिवर्तन के साथ ही लोककला के चित्रण में थोड़ा परिवर्तन आया है और कलाकार नये प्रयोग करने लगा है। जैसे रंगोली में रंगों को विभिन्न प्रकार की तानों में भरना आदि या विभिन्न प्रकार की लोकचित्रकला जैसे पट चित्र, दीवार पर चित्रण या वर्तनों पर चित्रण करना। समय के साथ लोक चित्रकला में थोड़ा सा परिवर्तन अवश्य हुआ है किन्तु यह परिवर्तन शहरों तक ही सीमित है। गाँवों में अब भी उसका पुराना परम्परागत रूप चला आ रहा है।

6.5 पोत

किसी भी सतह या धरातल की बुनाबट उसकी पोत कहीं जाती है। और आधुनिक चित्रकला में पोत यानि धरातल का काफी महत्व है। पोत चित्रों में विविधता लाता है। यदि एक ही चित्र को विभिन्न धरातल पर बनाया जाये तो

प्रत्येक धरातल में उस का अलग प्रभाव उत्पन्न होगा। आधुनिक समय में कलाकार को धरातल तैयार करने के लिये मेहनत नहीं करनी पड़ती बाजार में बने बनाये धरातल मिलते हैं जिन्हे कलाकार अपनी सुविधा के अनुसार प्रयोग करता है। यह धरातल निम्न प्रकार के होते है। जैसे केनवास, हार्डबोर्ड, कागज, काँच, कपड़ा, रबर सीट, लकड़ी आदि किन्तु यह धरातल मंहगा पड़ता है नवीन तकनीकों की खोज में धरातल बहुत सहयोग प्रदान करता है। नवीनता के लिये कलाकार रंग में मोम रेत , बजरी तथा मिश्रित माध्यम का प्रयोग धरातल में करता है आज का कलाकार विषय को महत्व नहीं देकर तकनीक को महत्व दे रहा है। और तक के तौर पर प्राकृतिक रंग ही प्रयोग किये जाते है अधिकतर परिस्थिति में धरातल तैयार किया जाता है जैसे की गोबर से लीपकर या चूने से पोत कर या मिट्टी से लीपकर आदि। चित्रण के लिये धरातल हमेशा साफ सुथरा व चिकना होना चाहिये। धरातल जितना अच्छा होगा व कलाकार जितना कुशल होगा लोक चित्रण उतना ही सुन्दर और प्रभाव पूर्ण बनेगा।

इस प्रकार कलाकार के भाव, कल्पना, संवेग अमूर्त होते है। जिन्हे मूर्त रूप प्रदान करने के लिये रेखा, रंग रूप जैसे मूलाधारों का आश्रय लिया जाता है रेखा चित्र का प्रथम आधार होने के साथ साथ रूप के निर्माण में भी सहयोग देती है और रंग उसे सरस बनाकर उसमें जान डालते है। रेखा रंग, रूप, तान, पोत एक दूसरे से सम्बन्धित है प्रत्येक तत्व के अपने गुण तथा प्रभाव होते है जो अभिव्यक्ति में सहायक होते है। इन तत्वों का प्रयोग प्रत्येक शैली व तकनीक में होता है। किन्तु इनकी अभिव्यक्ति में भिन्नता पायी जाती है।

6.6 अन्तराल

अन्तराल चित्र का वह तत्व है जिसके अभाव में संयोजन असम्भव है द्विआयामी चित्र भूमि ही चित्र का अन्तराल है इसको भूमि बन्धन, स्थान निरूपण व स्थान की संज्ञा भी दी गयी है। यह अन्तराल प्रत्येक कला के लिये महत्वपूर्ण होता है चाहे वह लोककला हों या आधुनिक कला। अन्तराल की चित्रभूमि

द्विआयामी होती है और जगत में पायी जाने वाली वस्तुयें त्रिआयामी होती हैं। आधुनिक कलाकार नये नये प्रयोग करके स्वत्रंत विधि का विकास करता है और चित्रभूमि पर दृष्टिभ्रम उत्पन्न करके त्रिआयामी प्रभाव लाता है जिससे वस्तुयें सजीव हो उठती हैं[13]।

जबकि लोक चित्रकला में चित्रण परम्परागत रूप में होता है जिसमें वस्तुओं का चित्रण द्विआयामी होता है। कलाकृति को सपाट रंग भरकर चित्रित किया जाता है। चित्र में आकृति निश्चित होती है। चित्र में अन्तराल को वृत्त, आयत, वर्ग, त्रिकोण तथा ज्यामितीय आकार द्वारा निश्चित किया जाता है उसके बाद चित्रण किया जाता है।

सन्दर्भ संग्रह

1. डा0 एस0वी0एल0 सक्सैना, डा0 आनन्द लखटकिया, भारतीय चित्रकला और परम्परा और आधुनिकता का अन्तर्द्वन्द।

2. डा0 मधु श्रीवास्तव, बुन्देलखण्ड की लोक चित्रकला , अध्याय 4 शास्त्रीय चित्रण से समस्त, विषमता तथा अन्य कलाओं से सम्बन्ध पृष्ठ 60।

3. सरन बिहारी लाल सक्सैना, कला सिद्धान्त और अन्य अध्ययन 16, आधुनिक भारतीय कला, पृष्ठ क्रमांक 140।

4. कला सिद्धान्त और परम्परा , एस.वी.एल. सक्सैना , अध्याय 16 , आधुनिक भारतीय लि, पृष्ठ–189।

5. एस0बी.एल सक्सैना, डा0 आनन्द लखटकिया, भारतीय चित्रकला परम्परा एवं आधुनिकता का अर्न्तद्वन्द, पृष्ठ–201।

6. किरण प्रदीप , आकृति , कलागत तत्व सिद्धान्त , माध्यम एवं प्रविधिया , पृष्ठ 1.4।

7. एस0बी.एल सक्सैना, डा0 आनन्द लखटकिया, भारतीय चित्रकला परम्परा एवं आधुनिकता का अर्न्तद्वन्द, पृष्ठ–50।

8. र0वि0 साखलकर, कला के अन्तदर्शन, पृष्ठ 32।

9. डा0 मधु श्रीवास्तव , बुन्देलखण्ड की लोक चित्रकला , अध्याय 4 शास्त्रीय चित्रण से समस्त, विषमता तथा अन्य कलाओं से सम्बन्ध पृष्ठ 62।

10. र0वि0 साखलकर, कला के अन्तदर्शन, पृष्ठ 33।

11. किरण प्रदीप , आकृति , कलागत तत्व सिद्धान्त , माध्यम एवं प्रविधिया , पृष्ठ 1.4।

अध्याय सप्तम्

उपसंहार

उपसंहार

अध्याय सप्तम्

उपसंहार

लोककला का जनमानस में गहरा प्रभाव है यह हमारी संस्कृति, रीतिरिवाज, परम्परा व धर्म से जुड़ी हुयी है। यह कला हमारे देश के गांवों में अधिक पायी जाती है और भारत एक ग्राम प्रधान देश है शायद यही कारण है कि लोककला भारतीय कला जगत में हमेशा विद्यमान रही है और अपना स्थान ग्रहण किये हुये है। लोक चित्रकला के द्वारा , हमें प्राचीन धर्म, सभ्यता, परम्परा, संस्कृति और उनके मूल स्त्रोतों का ज्ञान होता है , लोककला में मानवीय भावनाओं की उत्कृष्ट प्रवृत्ति दिखायी देती है। लोककला में इतनी स्वाभाविकता है कि उससे मानव की धार्मिक संस्कृति तथा सामाजिक अभिव्यक्ति को बल मिलता है लोककला की प्राविधि का ज्ञान हमें वंशानुगत परम्पराओं से होता है।

अपने शोध अध्ययन में मुझे सर्वेक्षण से यह ज्ञात हुआ है कि आज की लोककला में आधुनिकता होते हुये भी उसमें प्राचीन मूल्य हमेशा विद्यमान रहे हैं। जैसे कि पहले भी कहा जा चुका है कि लोककला की अपनी अलग पहचान है वह हर देश एवं प्रदेश में अलग–अलग नामों से पहचानी जाती है। किन्तु उसमें मूल भावना एक ही होती है । जैसे – जैसे युग परिवर्तन हुये है उसी के अनुरुप लोककला ने भी नये नये रुप धारण किये हैं किन्तु लोककला में मुद्रायें

भारतीय चित्रकला के इतिहास में सन् 1950 से अब तक का समय समकालीन नाम से जाना जाता है इस अवधि में भारतीय आधुनिक चित्रकारों ने अनेक कलाशैलियों से प्रभावित होकर चित्रण कार्य किया। यह सभी शैलीय पाश्चात्य देशों से हमारे देश में आयी थी किन्तु एक कला शैली ऐसी थी जो हमारे देश की थी यह मुख्यतः हमारे घर, आंगन, परम्परा, संस्कृति आदि में रची

बसी थी । यह शैली लोककला शैली थी। मैने देखा कि अधिकतम चित्रकार इस कला शैली से प्रभावित है व इस कला शैली में कार्य कर रहे हैं मैने भोपाल जाकर सर्वेक्षण किया तो पाया कि भोपाल के बहुत से कलाकार आधुनिक शैली में कार्य करते हैं किन्तु उनकी चित्रकारी पर लोक कला का प्रभाव बना हुआ है। कुछ कलाकारों ने लोक कला की तकनीक और विषयों दोनों में कार्य किया है । जैसे लक्ष्मीनारायण भावसार, रश्मि जोशी, लक्ष्मण भाण्ड, डी.डी.धीमान आदि जबकि कुछ कलाकारों ने अपनी कलाकृति में लोक कला के विषय को अपनाया है तकनीक को नहीं । जब मैने इन चित्रकारों की कलाकृति का अध्ययन किया तो पाया कि इनकी चित्रकारी में लोककला का विषय तो है किन्तु रुप और तकनीक का अभाव है यह चित्रकार मुख्यतः प्रमोद राय, मंजूषा गांगुली व सुशील पॉल हैं इन चित्रकारों ने लोककला से प्रेरणा तो ली किन्तु उनके ऊपर आधुनिकता का भी प्रभाव बना रहा जिससे इन्होने लोककला के विषय को आधुनिक शैली में प्रस्तुत किया। इनके किसी किसी चित्र में लोककला की तकनीक का भी प्रभाव दिखायी देता है। आप सब से मिलकर तथा आपकी चित्रकारी का अध्ययन करने से मैं इस निष्कर्ष पर पहुँची कि आप सब हमेशा कुछ नया करना चाहते हैं । किन्तु लोककला आपके संस्कारों में रची बसी है। इस कारण आपकी चित्रकारी पर लोककला का प्रभाव आ जाता है शायद यही कारण है कि आप की चित्रकला में विषय तो लोककला के हैं किन्तु कुछ नवीन करने के लिये तकनीक का विकास आप सब स्वंय किया है। इस कारण आप सबकी चित्रकारी में लोककला और आधुनिककला का समन्वय दिखायी देता है।

भोपाल की प्रसिद्ध चित्रकारी और समाज सुधारक शोभा घारे भी मुझे अपने शोध अध्ययन में लोककला से प्रभावित दिखी। आपके चित्रों में लोककला के रुप व प्रतीक विद्यमान है किन्तु तकनीक व विषय वस्तु का अभाव है। आप

प्रकृति चित्रण अधिक करती हैं और उसी में आप लोककला के रुप को दर्शाती है । आपके चित्रों में सूर्य, चन्द्रमा, पहाड़, पशु, पक्षी, आदि का चित्रण लोक कला से प्रेरित रहता है आपके अनुसार "लोककला आपने बचपन से ही देखी है यह आपके मन मस्तिष्क में रची बसी है। अगर आप इसका चित्रण भी करना चाहे तो भी उसका प्रभाव आपकी कलाकृति में आ जाता है क्योंकि यह आपसे जुड़ी हुयी है।

भोपाल में मुझे बहुत कम समकालीन कलाकार ऐसे मिले जो लोककला से प्रभावित नही है जिसमें मुख्य रुप से सचिदानागदेव का नाम आता है और अन्त में सुरेश चौधरी का । सचिदा नागदेव अपने बारे में बताते हैं कि आपने कभी भी लोककला के ऊपर काम नहीं किया वह शुरु से ही मीनिएचर चित्रकारी करते हैं और अब वह अमूर्त चित्रण करते हैं ।

इस प्रकार अपने शोध अध्ययन में मैं इस निष्कर्ष पर पहुंची कि भोपाल के समकालीन कलाकारों पर लोककला का प्रभाव है। अपने शोध अध्ययन में मैने देखा कि भोपाल के समकालीन लोककला से प्रभावित होकर कलाकृति का निर्माण कर रहा है, इन कलाकृतियों में लोककला के विषय व रुप दझोनों ही विद्यमान है किन्तु तकनीक का अभाव है। इस प्रकार लोककला के ततवों व गुणों ने समकालीन कलाकारों को अपनी विशेषताओं से प्रभावित किया हैं अपने शोध से मैं इस निष्कर्ष पर भी पहुंची कि यह प्रभाव आगे जाने वाली कई पीढ़ियों तक बना रहेगा। क्योंकि लोककला हमारी संस्कृति परम्परा और धर्म में रची बसी है। हम इससे अलग नहीं हो सकते हैं। यह परम्परा और धर्म के रुप में हमारे जन्म से मृत्यु तक हमारे साथ रहती है।

इस प्रकार इन सभी भोपाल के समकालीन चित्रकारों में मैने लोककला का प्रभाव खोजने की कोशिश की। जिसमें मे सफल भी हुयी व मैने उनकी चित्रकारी पर लोक कला का प्रभाव पाया।

शोध की परिकल्पना का स्वरुप

लोककला ने बचपन से ही मुझे अपनी ओर आकर्षित किया है मुझे बचपन से ही रंगोली बनाने में अत्यन्त रुचि थी मेरी माँ से यह सब मुझे सीखने को मिला उन्ही को देख देखकर मुझे रंगोली बनाना आया। वह चावल के आटे, गेहूं के आटे, गेरु व सिन्दूर आदि से बहुत सुन्दर रंगोली बनाती थी इसके अतिरिक्त जब वह करवा चौथ का व्रत करती या किसी त्यौहार दपर पूजन करती थी तो जमीन या दीवार को गोबर या चूने से लीपकर उस पर विभिन्न आकृति व आलेखन बनाती थी जो देखने में मोहक व आकर्षक लगता था वह मुझे बहुत आकर्षक लगता था मैं उस कलाकृति के आसपास ही घूमती रहती थी। अतः बचपन से ही में लोककला से प्रभावित रही। यह सब देख देख कर ही मैं बड़ी हुयी और मैने चित्रकला विषय में ही परास्नातक किया।

चित्रकला विषय को मैने व्यवसायिक और अध्ययन के रुप में अपनाया । व्यवसायिक रुप में मैने जब कला एवं दीघाओं और प्रदर्शिनियों में शिरकत की तब मुझे अन्य कलाकारों की कलाकृतियों को देखने का भी मौका मिला तो मैने देखा भारत के समकालीन कलाकारों की कलाकृतियों में लोककला के विषय व रुप दोनो ही विद्यमान है तथा इन कलाकारों की कलाकृतियों में लोककला का प्रभाव होते हुये भी इनके चित्रों में आधुनिकता का पुट अधिक है तथा अपने चित्रों में आधुनिकता को आत्सात किये हुये यह सब देखकर मेरे मन में लोक चित्रकला के बारे में जानने की जिज्ञासा जागृत हुयी कि आखिर इस कला में ऐसा क्या है जो यह आज के समकालीन कलाकारों को प्रभावित किये हुये हैं जबकि आज का समकालीन कलाकार आधुनिक शैलियों में अपनी कलाकृतियों का निर्माण कर रहा है और हमेशा कुछ नया करने को प्रयासरत रहता है यह सब देखकर मेरे मन में लोककला का आधुनिक कला पर प्रभाव जानने की इच्छा हुयी तथा मैने यह जानना चाहा कि बतायी जो कि बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के

ललितकला विभाग में विभागाध्यक्ष हैं आपने मेरे विचार को ध्यानपूर्वक सुना व मुझे मेरे शोध अध्ययन के लिये प्रोत्साहित किया और मेरे मार्गदर्शन के लिये आगे आयी।

मैने अपने शोध अध्ययन के लिये भोपाल का चयन किया। क्योंकि एक दो बार पहले मेरा भोपाल आना जाना हुआ और वहाँ मैने भारत भवन और मानव भवन देखा तो पाया कि वहाँ के कलाकारों पर लोककला का प्रभाव है व कलाकृतिओं में आधुनिकता का समावेश है। भोपाल के यह कलाकार आधुनिक कलाकार के रुप में प्रसिद्ध थे और सभी कलाकारों ने देश विदेशों में अपनी कला प्रदर्शनी लगायी थी। अतः उनकी कलाकृतियों ने मेरी जिज्ञासा को बड़ा दिया। इसलिये मैने अपने शोध अध्ययन के लिये इन्ही चित्रकारों का चयन किया अतः मैने शोध के अध्ययन के लिये भोपाल शहर को चुना। इसके लिये मैने भोपाल शहर के दस कलाकार का चयन किया व उनकी कलाकृतियों पर शोध किया व अपने शोध के लिये मैं इनसे मिली। इनके बारे में जाना कि यह किस शैली में कार्य करते हैं। यह लोककला से कितने प्रभावित है? इनके लोककला के बारे में क्या विचार है ? तथा इन पर लोककला का प्रभाव कहाँ से आया।

अपने शोध अध्ययन में मैने इन सब बातों के बारे में जाना व मै इस निष्कर्ष पर पहुंची कि भोपाल के समकालीन कलाकार में आधुनिकता होते हुये भी लोककला का प्रभाव है तथा अपने शोध में मैने इस बात को सिद्ध करके भी दिखाया है। जिससे मेरा शोध ग्रन्थ अत्यन्त महत्वपूर्ण बन पड़ा है और आपको महत्वपूर्ण जानकारी देता है।

शोध का महत्व

मेरा शोध का विषय अत्यन्त महत्वपूर्ण है तथा इसका महत्व भी है शोध के उपरान्त यह स्पष्ट हुआ कि आधुनिक कलाकार किस प्रकार लोककला

की विशेषताओं, गुण, विषय व तकनीक से प्रभावित तथा आधुनिक कलाकार किस प्रकार हमारी प्राचीन कला लोककला को आत्मसात किये हुये है और आ-धुनिक परिवेश के साथ भी चल रहे हैं वह किस प्रकार की कलाकृतियों का निर्माण कर रहे हैं आधुनिक कलाकारों की प्रेरणा का स्त्रोत क्या है मेरा शोध से आपको यह महत्वपूर्ण जानकारी होती है कि लोककला में समय के साथ कितना परिवर्तन आया है व किस प्रकार लोककला ने समकालीन कलाकारों को प्रभावित किया है तथा यह प्रभाव किस सीमा तक है । समकालीन कला के कितने प्रतिशत कलाकार लोककला से प्रभावित है। मेरा शोध इसलिये भी महत्वपूर्ण है कि इसके द्वारा यह जानकारी होती है कि लोककला और आधुनिक कला में क्या अन्तर है व क्या समानता है तथा यह एक दूसरे से कितनी मिलती जुलती है व दोनों की तकनीक में क्या अन्तर है मेरा शोध आपको नयी सोच के लिये भी प्रेरित करता है जिससे आप नये कला सामाज के अनुरुप अपनी समझ को बदल सके। अतः इस प्रकार मेरा शोध अति महत्वपूर्ण है जो लोक कला और आधुनिक कला के बारे में आपको महत्वपूर्ण जानकारी देता है और आपका ध्यान इस ओर आकर्षित करता है।

शोध का महत्वपूर्ण पक्ष -

ग्रामों में ही नहीं वरन शहरों में भी सदैव से एक बहुत बड़ा वर्ग लोक चित्रकला का संवाहक रहा है। शायद इस कारण की लोककला अपना महत्वपूर्ण स्थान व पहचान बनाये हुये हैं। लोककला की विषयवस्तु आकृति, उपादान व अवसर सम्बन्धित कथा कहानी तथा उसमें निहित नैतिक सन्देश सभी हमारे मानव समाज से जुड़े हैं वहीं आधुनिक परिवेश ने समाज व कला में परिवर्तन ला एक नये समाज को ओर कला को निरुपित किया व आधुनिक कला को जन्म दिया जिसे अन्य कलाओं से अलग माना गया। किन्तु मैने समकालीन कलाकारों पर लोककला का प्रभाव है व यह प्रभाव आगे आने वाली कई पीढ़ियों तक बना रहेगा।

अतः मेरे शोध का महत्वूपर्ण पक्ष यह है कि आज का समकालीन कलाकार लोककला से प्रभावित है व इसे मैने अपने शोध का अध्ययन में सिद्ध कर दिया है।

जो कि मेरे शोध का महत्वपूर्ण पक्ष है क्योंकि मेरे शोध का विषय यदि तकनीकि एवं प्रयोग की दृष्टि से बहुत ज्यादा कठिन नहीं है तो इतना आसान भी नहीं है कि साधारण व्यक्ति समझ सके इसलिये मेरे शोध का महत्व और बढ़ जाता है क्योंकि साधारणतः व्यक्ति लोककला से परिचित है किन्तु किस तरह से इसमें आधुनिकता आती जा रही है। इससे हमारी लोककला भी अछूती नहीं है क्योंकि नित नये कलावेश के साथ आज आधुनिकता के साथ लोक कला आगे बढ़ रही है। अतः मैने अपने शोध ग्रन्थ में इस बात को सिद्ध किया कि भोपाल के चित्रकारों पर लोककला का प्रभाव है। जो कि मेरे शोध का विषय था

सन्दर्भ संग्रह सूची

अग्रवाल गिर्राज किशोर	आधुनिक भारतीय चित्रकला तृतीय संस्करण 2002 प्रकाशक–संजय पब्लिकेशन शैक्षिक पुस्तक प्रकाशक अस्पताल मार्ग, आगरा–3
अग्रवाल डा0 गिर्राज किशोर	कला और कलम प्रथम संस्करण 2002 अशोक प्रकाशन मन्दिर 27–ए साकेत कालोनी अलीगढ़–202001 (उ0प्र0)
बड़ेरिया तारक नाथ	भारतीय चित्रकला का इतिहास प्रथम संस्करण–2004 नेशनल पब्लिकेशन हाउस 2/35, अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली–110002
वर्मा अविनाश बहादुर	कला एवं तकनीक प्रथम संस्करण–1998 प्रकाश बुक डिपो बड़ा बाजार बरेली–243003
साखलकर र0वि0	कला के अन्तः दर्शन प्रथम संस्करण–2004

	प्रकाशक–संस्करण हिन्दी ग्रन्थ अकादमी प्लाट नं0–1 झालाना सांस्थानिक क्षेत्र जयपुर–302004
प्रदीप किरण	आकृति प्रथम संस्करण–2003 कृष्णा प्रकाशन मीडिया (प्रा0) लि0 11, शिवाजी रोड, मेरठ–250001
सक्सैना एस0बी0एल0 सरन सुध, लखटकिया आनन्द	कला सिद्धान्त और परम्परा चतुर्थ संस्करण–2005 प्रकाश बुक डिपो बड़ा बाजार, बरेली–243003
सक्सैना एस0बी0एल0	भारतीय चित्रकला परम्परा और आधुनिकता का अन्तर्द्वन्द प्रकाशन– सरन प्रकाशन, बरेली 40, नेहरू पार्क बरेली
श्रीवास्तव मधु	बुन्देलखण्ड की लोक चित्रकला प्रथम संस्करण मार्च–2002 प्रकाशन–उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र (संस्कृत विभाग , भारत सरकार की एक स्वायन्तशासी संस्था) 14, सी.एस.पी. सिंह मार्ग, इलाहाबाद

अग्रवाल शर्मा — रूपप्रद कला के मूलाधार
प्रथम संस्करण
लायल बुक डिपों मेरठ

पत्र एवं पत्रिकायें

1. जोशी ज्योतिष — समकालीन कला
अंक 17 मई 1996
प्रकाशन, ललितकला अकादमी
रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली

2. जोशी ज्योतिष — समकालीन कला
फरवरी–मई 2003, अंक–24
प्रकाशन, ललितकला अकादमी

3. जोशी ज्योतिष — समकालीन कला
फरवरी–मई 2002, अंक–21
प्रकाशन, ललितकला अकादमी

4. जोशी ज्योतिष — समकालीन कला
अंक 9–10, नवंम्बर 1987/मई 1988
प्रकाशन, ललितकला अकादमी

5. मिश्र अवधेश — कला दीर्घा
अप्रेल 2007, वर्ष 7 अंक 14
प्रकाशन अंजू सिन्हा
1/95, विनीत खण्ड, गोमती नगर
लखनऊ–226010

6. मिश्र अवधेश — कला दीर्घा

	अक्टूवर 2005, वर्ष 6 अंक 11
	प्रकाशन अंजू सिन्हा
	1/95, विनीत खण्ड, गोमती नगर
	लखनऊ–226010
7. मिश्र अवधेश	कला दीर्घा
	अप्रेल 2003, वर्ष 3 अंक 6
	प्रकाशन अंजू सिन्हा
	1/95, विनीत खण्ड, गोमती नगर
	लखनऊ–226010
8. मिश्र अवधेश	कला दीर्घा
	अक्टूवर 2001,
	प्रकाशन अंजू सिन्हा
	1/95, विनीत खण्ड, गोमती नगर
	लखनऊ–226010
9. कला त्रेमासिक	लोककला विशेषांक
	जनवरी से मार्च–2002
	राज्य ललितकला अकादमी
10. विनीत	जागरण सखी
	अगस्त 2002
11. दैनिक जागरण 2006 अप्रैल	
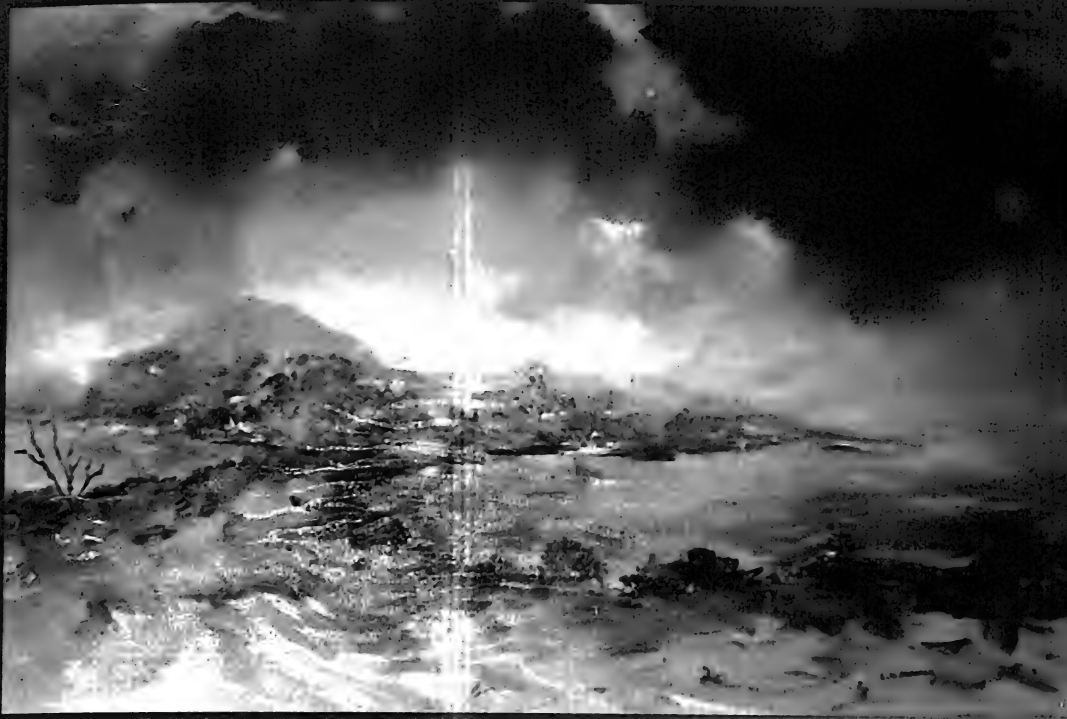
चित्र संख्या - 1

चित्र संख्या - 2

चित्र संख्या - 3

चित्र संख्या - 4

चित्र संख्या - 5

चित्र संख्या - 6

चित्र संख्या - 7

चित्र संख्या - 8

चित्र संख्या - 9

चित्र संख्या - 10

चित्र संख्या - 11

चित्र संख्या - 12

चित्र संख्या - 13

चित्र संख्या - 14

चित्र संख्या - 15

चित्र संख्या - 16
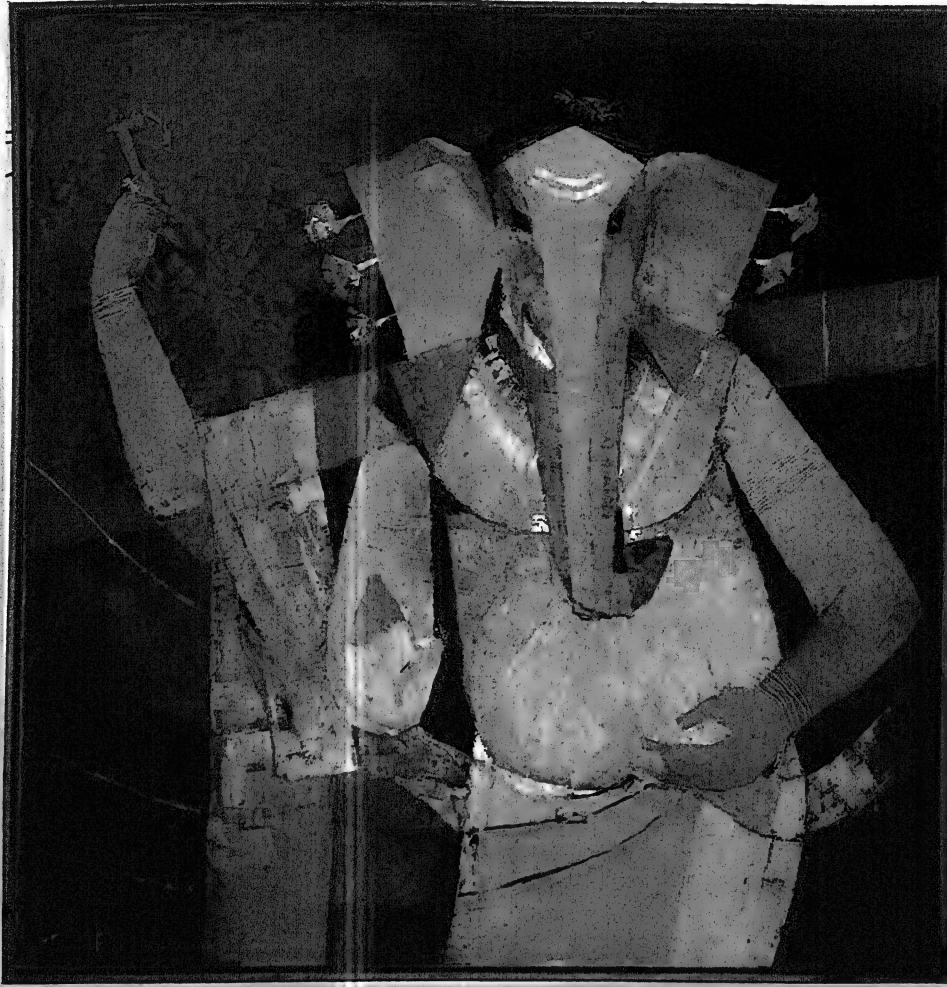
चित्र संख्या - 17

चित्र संख्या - 18

चित्र संख्या - 19

चित्र संख्या - 20

चित्र संख्या - 21

चित्र संख्या - 22

चित्र संख्या - 23
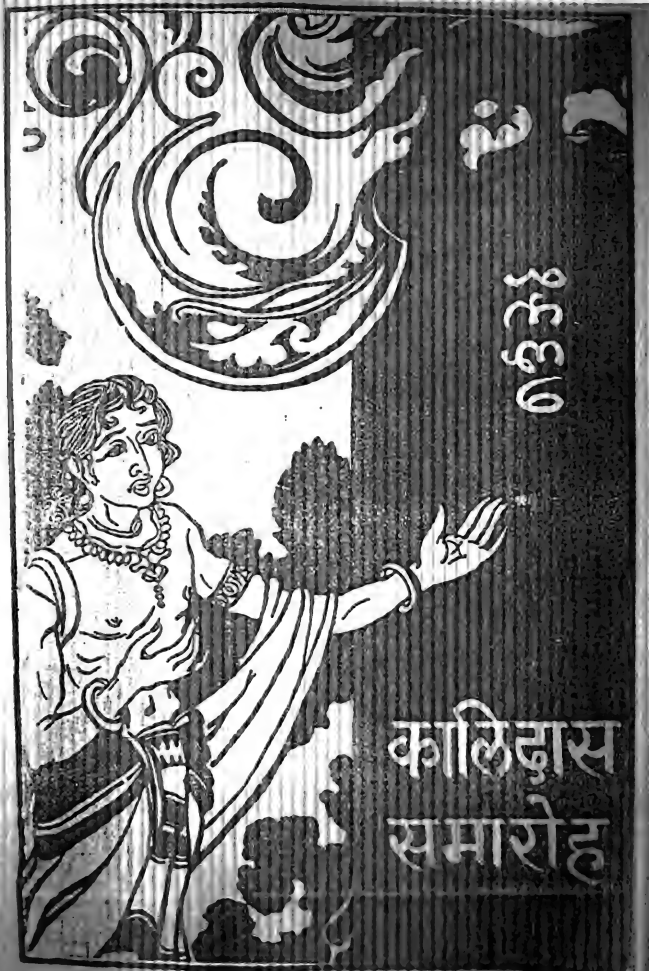
चित्र संख्या - 24

चित्र संख्या - 25

चित्र संख्या - 26

चित्र संख्या - 27

चित्र संख्या - 28

चित्र संख्या - 29

चित्र संख्या - 30
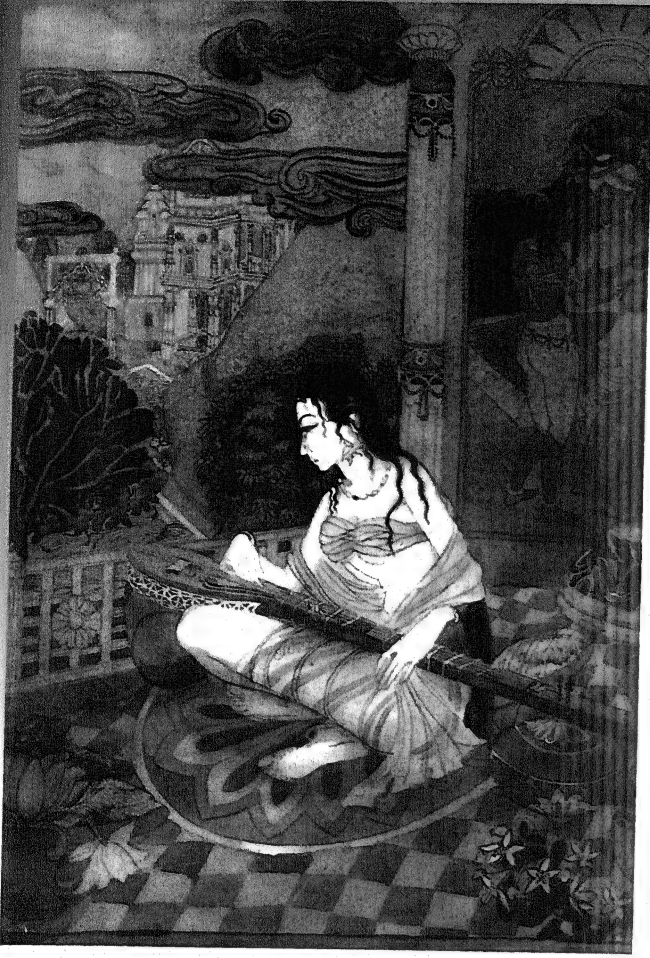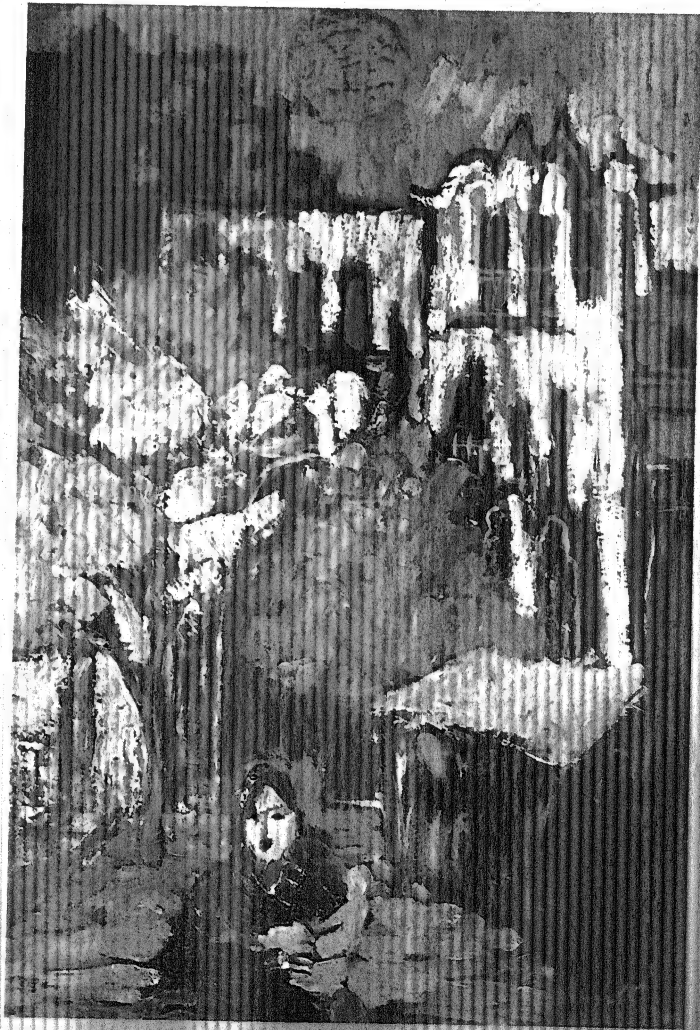
चित्र संख्या - 31

चित्र संख्या - 32

चित्र संख्या - 33

चित्र संख्या - 34

चित्र संख्या - 35
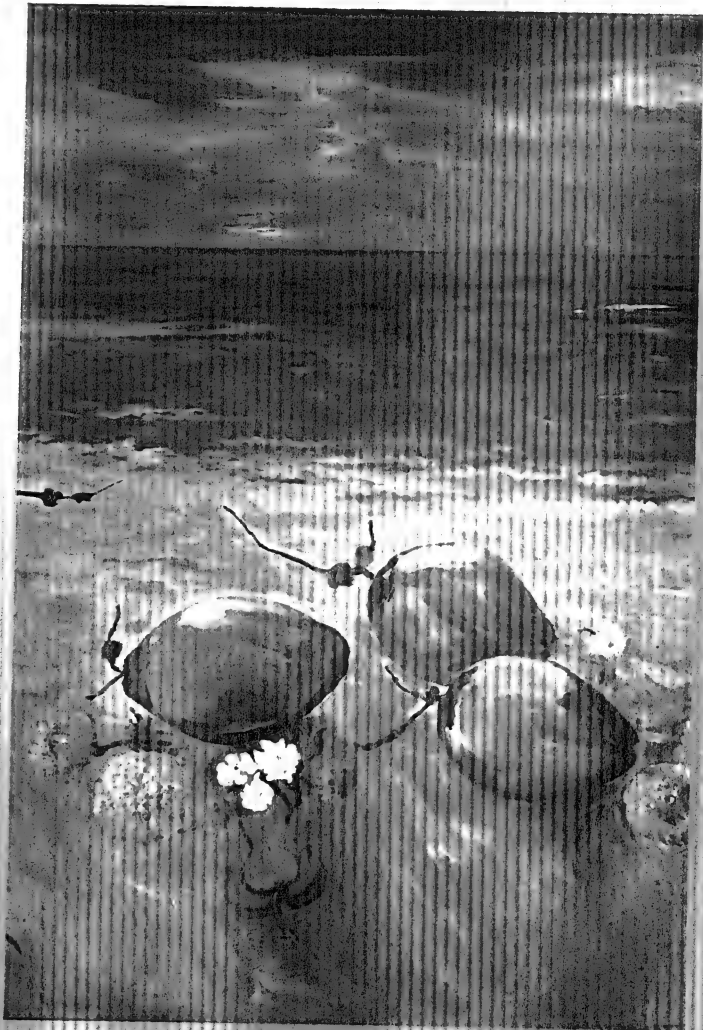
चित्र संख्या - 36

चित्र संख्या - 37

चित्र संख्या - 38

चित्र संख्या - 39

चित्र संख्या - 40

चित्र संख्या - 41

चित्र संख्या - 42

चित्र संख्या - 43

चित्र संख्या - 44

चित्र संख्या - 45
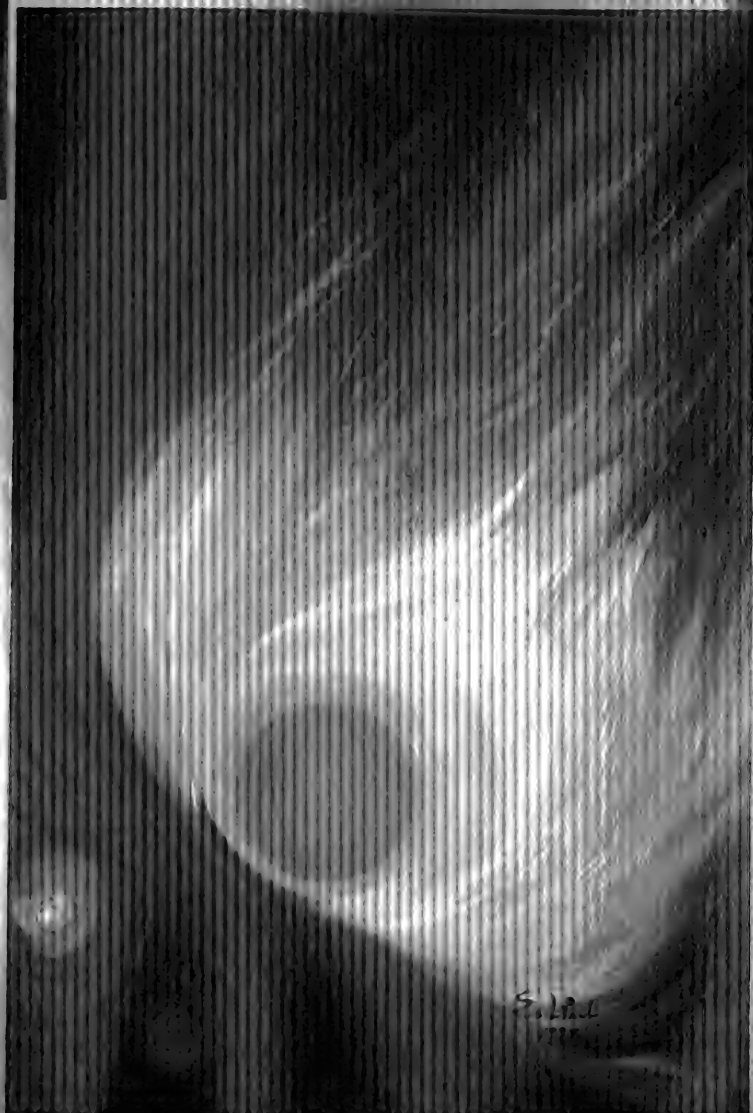
चित्र संख्या - 46

चित्र संख्या - 47

चित्र संख्या - 48

चित्र संख्या - 49

चित्र संख्या - 50

चित्र संख्या - 51

चित्र संख्या - 52

चित्र संख्या - 53

चित्र संख्या - 54

चित्र संख्या - 55

चित्र संख्या - 56

चित्र संख्या - 57
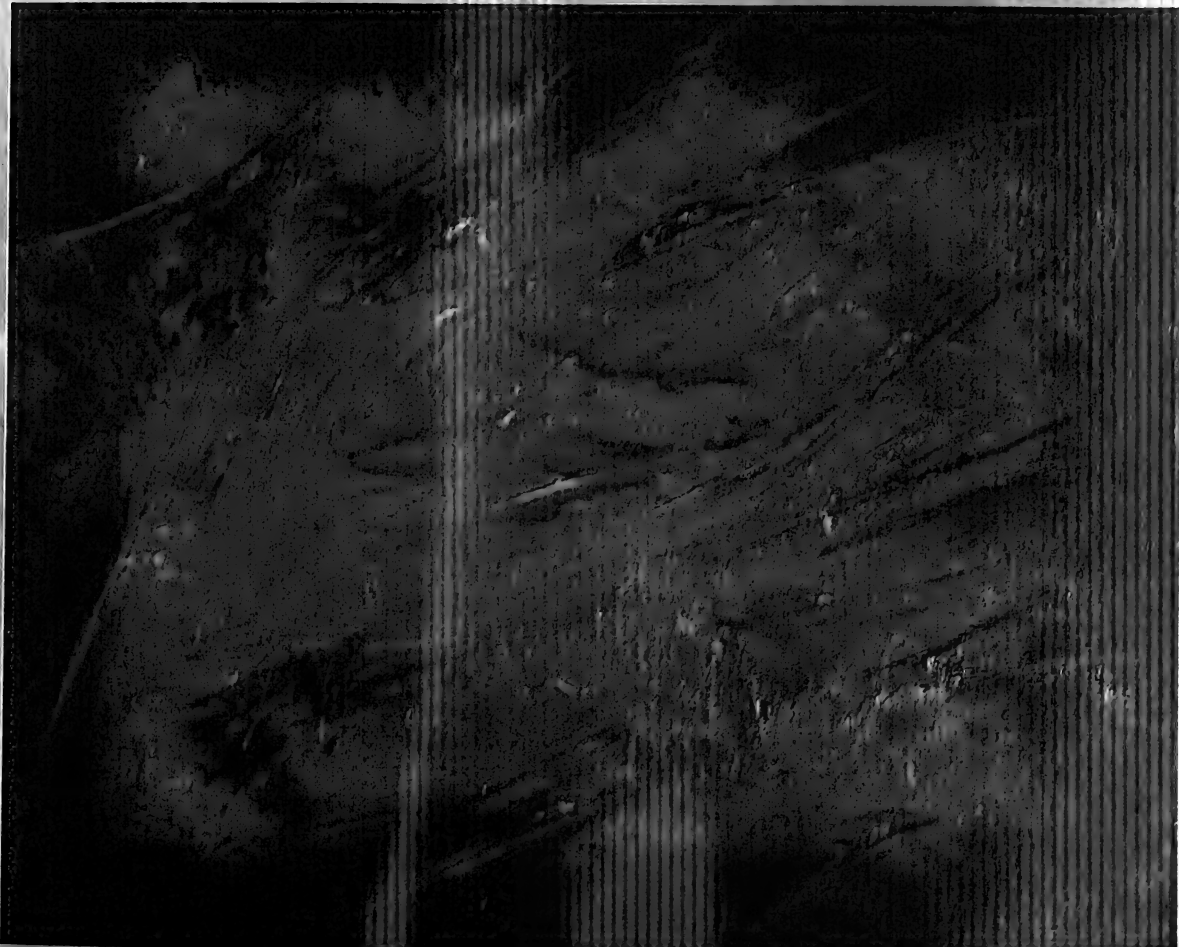
चित्र संख्या - 58

चित्र संख्या - 59
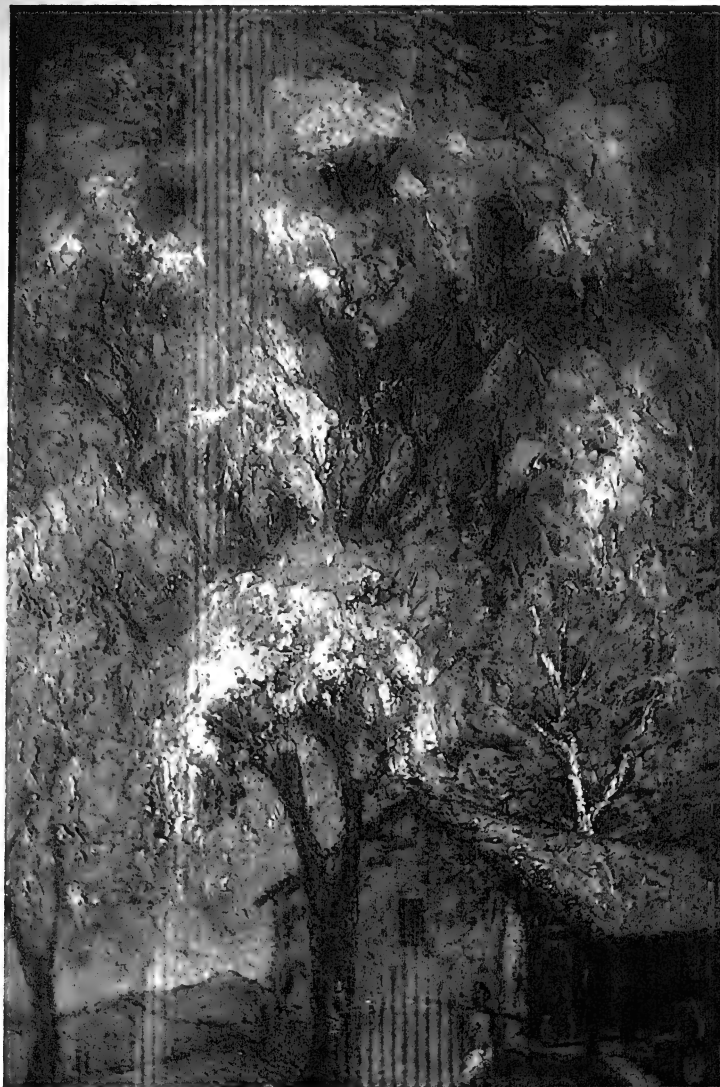
चित्र संख्या - 60
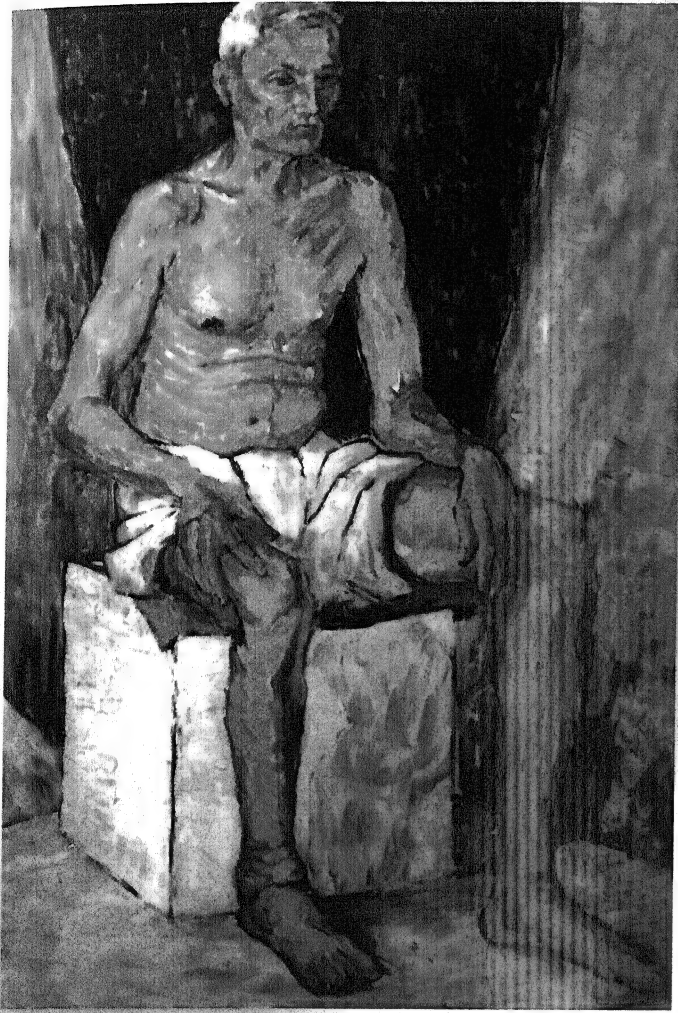
चित्र संख्या - 61

चित्र संख्या - 62

चित्र संख्या - 63
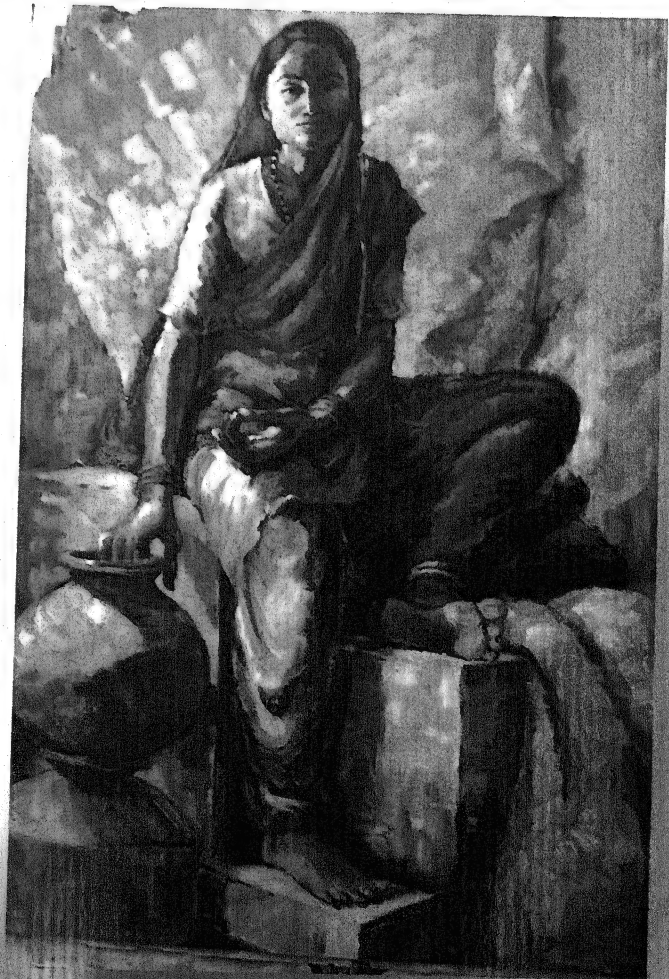
चित्र संख्या - 64

चित्र संख्या - 65

चित्र संख्या - 66
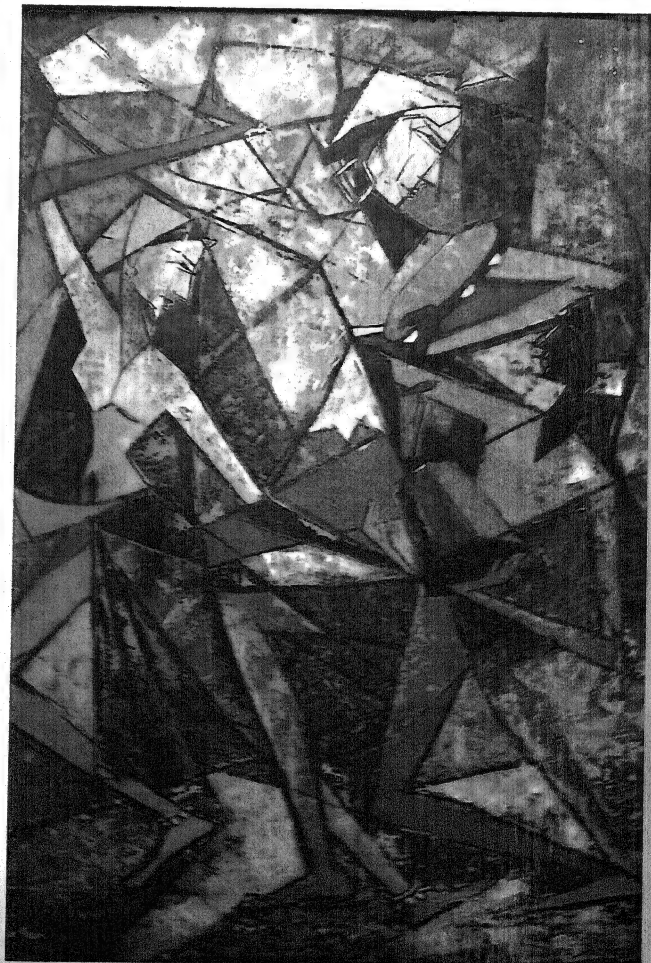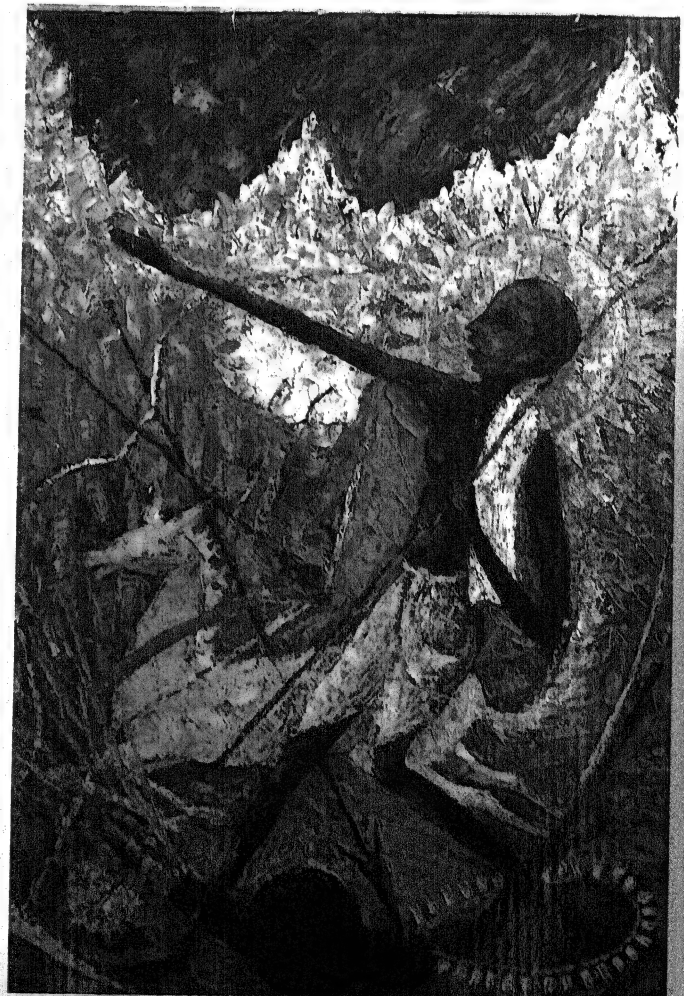
चित्र संख्या - 67

चित्र संख्या - 68

चित्र संख्या - 69

चित्र संख्या - 70
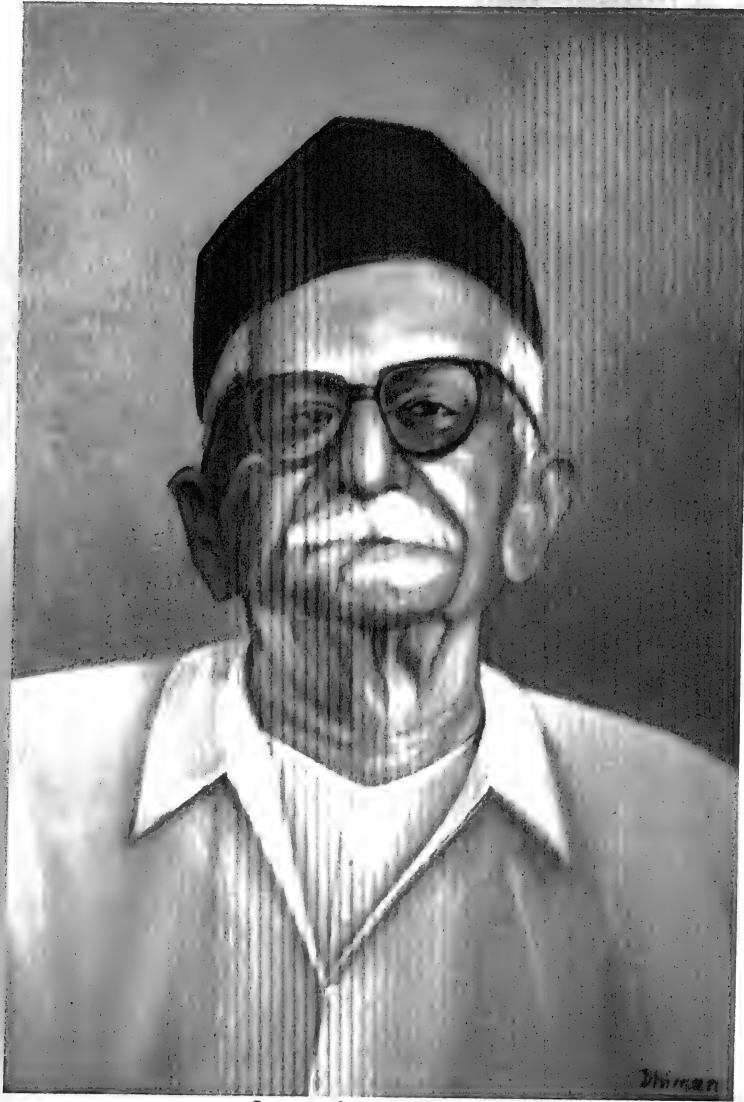
चित्र संख्या - 71
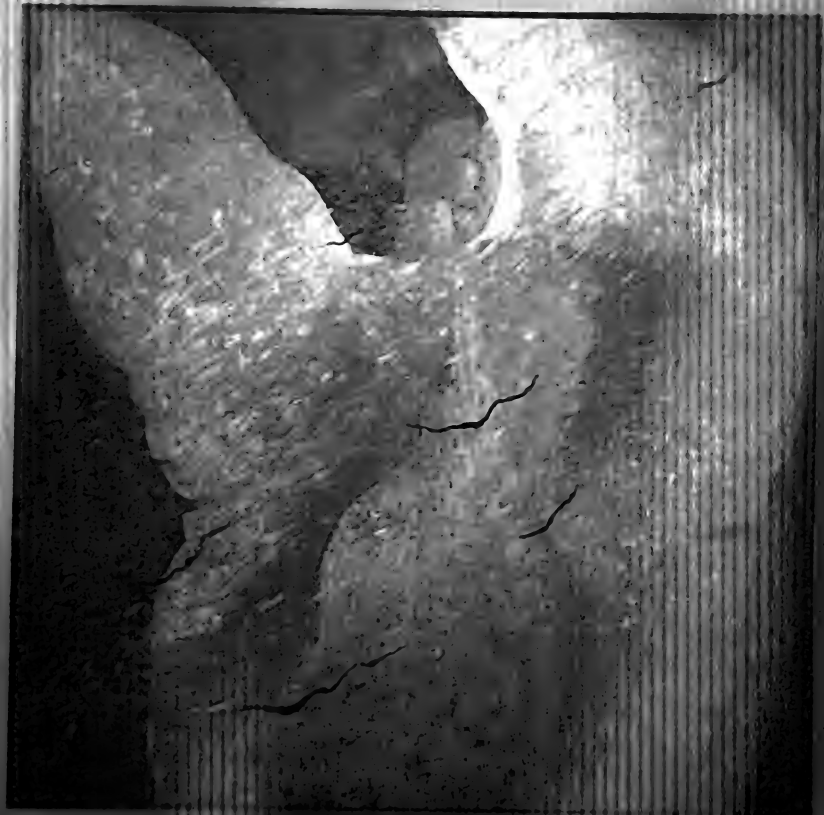
चित्र संख्या - 72

चित्र संख्या - 73

चित्र संख्या - 74

चित्र संख्या - 75

चित्र संख्या - 76

चित्र संख्या - 77

चित्र संख्या - 78

चित्र संख्या - 79

चित्र संख्या - 80

चित्र संख्या - 41

चित्र संख्या - 42

चित्र संख्या - 83

चित्र संख्या - 84

चित्र संख्या - 85

चित्र संख्या - 86

चित्र संख्या - 87
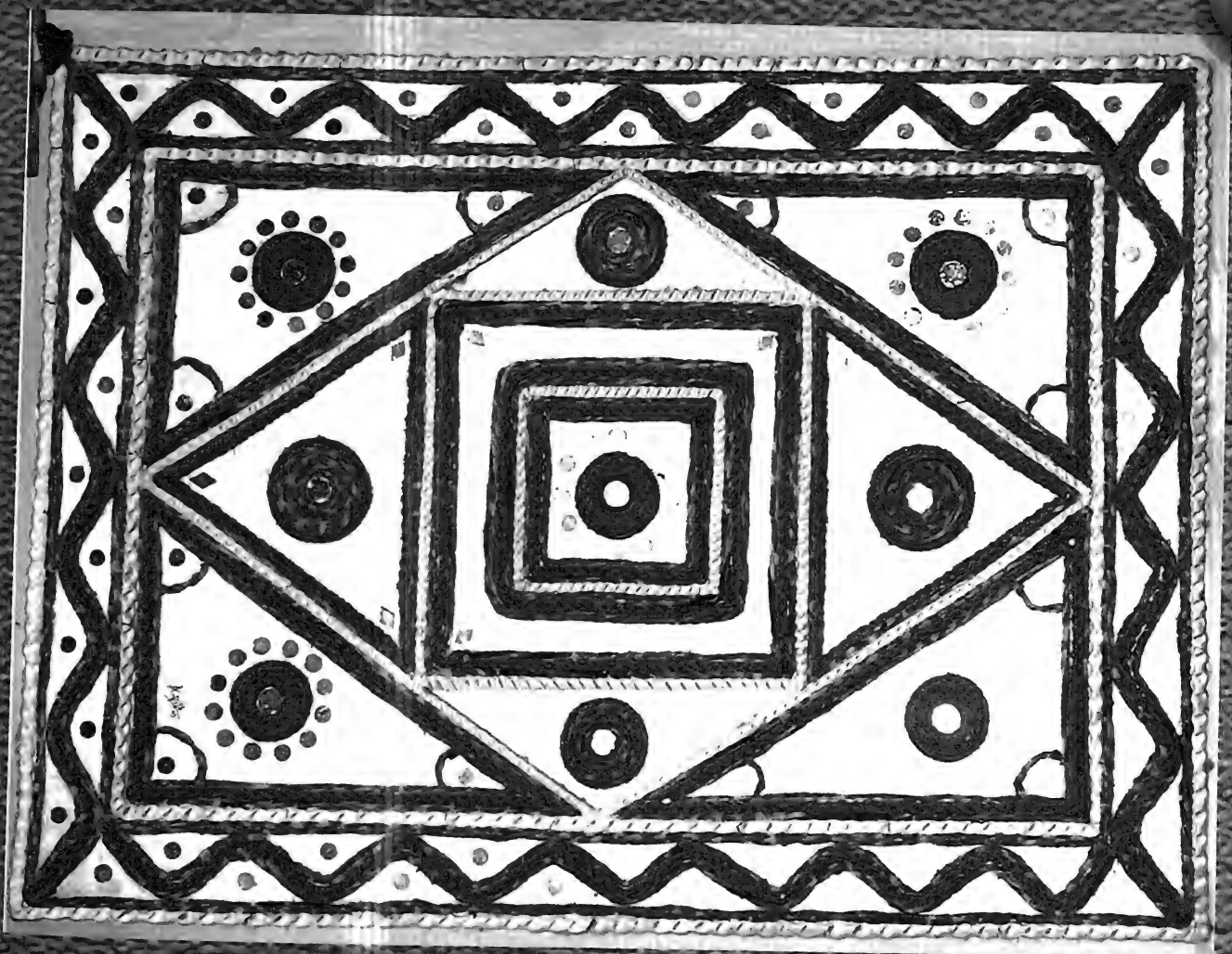
चित्र संख्या - 88

चित्र संख्या - 89

चित्र संख्या - 90

चित्र संख्या - 91

चित्र संख्या - 92

चित्र संख्या - 93

चित्र संख्या - 94

चित्र संख्या - 95

चित्र संख्या - 96
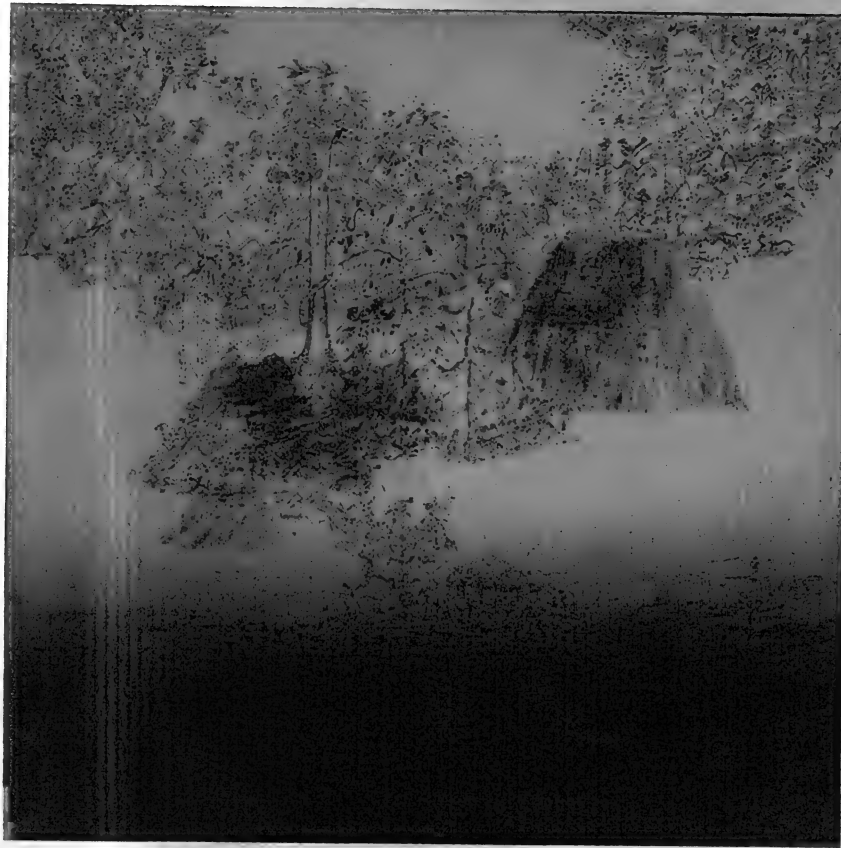
चित्र संख्या - 97

चित्र संख्या - 98

चित्र संख्या - 99

चित्र संख्या - 100
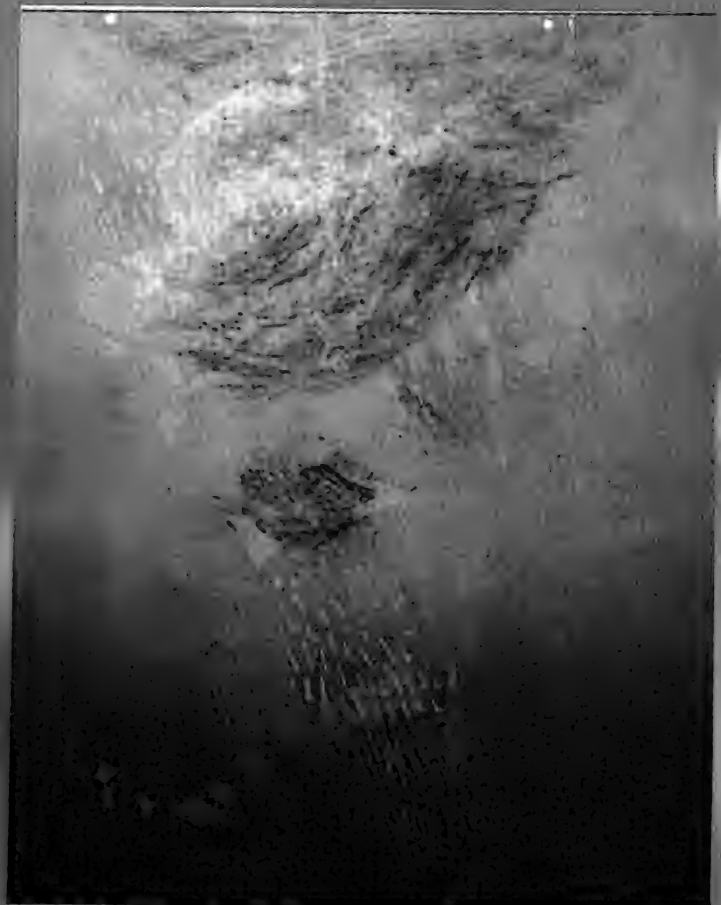
चित्र संख्या - 101

चित्र संख्या - 102
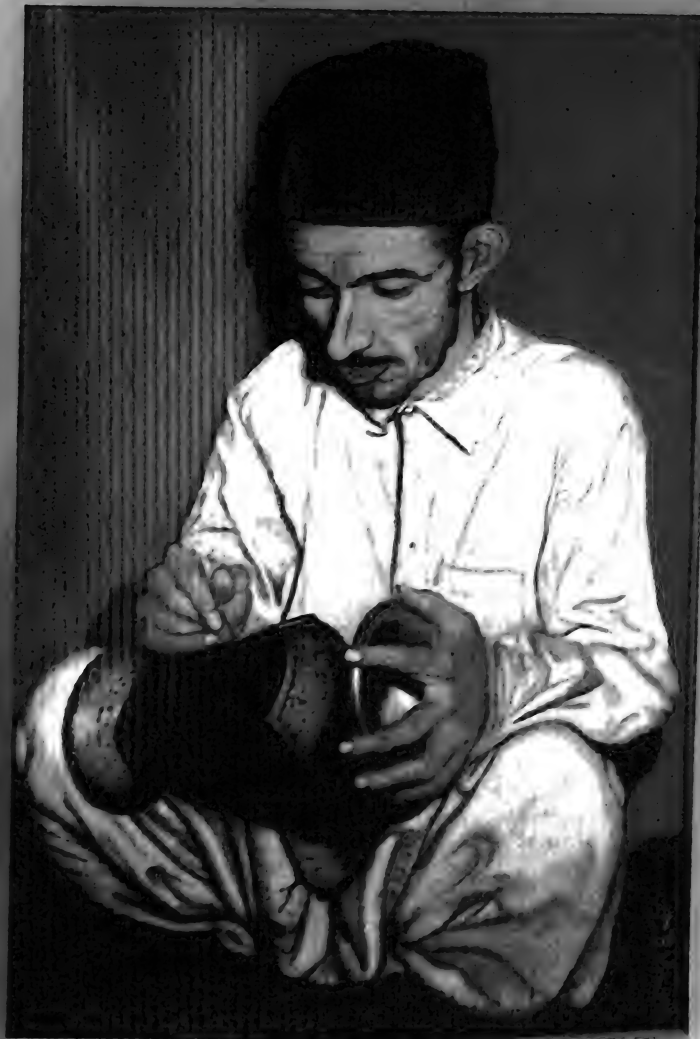
चित्र संख्या - 103

चित्र संख्या - 104

चित्र संख्या - 105

चित्र संख्या - 106

चित्र संख्या - 107

चित्र संख्या - 108

चित्र संख्या - 109

चित्र संख्या - 110

चित्र संख्या - 111

चित्र संख्या - 112
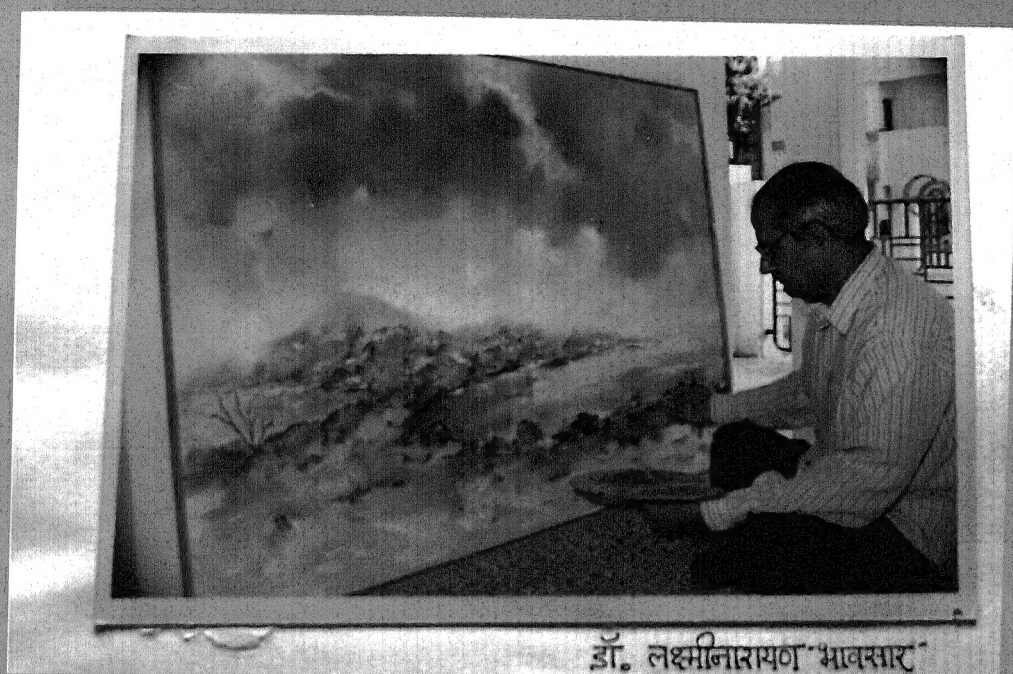
चित्र संख्या - 113

डा0 लक्ष्मीनारायण भावसार कलाकृति बनाते हुये
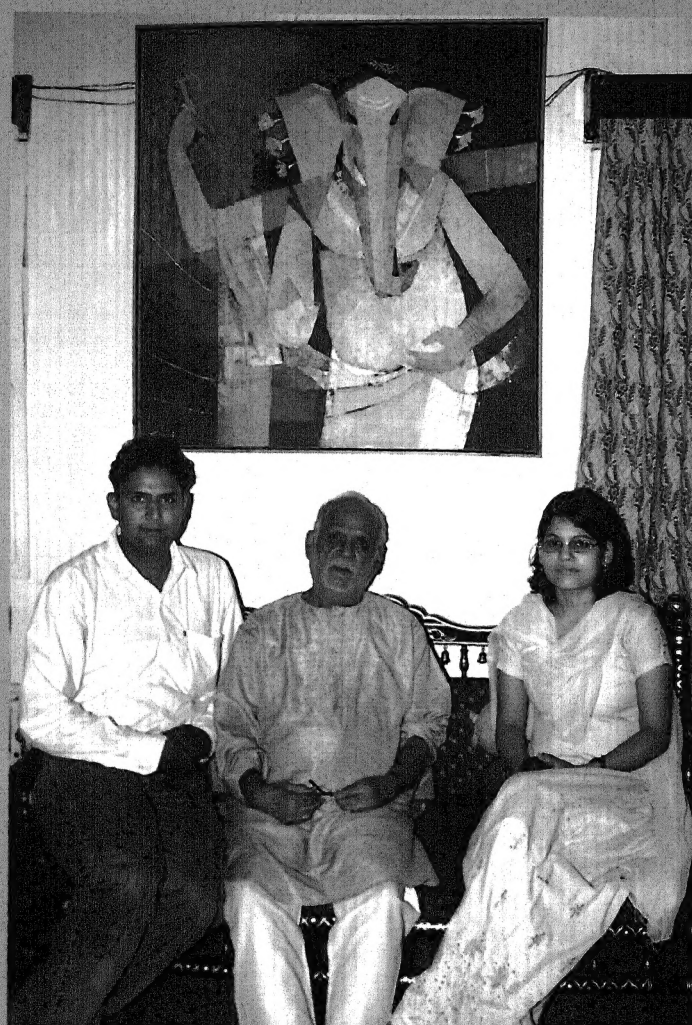
चित्र संख्या - 114

लक्ष्मण भाण्ड सर साथ में शोधवी छात्रा व उसका भाई

चित्र संख्या - 115
सचिदा नागदेव साथ में शोधवी
छात्रा स्नेहलता व उसका भाई मुकेश

चित्र संख्या - 116

सुरेश चौधरी अपने आवास में शोधवी
छात्रा स्नेहलता व उसके भाई मुकेश के साथ

चित्र संख्या - 117
डी0 डी0 धीमान के साथ शोधवी
छात्रा स्नेहलता व उसका भाई मुकेश

चित्र संख्या - 118
शोभाधारे अपने फुर्सत के क्षणों में